Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

91.433
की-प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८९१.४३३
ज ११प

११५०१
1110H

R
891.433
जानकी - प

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PRTC

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या ८९१.४३२ ज११५ आगत संख्या ९९१०१

पुस्तक – वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चदशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चदशी

[पन्द्रह ललित कहानियों का संग्रह]

756

सम्पादक
आचार्य श्रीजानकीवल्लभ शास्त्री
प्राध्यापक हिन्दी-संस्कृत विभाग,
रामदयालु सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

पुस्तक मन्दिर
पुस्तक प्रकाशक, वि
बक्शीपुर
R 891.433.JAN-P
1110H

प्रकाशक
पुस्तक-भवन, मुजफ्फरपुर
मूल्य २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक
पुस्तक-भवन
मुजफ्फरपुर

P. R. T. C. Library
Gurukul Kangri (Hardwar)
Class No. ८६१.४३३
Book No. J ३३५
Acc. No. ३३३०

संशोधित संस्करण
१९६२

१.
२.
३.
४.
५.
६.
७.
८.
९.
१०.
११.
१२.
१३.
१४.
१५.

मुद्रक— श्री माणिक प्रेस, नयाटोला, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्रम			पृष्ठ
१.	ईदगाह	श्री प्रेमचन्द	३
२.	मधुआ	श्री जयशंकर प्रसाद	२६
३.	एथेंस का सत्यार्थी	श्री सुदर्शन	३६
४.	सभ्यता	श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'	४८
५.	कहानी का प्लॉट	श्री शिवपूजन सहाय	६६
६.	चतुरी चमार	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	७७
७.	आत्म शिक्षण	श्री जैनेन्द्र कुमार	६४
८.	शत्रु	श्री 'अज्ञेय'	११०
९.	मनुष्य और पशु	श्री राधा कृष्ण	११७
१०.	दरिद्र नारायण	श्री राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह	१२६
११.	कहीं धूप कहीं छाया	श्री रामवृक्ष बेनीपुरी	१३४
१२.	सहपाठी	श्री जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'	१५२
१३.	परलोक	श्री यशपाल	१६२
१४.	विष के दाँत	श्री नलिनविलोचन शर्मा	१६८
१५.	पंडितजी	श्री जानकीवल्लभ शास्त्री	१८०

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

कहानी रचनात्मक गद्य का एक प्रकार-विशेष है। इसके आकार और सीमाओं का निर्देश करते हुए इतने-इतने मतों का आविर्भाव हो चुका है कि अब कहानी की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा बता सकना असम्भव है। यही कारण है कि हिन्दी के सतह के आलोचक ऐसे ग्रन्थिल विषयों से साफ कतराते हुए कुछ पाश्चात्य मतों को गिना भर देते हैं और इस प्रकार अपने ज्ञान का अभिमान बनाये रहते हैं। इसके विपरीत कुछ दूसरे प्रकार के आलोचक भी हैं जो पूर्वी और पश्चिमी मत मतान्तरों की गणना भर नहीं करते और किसी विषय की गहराई में पैठ कर, मनन और मन्थन कर उसकी सचाई के सम्बन्ध में एक निश्चित और पुष्ट धारणा बनाते और उसे दूसरे जिज्ञासुओं के हृदय में उतारने योग्य अनुभूति की वाणी भी देते हैं। ऐसे आलोचक परस्पर-विरोधी बातें नहीं बता सकते और न वैसी जटिलता का आश्रय ही ग्रहण करते हैं जो उनके न सुलझे हुए विचारों का आवरण मात्र बनकर रह जाय।

वस्तुतः यह युग परिभाषाएँ गढ़ने का रहा ही नहीं, आज के जीवन में इतनी क्षिप्रता और वेगवत्ता है कि उसका आकलन ज्यों-त्यों कर सकना और बात है और उसे निश्चित सीमाओं में समेट कर कुछ नपे-तुले शब्दों में—परिभाषाओं में बाँध लेना और। एजरा पाउन्ड ने लिखा है कि मध्ययुग में, जब भौतिक विज्ञान का अभ्युदय नहीं हुआ था, लोगों में पारिभाषिक शब्दों के लिए बड़ी निष्ठा थी; वे उसके आविष्कार-परिष्कार में बड़ी सावधानी से काम लेते थे। परन्तु अब वैसी बात नहीं रही। इसे किसी हद तक मध्ययुगीन परिभाषाओं की अतिशयता की प्रतिक्रिया भी कहा जा सकता है। यों वैज्ञानिक उत्कर्ष के कारण, प्रकृति पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरन्तर विजय प्राप्त करते हुए मानव-मन का उल्लास यदि पुराने कूल-किनारों को ढहा-बहा कर आगे निकल जाना चाहता है तो इसे संघर्ष, विजय और विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया ही कहेंगे।

आज दिन छोटी कहानियों के इतिहास का आरम्भ जिस एडगर एलनपो (Edgar Allen Poe) से माना जाता है उसने कहानी के 'आकार' का निर्देश करते हुए आधे घंटे से घंटे-दो घंटे तक में बांच जाने योग्य (requiring from half an hour to one or two hours in its perusal) बताया है। ऐसे ही, इसके 'प्रकार' के सम्बन्ध में भी फॉस्टर ने लिखा है कि कहानी परस्पर सम्बद्ध, कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं का एक ऐसा क्रम है जो हमें किसी परिणति तक पहुँचाता है। पं० भगवती प्रसाद वाजपेयी के अनुसार 'छोटी कहानी' जीवन के किसी एक अंग अथवा अवस्था का चित्रण है जिसके द्वारा एक ही प्रभाव या एक ही संवेदना की उत्पत्ति होती है।

"मनुष्य के हृदय-पट में अनेकानेक सुख-दुःखों का चक्र प्रतिक्षण धूप-छाँह का-सा खेल खेलता रहता है। इस धूप-छाँह का चित्र यथार्थ रूप से अङ्कित करके उसे अपने हृदय के सुन्दर रंगों से रंजित करना ही सच्चे कलाविद का उद्देश्य रहता है। कहानी का उद्देश्य न तो मनोरंजन ही है और न शिक्षा ही। उसका उद्देश्य है स्वाभाविक रीति से सौन्दर्य और आनन्द को प्रतिफलित करना। हृदय के भाव नाना अवस्थाओं में बदलते रहते हैं। जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्षण से उलटा-सीधा चलता रहता है। इस सुवृहत् चक्र की किसी विशेष परिस्थिति की क्षणिक गति को प्रदर्शित करने—हृदय के भावों की किसी विशेष अवस्था के रंगों को रंजित करने में ही कहानी की विशेषता है। संसार में प्रत्येक पल की कहानी उसी पल में समाप्त होकर अनन्त के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा में है। छोटी कहानी में पल की यही क्षणिक गाथा वर्णित की जाती है। प्रत्येक पल की कहानी प्रत्येक पल में समाप्त होने पर भी अपने-आप में पूर्ण है। जिस प्रकार सृष्टि के प्रत्येक परमाणु के भीतर भी सौरचक्र वर्त्तमान होने से वह अपने-आपमें पूर्ण है, उसी प्रकार प्रत्येक निमेष की कहानी भी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाचन्द्र जोशी का उपर्युक्त उद्धरण जैनेन्द्र कुमार की इस उक्ति से भी समर्थित होता है—"इस विश्व के छोटे-छोटे खण्ड को लेकर हम अपना चित्र बना सकते हैं और उसमें सत्य के दर्शन पा सकते हैं।"

कहानी लिखने के उद्देश्य पर कवीन्द्र-रवीन्द्र ने भी प्रकाश डाला है—"कहानी लिखने का उद्देश्य कहानी लिखना है। मैं कहानी इसलिए लिखता हूँ कि कहानी लिखने की मेरी इच्छा होती है। किसी मतलब से कहानी नहीं लिखी जाती। साहित्य विज्ञान नहीं और न वह धर्मशास्त्र ही है। यदि उसमें कुछ निर्धारित नियमों के अनुसार ही पात्रों के चरित्र अङ्कित किये जायँ तो वह चित्र प्राणहीन होगा। सम्भव है, वह नेत्ररंजक हो, पर उसमें हम जीवित संसार का आदर्श न देख सकेंगे।"

महाकवि प्रसाद ने भी अपनी 'नीरा' नामक कहानी में लिखा है—"जैसे एक साधारण आलोचक प्रत्येक लेखक से अपने मन की कहानी कहलाया चाहता है और हठ करता है कि नहीं, यह तो ऐसा न होना चाहिए था।" हिन्दीकथा-साहित्य के सम्राट् प्रेमचन्द के अनुसार—"आधुनिक कहानी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन के यथार्थ चित्रण को अपना ध्येय समझती है।" क्योंकि "कहानी अब जीवन के बहुत निकट आ गई है। उसका आधार अब घटना नहीं, मनोविज्ञान की अनुभूति है। आज का लेखक केवल रोचक दृश्य देखकर कहानी लिखने नहीं बैठ जाता। उसका उद्देश्य स्थूल सौन्दर्य नहीं। वह तो कोई ऐसी प्रेरणा चाहता है जिसमें सौन्दर्य की झलक हो और इसके द्वारा वह पाठक की सुन्दर भावनाओं को स्पर्श कर सके।"

"कथावस्तु अथवा कथानक ही कहानी का आधार होता है। कहानी की सम्पूर्ण रोचकता इसी कथावस्तु में अन्तर्हित रहती है। इसके बिना कहानी निष्प्राण, नीरस लगती है। इसी के सौन्दर्य्य पर कहानी का समस्त सौन्दर्य्य आश्रित रहता है। इसलिए कथावस्तु के चुनाव में कहानीकार को बड़ा सतर्क रहना पड़ता है। यदि वह सतर्क न रहा, कहानी को एक सुन्दर कथानक न दे सका तो उसकी कृति लोगों का मनोरंजन करने में विफल रहेगी। कथानक के लिए लेखक केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी घटनाएँ लेता है जो सम्मिलित रूप में उसका कोई निश्चित मन्तव्य व्यक्त करने की क्षमता रखती हैं। चमत्कार-पूर्ण रोचक घटनाओं से ही सुन्दर कथानक का निर्माण होता है"—आचार्य शिवपूजन सहाय के इस मन्तव्य से केसरी कुमार की मान्यता की तुलना करनी चाहिए—"कहानी में मांसल कथानक का होना अनिवार्य नहीं है। कितनी ही कहानियों में कथानक होता ही नहीं। कभी-कभी केवल मनोरंजक बातों, चुटकुलों और चित्त को आकर्षित करनेवाली सूझों के आधार पर ही कहानी की सृष्टि हो जाया करती है। भाव-प्रधान और वातावरण-प्रधान कहानियों में कथानक नाम मात्र का ही हुआ करता है। यदि जैनेन्द्र कुमार की 'पत्नी' में, अज्ञेय की कहानी 'रोज' में हम कथानक ढूँढ़ना चाहें तो हमें निराश ही होना पड़ेगा।" तभी कवीन्द्र रवीन्द्र की सुप्रसिद्ध कहानी 'हार-जीत' की आलोचना करते हुए एक आलोचक ने लिखा था—"आदर्श कहानी वही हो सकती है जो उस अशर्फी के समान हो, जो साँचे के एक ही दबाव में तैयार हो जाती है। उसकी टंकार कभी खोटी नहीं होती, क्योंकि उसकी तैयारी में खरी धातु बरती जाती है।"

"छोटी कहानियों और उपन्यासों में कोई भी सम्बन्ध है, यह सर्वथा संशयात्मक है। ऐतिहासिक दृष्टि से तो कोई भी सम्बन्ध मानने का कारण नहीं दीखता। जिस तरह आजकल का मुक्तक (गीत) काव्य प्राचीन महाकाव्य की शाखा नहीं है, उसी तरह आज की छोटी कहानी भी अपेक्षाकृत पुराने उपन्यास की शाखा नहीं कही जा सकती।

"चरित्र-निर्माण, जिसका उपन्यास में सर्वाधिक महत्त्व है, कहानी में अपना महत्त्व रखता ही है, लेकिन उसका स्थान पहला नहीं है। इसलिए कहानी के छोटे दायरे में पर्याप्त कुशलतापूर्वक भी किया गया चरित्रनिर्माण पाठकों को सन्तोष नहीं दे पाता। यदि पाठक चरित्रों में दिलचस्पी रखते हैं, और यदि कहानी केवल चरित्रों पर ही निर्भर है तो उनसे इतना शीघ्र सम्बन्ध-विच्छेद होना अप्रीतिकर होता है। अतः कहानी में हम इससे कुछ और अधिक चाहते हैं। हम एक ऐसी विशिष्टता की अपेक्षा रखते हैं, जो इसमें आमूल परिव्याप्त हो। जिसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणतः विश्लेषण न किया जा सके। जो केवल इसी रूप में पाठकों के प्रति प्रेषणीय हो।

"हम ठीक यही माँग उपन्यास से नहीं करते। उसमें तो यही पर्याप्त है कि वर्णन में प्राण हो, उसके चरित्र जीवन से पूर्ण हों और उनका संसार अपने प्रति सच्चा हो।.......

"कहानी प्रवाह नहीं, बुलबुला है, वह एक प्रकाशपूर्ण क्षण है, वह समष्टि से नहीं, व्यष्टि से सम्बन्ध रखती है।

"वर्णन, चरित्र-चित्रण या चेतना के प्रवाह के उद्‌घाटन में कहानी उपन्यास की प्रतिद्वन्द्विता नहीं कर सकती। कहानी की दुनिया छोटी-सी होती है, उसके प्राणी छोटे-छोटे।

"उपन्यास एक ऐसा वातायन है, जिससे हम रास्ते पर बहते हुए जीवन के, या मस्तिष्क में बहती हुई चेतना के प्रवाह का अवलोकन करते हैं। छोटी कहानी एक सूक्ष्म-दर्शक-यन्त्र है, जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के रूपक के दृश्य खुलते हैं।"

सुप्रसिद्ध समीक्षक नलिन विलोचन शर्मा के उपर्युक्त शब्दों में कहानी और उपन्यास का सामान्य विभेद स्पष्ट कर लेने के बाद महान् कहानीकार 'चेखव' की छोटी कहानी की सूक्ष्म कला सम्बन्धी यह उक्ति चिर-स्मरणीय है—"लेखक को मामूली चीजों के बारे में ही लिखना चाहिए, किस तरह 'पीटर सेमिओनोविश' ने 'मेरी इवानोवना' के साथ विवाह किया। सिर्फ इतना ही।"

'हडसन' ने कहानी-कला के दो अनिवार्य सिद्धान्तों का केन्द्रीकरण (concentration) और अन्विति (unity) की चर्चा की है। प्रथम के लिए लिखा है—The subject of a story must be one that can be adequately and effectively developed within the prescribed limits. और अन्विति से तात्पर्य है—unity of motive, of purpose, of action and of impression से। 'पो' वाले उद्धरण में भी ऐसी प्रभावपूर्ण संक्षिप्तता की ओर संकेत है—"If his

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

very initial sentence tend not to the outbringing of this effect, then he has failed in his first step. In the whole composition there should be no word written, of which the tendency, direct or indirect, is not to the one preestablished design." आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के शब्दों में—"कहानी के लिए सबसे आवश्यक वस्तु है घटना-संवलित कथानक का ऐसा प्रसार,जो अपनी सीमा में एक प्रभावशाली और असाधारण जीवन-मर्म को पूरा-पूरा व्यक्त कर दे। ताने और बाने की भाँति कथा और जीवन-मर्म का एक ही में पर्यवसान हो जाना चाहिए। किसी ओर से असंगति, हेर-फेर या क्रमभंग के लिए स्थान न रहे। सारी की सारी कहानी किसी निर्णायक घटना-केन्द्र की ओर अनुधावित हो रही हो! "कहानियों का आधार जितना ही व्यापक और अनुभव, जितना ही सार्वजनिक होगा उनमें उतनी अधिक सांकेतिकता होगी और मानव हृदय को वह उतना ही अधिक स्पर्श करेगा।"

जानकीवल्लभ शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमचन्द

[सन् १८८०–१९३६]

काशी से तीन-चार मील दूर लमही नामक गाँव में प्रेमचन्द जी का जन्म हुआ। नका वास्तविक नाम मुंशी धनपत राय था। ये कई भाषाओं के विद्वान् थे। ार्थिक कष्टों से जूझते हुए इन्होंने बी० ए० पास किया। फिर अध्यापक हुए; छ दिन स्कूल इन्सपेक्टर रहे, अन्त में राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित होकर ौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

प्रेमचन्द जी पहले उर्दू में लिखते फिर हिन्दी में लिखने लगे। कानपुर की प्रसिद्ध उर्दू-पत्रिका 'जमाना' में सन् १९०७ ही इनकी कहानियाँ छप रही थीं, किन्तु न्दी में इनकी सबसे पहली कहानी 'पंच मेश्वर' सन् १९१४ ई० में 'सरस्वती' में काशित हुई।

प्रेमचन्द जी ने प्रायः २५० कहानियाँ खीं। कथा-साहित्य के माध्यम से इन्होंने न्दी में युगान्तर उपस्थित किया। प्रेमचन्द का प्रादुर्भाव हिन्दी-कथा-साहित्य की सबसे महत्व-पूर्ण घटना थी। सरस-सुबोध र मुहावरेदार भाषा में मानव-जीवन के सजीव चित्रों का मार्मिक अंकन इनकी ा की कसौटी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की सभी भाषाओं में इनकी प्रमुख रचनाओं के अनुवाद हो चुका है और कुछ कृतियों को विदेशी भाषाओं में अनूदित होकर उन्हें गौरवान्वित करने का भी सुअवसर प्राप्त हो चुका है।

महाकवि निराला ने प्रेमचन्द, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त का हिन्दी-साहित्य के नवीन मन्वन्तर के मनु-रूप में, उल्लेख किया है।

प्रेमचन्द जी ने कहानियों के अतिरिक्त उपन्यास, नाटक, निबन्ध, जीवनचरित्र आदि भी लिखे हैं तथा कितनी ही विश्वजनीन कृतियों का अनुवाद और सम्पादन भी किया है।

प्रेमचन्द जी की तुलना रूस के विख्यात् जनप्रिय कथाकार मैक्सिम गोर्की से की जाती है। जनता को प्रेमचन्द जी के समान ईमानदार लेखक सौभाग्य से ही प्राप्त होता है। इनकी दृष्टि समाज के सभी वर्गों की जनता तक गई। भारतीय जीवन के सभी अंगों का इन्होंने स्पर्श किया। जातीय परम्परा से इनकी रचनाओं का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ये मानवतावादी कलाकार थे। इन्हें सहज ही विश्व के प्रथम कोटि के कलाकारों में रखा जा सकता है।

मानसरोवर (चार भाग), प्रेम-द्वादशी, कफन, समर-यात्रा आदि इनके कहानी-संग्रह हैं। सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि इनके उपन्यास हैं।

प्रस्तुत कहानी 'ईदगाह' उनकी श्रेष्ठतम कहानियों में से एक है। 'हामिद' की तरह के दृढ़ चरित्र बालक किसी भी विपन्न समाज का नव-निर्माण कर सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईदगाह

रमजान के भूखे-प्यासे पूरे तीस दिनों के बाद आज ईद आई है। आज की सुबह कितनी सुहावनी, कितनी सुखद और मनोहर है। वृक्षों पर नई हरियाली, अजीब मस्ती, खेतों पर रौनक और आसमान पर नूतन लालिमा छाई है। चारों तरफ खुशी की फुलझड़ियाँ छूट रही हैं। आज सूरज भी नई सज-धज, नई अदा के साथ आ रहा है। चिड़ियाँ गाती हैं, वृक्ष ताल देते हैं, हवा तान भरती है मानो संसार को ईद की बधाई है। गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर में सूई-डोरा लेने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गये हैं। उनमें तेल डालने के लिये तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें, ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जायगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर के पहले लौटना असम्भव है। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने रोजा रखा है वह भी दोपहर तक। किसी ने वह भी नहीं। लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज है, रोजे बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। उनके लिए तो ईद है। रोज ईद का नाम रटते थे वह आज आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थी की चिन्ताओं से क्या प्रयोजन ! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में हैं या नहीं इनकी बला से, ये तो सेवैयाँ खायँगे। वह क्या जाने अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर की चौधरी आज आँखें बदल ले तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाय। उनकी अपनी जेबों में कुबेर का धन भरा हुआ है। बार-बार जेब से अपना खजाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है एक, दो, दस बारह ! उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसीन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पन्द्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों से अनगिनत चीजें लाएँगे—खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और जाने क्या-क्या। और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद, वह चार साल का गरीबसूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई; किसी को पता न चला, क्या बीमारी है। कहती भी तो कौन सुननेवाला था, दिल पर जो कुछ बीतती थी वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आयँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई हैं। इसलिये हामिद प्रसन्न हैं। आशा तो बड़ी चीज है और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई को पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं। सर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थैलियाँ औ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मीजान नियामतें लेकर आयँगी तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा महमूद और मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अभागिनी अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता, तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती! उस अन्धकार और निराशा में वह डूबी जा रही है। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को? इस घर में उसका काम नहीं है। लेकिन हामिद! उसे किसी के मरने-जीने से क्या मतलब? उसके अन्दर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल-बल लेकर आए, हामिद की आनन्द भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है—तुम डरना नहीं अम्माँ मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा और कौन है। उसे कैसे अकेले मेले जाने दे। उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाय, तो क्या हो। नहीं, अमीना उसे क्यों जाने देगी। नन्हीं-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे! पैर में छाले पड़ जायँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी-थोड़ी दूर उसे गोद ले लेगी। लेकिन यहाँ सेवैयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते ही सब सामग्री जमा करके चट-पट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीजें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सीए थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती आती थी इसी ईद के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन कल ग्वालिन सिर पर सवार हो गयी, तो क्या करती। हामिद के लिये कुछ नहीं तो दो पैसे का रोज दूध तो चाहिए ही। अब कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुवे में। यही तो बिसात है! और ईद का त्योहार! अल्लाह ही बेरा पार लगावे! धोबिन और नाइन, मेहतरानी और चूड़िहारिन सभी तो आयँगी। सभी को सेवैयाँ चाहिए। और थोड़ा किसी की आँखों नहीं लगता। किस किससे मुँह चुराएगी और मुँह क्यों चुराए? साल भर का त्योहार है। जिन्दगी खैरियत से रहे। उनकी तकदीर भी तो उसीके साथ है। बच्चे को खुदा सलामत रक्खे, ये दिन भी कट जायँगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब-के-सब दौड़ कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे होकर साथवालों का इन्तजार करते। यह लोग इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है! शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बागीचे हैं। पक्की चारदीवारी बनी हुई हैं। पेड़ों में आम और लीचियाँ लगी हुई हैं। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशान लगाता है। माली अन्दर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के वहाँ से एक फर्लाङ्ग पर हैं। खूब हँस रहे हैं। माली को कैसा उल्लू बनाया!

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लबघर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे। सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े-बड़े आदमी हैं, सच। उनकी बड़ी मूछें होंगी। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ते जाते हैं, न जाने कब तक पढ़ेंगे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करेंगे इतना पढ़कर ! हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े-बड़े लड़के हैं। बिलकुल तीन कौड़ी के, रोज मार खाते हैं, काम से जी चुरानेवाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे, और क्या क्लबघर में जादू होता है। सुना है, यहाँ मुरदों की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं और बड़े-बड़े तमाशे होते हैं। पर किसी को अन्दर नहीं जाने देते। और वहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं, बड़े-बड़े आदमी खेलते हैं, मूँछों-दाढ़ीवाले और मेमें भी खेलती हैं, सच। हमारी अम्माँ को तो वह दे दो, क्या नाम है—बैठ, तो उसे पकड़ ही न सकें। घुमाते ही लुढ़क जायँ।

महमूद ने कहा—हमारी अम्मीजान का तो हाथ काँपने लगे, अल्ला कसम।

मोहसिन—चलो, मनो आटा पीस डालती हैं। जरा-सा बैट पकड़ लेगी तो हाथ काँपने लगेंगे। सैकड़ों घड़े पानी रोज निकालती हैं। पाँच घड़े तो तेरी भैंस पी जाती है। किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े तो आँखों तले अन्धेरा छा जाय।

महमूद—लेकिन दौड़ती तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं सकती।

मोहसिन—हाँ, उछल-कूद तो नहीं सकतीं। लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गई थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, तो अम्माँ इतनी तेज दौड़ीं कि मैं उन्हें न पा सका, सच।

आगे चले। हलवाइयों की दूकानें शुरू हुईं। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है। देखो न, एक-एक दूकान पर मनों होंगी। सुना है, रात को जिन्नात आकर खरीद ले जाते हैं। अब्बा कहते थे कि आधी रात को एक आदमी हर दूकान पर जाता है और जितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल बचा होता है वह सब तुलवा लेता है और सचमुच के रुपये दे
है, बिलकुल ऐसे ही रुपए।

हामिद को यकीन न आया—ऐसे रुपए जिन्नात को कहाँ से मि
जायँगे।

मोहसिन ने कहा—जिन्नात को रुपये की कमी। जिस खजाने
चाहे चले जायँ। लोहे के दरवाजे तक उन्हें नहीं रोक सकते जना
आप हैं किस फेर में। हीरे-जवाहरात तक उनके पास रहते हैं। जिस
खुश हो गए, उसे टोकरों जवाहरात दे दिए। अभी यहाँ बैठे हैं, पाँ
मिनट में कहो तो कलकत्ते पहुँच जायँ।

हामिद ने फिर पूछा—जिन्नात बहुत बड़े-बड़े होते होंगे?

मोहसिन—एक-एक आसमान के बराबर होता है जी, जमीन प
खड़ा हो जाय, तो उसका सिर आसमान से जा लगे। मगर चाहें
एक लोटे में घुस जायँ!

हामिद—लोग उन्हें कैसे खुश करते होंगे। कोई मुझे यह मं
बता दे तो एक जिन्न को खुश कर लूँ।

मोहसिन—अब यह तो मैं नहीं जानता लेकिन चौधरी साहब
काबू में बहुत से जिन्नात हैं। कोई चीज चोरी जाय, चौधरी सा
उसका पता लगा देंगे और चोर का नाम भी बता देंगे। जुमेराती
बछवा उस दिन खो गया था। तीन दिन हैरान हुए, कहीं न मिल
तब झख मारकर चौधरी के पास गए। चौधरी ने तुरन्त बता दि
कि मवेशीखाने में है। और वहीं मिला। जिन्नात आकर उन्हें स
जहान की खबरें दे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सब की समझ में आ गया कि चौधरी के पास क्यों इतना धन है और क्यों इतना सम्मान है।

आगे चले। यह पुलिसलाइन है। यहीं सब कानिसटिबल कवायद करते हैं। रेटन! फाम फो! रात को बेचारे घूम-घूम कर पहरा देते हैं, नहीं चोरियाँ हो जायँ।

मोहसिन ने प्रतिवाद किया–यह कानिसटिबल पहरा देते हैं? जभी तुम बहुत जानते हो, अजी हजरत वही चोरी कराते हैं। शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मिले रहते हैं। रात को ये लोग चोरों से तो कहते हैं चोरी करो और आप दूसरे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो! जागते रहो! पुकारते हैं। जभी इन लोगों के पास इतने रुपये आते हैं। मेरे मामूँ एक थाने में कानिसटिबल हैं। बीस रुपये महीना पाते हैं। लेकिन पचास रुपए घर भेजते हैं। अल्ला कसम। मैंने एकबार पूछा था कि मामूँ! आप इतने रुपए कहाँ से लाते हैं। हँसकर कहने लगे—बेटा, अल्लाह देता है फिर आप ही बोले—हमलोग चाहें तो एक दिन में लाखों मार लायँ। हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाय।

हामिद ने पूछा—यह लोग चोरी करवाते हैं; तो कोई इन्हें पकड़ता नहीं।

मोहसिन उसकी नादानी पर दया दिखाकर बोला—अरे पागल, इन्हें कौन पकड़ेगा। पकड़नेवाले तो यह लोग खुद हैं। लेकिन अल्लाह इन्हें सजा भी खूब देता है। हराम का माल हराम में जाता है। थोड़े दिन हुए मामूँ के घर में आग लग गई। सारी पूँजी जल गई। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरतन तक न बचा। कई दिन पेड़ के नीचे सोए, अल्ला कसम पेड़ के नीचे। फिर न जाने कहाँ से एक सौ कर्ज लाए तो बरतन भाँड़े आये।

हामिद—एक सौ तो पचास से ज्यादा होते हैं?

मोहसिन—कहाँ पचास, कहाँ एक सौ। पचास एक थैली भर होता है। सौ तो थैलियों में भी न आवे।

अब बस्ती घनी होने लगी थी। ईदगाह जानेवालों की टोलियाँ नजर आने लगी, एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए कोई इक्के-ताँगे पर सवार; कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर, संतोष और धैर्य में मगन चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर में सभी चीजें अनोखी थीं। जिस चीज की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते और पीछे से बार-बार हार्न की आवाज आने पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे जाते-जाते बचा।

सहसा ईदगाह नजर आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों का साया है नीचे पक्का फर्श है, जिस पर जाजिम बिछा हुआ है। और रोजेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं, पक्के जगत के नीचे तक, जहाँ जाजिम नहीं है। नए आनेवाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं हैं। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गये। कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार यही क्रिया होती है; जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जायँ और क्रम चलता रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनन्तता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।

(२)

नमाज खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दूकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी जमीन पर गिरते हुए। यह चर्खी हैं, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट सीखों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पचीस चक्करों का मजा लो। महमूद और मोहसिन, नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही तो पैसे उसके पास है। अपने कोष का एक तिहाई जरा-सा-चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दूकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं—सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधु। वाह ! कितने सुन्दर खिलौने हैं। बोला ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कँधे पर बन्दूक रक्खे हुए, मालूम होता है अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया, कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रक्खे हुए है, मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए है। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस मशक से पानी उड़ेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वत्ता है उनके मुख पर! काला चुगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी की सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी किसी अदालत से जिरह या बहस किए चले आ रहे हैं। यह सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले। खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाय। जरा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाय। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा, किस काम के!

मोहसिन कहता है—मेरा भिश्ती रोज पानी दे जायगा साँझ-सबेरे। महमूद और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आएगा तो फौरन बन्दूक फैर कर देगा।

नूरे—और मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी—मेरी धोबिन रोज कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निन्दा करता है—मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जायँ। लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि जरा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता! उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेष कर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचता रह जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहनहलवा! मजे से खा रहे हैं। हामिद से उनकी बिरादरी पृथक् है। अभागे के पास पैसे हैं, क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है—हामिद यह रेवड़ी ले जा कितनी खुशबूदार है।

हामिद को सन्देह हुआ यह केवल क्रूर विनोद है! मोहसिन इतना उदार नहीं है; लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद नूरे और सम्मी खूब तालियाँ बजा-बजा कर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन—अच्छा अबकी जरूर देंगे हामिद, अल्ला कसम ले जाओ।

हामिद—रक्खे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

सम्मी—तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?

महमूद—हमसे गुलाबजामुन ले जाओ हामिद। मोहसिन बदमाश है।

हामिद—मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन—लेकिन दिल में कह रहे होगे कि मिले, तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महमूद—हम समझते हैं, इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जायँगे तो हमें ललचा-ललचा कर खायगा।

मिठाइयों के बाद कुछ दूकानें लोहे की चीजों की है। कुछ गिलट और नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वह सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दूकान पर जाता है। कई चिमटे रक्खे हुए थे। उसे खयाल आया दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती है तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दें, वह कितनी प्रसन्न होंगी! फिर उनकी उँगलियाँ न जलेंगी। घर में एक काम की चीज हो जायगी। खिलौने से क्या फायदा! व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। जरा देर ही बो खुशी होती है। फिर तो खिलौनों को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। या तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट कर बराबर हो जायँगे, या छोटे बच्चे जो मेले नहीं आए हैं जिद करके ले लेंगे और तोड़ डालेंगे। चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो कोई आग माँगने आवे तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फुरसत है कि बाजार आयँ और इतने पैसे कहाँ मिलते हैं। रोज हाथ जला लेती हैं। हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब-के-सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं मुझे किसी ने एक भी न दी। उस पर कहते हैं मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसी ने कोई काम करने को कहा तो पूछूँगा। खायँ मिठाइयाँ, आप मुह सड़ेगा, फोड़े-फुंसियाँ निकलेंगी, आप ही जबान चटोरी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगी। तब घर से चुरायेंगे और मार खायँगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी जबान क्यों खराब होगी। अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी—मेरा बच्चा अम्माँ के लिये चिमटा लाया है! हजारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखायँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ देगा। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, और तुरन्त सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं तभी तो मोहसिन महमूद यों मिजाज दिखाते हैं। मैं भी इनसे मिजाज दिखाऊँगा। खेलें खिलौने और खायँ मिठाइयाँ। मैं नहीं खेलता खिलौने, किसी का मिजाज क्यों सहूँ, मैं गरीब सही किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता। आखिर अब्बाजान कभी न कभी आयँगे। अम्माँ भी आयँगी ही। फिर इन लोगों से पूँछूगा कितने खिलौने लोगे। एक-एक को टोकरियों खिलौने दूँ और दिखा दूँ कि दोस्तों के साथ इस तरह सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं, तो चिढ़ा कर खाने लगे। सब-के-सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें, मेरी बला से। उसने दूकानदार से पूछा—यह चिमटा कितने का है?

दूकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा—यह तुम्हारे काम का नहीं है, जा।

'बिकाऊ है कि नहीं?'

'बिकाऊ क्यों नहीं है। और लाद क्यों लाए हैं।'

'तो बताते नहीं कै पैसे का है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'छै पैसे लगेंगे।'

हामिद का दिल बैठ गया।

'ठीक-ठीक बताओ!'

'ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे नहीं तो चलते बनो।'

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा—तीन पैसे लोगे?

यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दूकानदार की घुड़कियाँ न सुने।

लेकिन दूकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रक्खा मानो बन्दूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। जरा सुनें, सब क्या-क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा—यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटक कर कहा—जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाँयँ बचा की।

महमूद बोला—तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद—खिलौना क्यों नहीं। अभी कंधे पर रक्खा, बन्दूक हो गई हाथ में ले लिया फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुमलोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाय, तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगावें, मेरे चिमटे का बाल भी बांका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है—चिमटा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला--मेरी खंजरी से बदलोगे? दो आने की है।

हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा से देखा--मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खंजरी का पेट फाड़ डाले। बस एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, डब-डब बोलने लगी। जरा-सा पानी लग जाय तो खतम हो जाय। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, आँधी में, तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सबको मोहित कर लिया, लेकिन अब पैसे किसके पास रे हैं। फिर मेले से दूर निकल आए हैं नौ कब के बज गए, धूप तेज हो रही है। घर पहुँचने की जिदें हो रही हैं। बाप से जिद भी करें, चिमटा नहीं मिल सकता। हामिद है बड़ा चालाक। इसलिये बदमाश अपने पैसे बचा रखे थे।

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, महमूद, सम्मी और रे एक तरफ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है। म्मी को विधर्मी हो गया, दूसरे पक्ष से जा मिला। लेकिन मोहसिन, हमूद और नूरे भी हामिद से एक-एक दो-दो साल बड़े होने पर भी मिद के आघातों से आतंकित हो उठे हैं। उसके पास न्याय का बल और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा जो इस के अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई आ जाय, तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जायँ, मियाँ सिपाही मिट्टी बन्दूक छोड़ कर भागें, वकील साहेब की नानी मर जाय, चुल्हे में छिपाकर जमीन पर लेट जायँ, मगर यह चिमटा, यह बहादुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रुस्तमेहिन्द लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जायगा और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का जोर लगाकर कहा—अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता ?

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा—भिश्ती को एक डाँट बतायगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर उसके द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया, पर महमूद ने कुमक पहुँचाई—अगर बच्चा पकड़े जायँ, तो अदालत में बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब ही के पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा—हमें पकड़ने कौन आयगा ?

नूरे ने अकड़कर कहा—यह सिपाही, बन्दूकवाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा, यह बेचारे हमारे बहादुर रुस्तमे-हिन्द को पकड़ेंगे ! अच्छा लाओ, अभी जरा कुश्ती हो जाय। इसकी सूरत देखकर दूर भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे।

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई, तुम्हारे चिमटे का मुह रो[illegible] आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जायगा, लेकिन यह ब[illegible] न हुई। हामिद ने तुरत जवाब दिया, आग में बहादुर ही कूदते [illegible] जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती औरतों की तरह [illegible] में घुस जायँगे। आग में कूदना वह काम है, जो यह रुस्तमेहिन्द [illegible] कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महमूद ने एक जोर लगाया—वकील साहब कुरसी-मेज पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में जमीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी को और भी सजीव कर दिया। कितने ठिकाने की बात कही है पट्ठे ने। चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है।

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा, तो उसने धाँधली शुरू की—मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुरसी पर बैठेंगे, तो जाकर उन्हें जमीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली-गलौज थी। लेकिन कानून को पेट में डालनेवाली बात छा गई। ऐसी छा गई की तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए मानों कोई घेलवा कनकौआ किसी पैसेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकलने वाली चीज है। उसको पेट के अन्दर डाल दिया जावे, बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमेहिन्द है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती।

विजेता को हारनेवालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन चार-चार आने पैसे खर्च किए, पर कोई काम की चीज न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच तो यह है कि खिलौनों का क्या भरोसा! टूट-फूट जायँगे। हामिद का चिमटा तो बना रहेगा बरसों!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्धि की शर्तें तय होने लगीं। मोहसिन ने कहा-जरा अपना चिमटा दो, हम भी देखें। तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं!

हामिद ने हारनेवालों के आँसू पोंछे—मैं तुम्हें चिढ़ा रहा था; सच, वह लोहे का चिमटा भला इन खिलौने की क्या बराबरी करेगा! मालूम होता है, अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसिन की पार्टी को इस दिलासे से सन्तोष नहीं होता। चिमटे का सिक्का खूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट अब पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन—लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद—दुआ को लिये फिरते हो। उलटे मार न पड़े। अम्मा जरूर कहेंगी कि मेले में यही मिट्टी के खिलौने तुम्हें मिले।

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसी की मा इतनी खुश न होगी जितनी कि दादी चिमटे को देखकर होगी। ती पैसों ही से तो उसे सब कुछ करना था, और उन पैसों के उपयोग पछतावे की बिल्कुल जरूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमेहि है और सभी खिलौनों का बादशाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिये। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गये। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

(३)

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गये। मोहसिन की छोटी बहिन ने दौड़कर भिस्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे। इस पर भाई-बहिन में मार-पीट हुई। दोनों खूब रोए। उनकी अम्माँ यह शोर सुनकर बिगड़ी और दोनों को ऊपर से दो-दो चाँटे और लगाये।

मियाँ नूरे के वकील का अन्त उसके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता है। उसकी मर्यादा का विचार करना ही होगा। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उसपर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति इस सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झेलना शुरू किया। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी नहीं! कानून की गर्मी दिमाग पर चढ़ जायगी कि नहीं। बांस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगे। मालूम नहीं पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्ग-लोक से मर्त्य-लोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया! फिर बड़े जोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का काम मिल गया। लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं जो अपने पैरों चले। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई। उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाए गए जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटें। महमूद ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ से 'सोने वाले, जागते रहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अंधेरी होनी चाहिए। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ जाते हैं और उनकी टाँग में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डाक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन में जोड़ सकता है। केवल गूलर का दूध चाहिए। गूलर का दूध आता है। टाँग जोड़ दी जाती है, लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे देती है। शल्य-क्रिया असफल हुई। तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम-से-कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है। एक टाँग से तो न चल सकता था, न बैठ सकता था। अब वह सिपाही संन्यासी हो गया। अपनी जगह पर बैठा-बैठा पहरा देता है। कभी-कभी देवता भी बन जाता है। उसके सिर का झालरदार साफा खुरच दिया गया है। इसलिए अब उसका जितना रूपान्तर चाहो कर सकते हो, कभी-कभी तो उससे बाट का काम भी लिया जाता है।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह चिमटा कहाँ था ?'

'मैंने मोल लिया है।'

'कै पैसे में ?'

'तीन पैसे दिये।'

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या यह चिमटा! सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?

हामिद ने अपराधी भाव से कहा—तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जली जाती थीं इसलिए मैंने इसे ले लिया!

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह, खूब ठोस रस और स्वाद से भरा हुआ था। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही! अमीना का मन गद्गद् हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चा हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदे गिरती जाती थीं। हामिद इसका रहस्य क्या समझे!

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयशंकर प्रसाद

[सन् १८८९–१९३७]

काशी के एक समृद्ध तथा संस्कृत परिवार में 'प्रसाद' जी का जन्म हुआ। इनकी अधिकांश शिक्षा घर पर ही हुई। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी और उर्दू-फारसी के भी ये अच्छे ज्ञाता थे। अध्ययन-मनन इनका निजी व्यस था। इसलिए पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही कविता, कहानी, नाटक तथा निब के रूप में इनकी नैसर्गिकप्रतिभा का प्रक साहित्याकाश में फैलने लगा।

प्रसादजी ने ६९ कहानियाँ लिखी हैं 'ग्राम' नामक इनकी पहली कहानी १९११ में 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित जिसे हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी कह का गौरव प्राप्त हुआ है। इनकी अ कहानी 'सालवती' है।

प्रसादजी मूलतः कवि थे, अतः इनकी कहानियों पर भी कवित्व की सुन छाया सर्वत्र विद्यामान है। भावों की सुमधुर व्यञ्जन, इनकी कला की सर्वो विशेषता है। प्रेमचंद के विपरीत इनकी कहानियाँ जन-जीवन पर नहीं, कल्पना और भावुकता पर आधारित हैं। हिन्दी में भाव-प्रधान कहानियों आरम्भ प्रसादजी से ही होता है। अनेक कहानियों में इन्होंने कहानी का आ अतीत को बनाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आँसू' और 'कामायनी' कवि 'प्रसाद' की हिन्दी-काव्य को बहुमूल्य देने हैं। 'कामायनी' को महान् आलोचकों ने रामचरितमानस के बाद हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ काव्य-ग्रन्थ उद्घोषित किया है।

नाटककार 'प्रसाद' हिन्दी-नाट्य के गर्व-गौरव हैं। 'चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, आजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी आदि ऐतिहासिक नाटकों में इनकी नाट्यकला का चूडान्त निदर्शन हुआ है।

भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को अपनी कृतियों में प्रसादजी ने कुछ इस आग्रह से चित्रित किया है कि प्रेमचन्द जी, विनोद में, इन्हें गड़े मुर्दे उखाड़नेवाला कहा करते थे; किन्तु कंकाल और तितली नामक अपने सुप्रसिद्ध उपन्यासों में इन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का तीच्ण परिचय दे दिया है।

आँधी, आकाशदीप, इन्द्रजाल आदि इनके प्रख्यात कहानी-संग्रह हैं। 'स्वर्ग के खंडहर में' 'आकाशदीप' आदि हिन्दी की अमर कहानियाँ हैं। इनमें प्रभावपूर्ण नाटकीय कथोपकथन, सूक्तियों का सौष्ठव, भाषा की रंगीनी आदि देखने ही योग्य है। इनकी प्रस्तुत कहानी 'मधुआ' को हिन्दी-कथा-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुआ

"आज सात दिन हो गये, पीने की कौन कहे, छुआ तक नहीं। आज सातवाँ दिन है सरकार !"

"तुम झूठे हो। अभी तो तुम्हारे कपड़े से महक आ रही है।"

"वह.......वह तो कई दिन हुए। सात दिन से ऊपर—कई दिन हुए—अंधेरे में बोतल उड़ेलने लगा था। कपड़े पर गिर जाने से नशा भी न आया। और आपको कहने का...क्या कहूँ....सच....मानिए। सात दिन—ठीक सात दिन से एक बूंद भी नहीं।"

ठाकुर सरदार सिंह हँसने लगे। लखनऊ में लड़का पढ़ता था। ठाकुरसाहब भी कभी-कभी वहीं आ जाते। उनको कहानी सुनने का चसका था। खोजने पर यही शराबी मिला। वह रात को, दोपहर में, कभी-कभी सबेरे भी आ जाता। अपनी लच्छेदार कहानी सुनाकर ठाकुर का मनोविनोद करता।

ठाकुर ने हँसते हुए कहा—"तो आज पियोगे न ?"

"झूठ कैसे कहूँ। आज तो जितना मिलेगा, सबको पिऊँगा। सात दिन चने-चबेने पर बिताये किस लिये ?"

अद्भुत ! सात दिन पेट काटकर, आज अच्छा भोजन न करके तुम्हें पीने की सूझी है !....यह भी....'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सरकार ! मौज-बहार की एक घड़ी, एक लम्बे दुःखपूर्ण जीवन से अच्छी है। उसकी खुमारी में रूखे दिन काट लिये जा सकते हैं !"

"अच्छा आज दिन भर तुमने क्या-क्या किया है ?"

"मैंने ? अच्छा सुनिए—सवेरे कुहरा पड़ता था, मेरे धुआं से कम्बल-सा वह भी सूर्य के चारों ओर लिपटा था। हम दोनों मुँह छिपाये पड़े थे।"

ठाकुर साहब ने हँसकर कहा—"अच्छा तो इस मुँह छिपाने का कोई कारण ?"

"सात दिन से एक बूंद भी गले न उतरी थी। भला, मैं कैसे मुँह दिखा सकता था ? और जब बारह बजे धूप निकली, तो फिर लाचारी थी। उठा, हाथ-मुँह धोने में जो दुःख हुआ सरकार, वह क्या कहने की बात है ! पास में पैसे बचे थे। चना चबाने से दाँत भाग रहे थे। कट-कटी लग रही थी। पराठे वाले के यहाँ पहुँचा, धीरे-धीरे खाता रहा और अपने को सेकता रहा। फिर गोमती किनारे चला गया। घूमते-घूमते अंधेरा हो गया, बूंदें पड़ने लगीं। तब कहीं भागा और आपके पास आ गया।"

"अच्छा, जो उस दिन तुमने गड़ेरिये वाली कहानी सुनाई थी, जिसमें आसफउद्दौला ने उस लड़की का आंचल, भुने हुए भुट्टों के दानों के बदले, मोतियों से भर दिया था, वह क्या सच है ?"

"सच ! अरे वह गरीब लड़की भूख से उसे चबाकर थू-थू करने लगी।....रोने लगी। ऐसी निर्दय दिल्लगी बड़े लोग कर ही बैठते हैं। सुना है, श्री रामचन्द्र ने भी हनुमान जी से ऐसी ही....।

Gurukula Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर साहब ठठाकर हँसने लगे। पेट पकड़कर हँसते-हँसते लो गये। सांस बटोरते हुए सँभल कर बोले—"और बड़प्पन कहते कि हैं ? कंगाल तो कंगाल ! गधी लड़की ! भला उसने कभी मोती दे थे, चबाने लगी होगी। मैं सच कहता हूँ, आजतक तुमने जित कहानियाँ सुनाई, सब में बड़ी टीस थी। शाहजादों के दुखड़े, रं महल की अभागिन बेगमों के निष्फल प्रेम, करुण-कथा और पीड़ा भरी हुई कहानियाँ ही तुम्हें आती है; पर ऐसी हँसाने वाली कहानी औ सुनाओ, तो तुम्हें अपने सामने ही बढ़िया शराब पिला सकता हूँ।"

"सरकार ! बूढ़ों से सुने हुए वे नवाबी के सोने-से दिन अमी को रंग-रेलियाँ ! दुखियों की दर्द भरी आहें ! रंगमहलों में घुल-घु कर मरने वाली बेगमें अपने-आप सिर में चक्कर काटती रहती हैं। उनकी पीड़ा से रोने लगता हूँ। अमीर कंगाल हो जाते हैं। बड़े-ब घमण्ड चूर होकर धूल में मिल जाते हैं। तब भी दुनिया बड़ी पाग है। उसको, पागलपन को भूलने के लिये शराब पीने लगता हूँ- सरकार ? नहीं तो यह बुरी बला कौन अपने गले लगाता !"

ठाकुर साहब ऊँघने लगे थे। अंगीठी में कोयला दहक रहा था शराबी सरदी से ठिठुरा जा रहा था। वह हाथ सेंकने लगा। सह नींद में चौककर ठाकुर साहब ने कहा—"अच्छा जाओ, मुझे नींद ल रही है। वह देखो एक रुपया पड़ा है, उठा लो। लल्लू को भेज जाओ।"

शराबी रुपया उठाकर धीरे से खिसका। लल्लू था ठाकुर सा का जमादार। उसे खोजते हुए वह फाटक पर की बगलवाली को

के पा
पड़ा।
"
हैं !
क
साथ
से लल
उठू गा
श
लगी।
मार ख
भ
सुन्दर
से उस
दस ब
शराबी
लिया
कि मा
कर बो
"
"
तुझे र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास पहुँचा, तो उसे सुकुमार कण्ठ से सिसकने का शब्द सुनाई पड़ा। वह खड़ा होकर सुनने लगा।

"तो सुअर! रोता क्यों है? कुंवर साहब ने दो ही लात न लगाई हैं! कुछ गोली तो नहीं मार दी!"

कर्कश स्वर से लल्लू बोल रहा था, किन्तु उत्तर में सिसकियों के साथ एकाध हिचकी ही सुनाई पड़ जाती थी। अब और भी कठोरता से लल्लू ने कहा—"मधुआ! जा सो रह! नखरा न कर, नहीं तो उठूंगा तो खाल उधेर दूंगा। समझा न!"

शराबी चुपचाप सुन रहा था। बालक की सिसकी और बढ़ने लगी। फिर उसे सुनाई पड़ा—"ले अब भागता है कि नहीं। क्यों मार खाने पर तुला है!"

भयभीत बालक बाहर चला आ रहा था। शराबी ने उसके छोटे-से सुन्दर गोरे मुँह को देखा। आँसू की बूंद ढुलक रही थीं। बड़े दुलार से उसका मुँह पोंछते हुए उसे लेकर वह फाटक के बाहर चला आया। दस बज रहे थे। कड़ाके की सर्दी थी। दोनों चुपचाप चलने लगे। शराबी की मौन सहानुभूति को उस छोटे-से सरल हृदय ने स्वीकार कर लिया। वह चुप हो गया। अभी वह एक तंग गली पर रुका ही था कि बालक के फिर से सिसकने की उसे आहट लगी। वह झिड़क कर बोल उठा—"अब क्यों रोता है रे छोकरे?"

"मैंने दिन-भर से कुछ खाया नहीं।"

"कुछ खाया नहीं; इतने बड़े अमीर के यहाँ रहता है और दिन-भर तुझे खाने को नहीं मिला?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही तो मैं कहने गया था, जमादार के पास; मार तो रोज ही खाता हूँ। आज तो खाना ही नहीं मिला। कुंवर साहब का ओवरकोट लिये खेल में दिनभर साथ रहा। सात बजे लौटा, तो और भी नौ बजे तक कुछ काम करना पड़ा। आटा रख नहीं सका था। रोटी बनती तो कैसे। जमादार से कहने गया था।"

भूख की बात कहते-कहते बालक के ऊपर उसकी दीनता और भूख ने एक साथ ही जैसे आक्रमण कर दिया। वह फिर हिचकियाँ लेने लगा।

शराबी उसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ गली में ले चला। एक गन्दी कोठरी का दरवाजा ढकेल कर बालक को लिये हुए वह भीतर पहुँचा। टटोलते हुए सलाई से मिट्टी की ढेबरी जला कर वह फटे कम्बल के नीचे से कुछ खोजने लगा। एक पराठे का टुकड़ा मिला, शराबी उसे बालक के हाथ में देकर बोला—"तबतक तू इसे चबा; मैं तेरा गढ़ा भरने के लिए कुछ और ले आऊँ—सुनता है रे छोकरे! रोना मत, रोयगा तो खूब पीटूँगा। मुझसे रोने से बड़ा बैर है। पाजी कहीं का, मुझे भी रुलाने का.......।"

शराबी गली के बाहर भागा। उसके हाथ में एक रुपया था। बारह आने का एक देशी अद्धा और दो आने का चॉप.......दो आने पकौड़ी नहीं, नहीं, आलू-मटर.......अच्छा, न सही। चारो आने का मांस ही ले लूँगा; पर यह छोकरा! इसका गढ़ा जो भरना होगा, यह कितना खायगा और क्या खायगा? ओह! आजतक तो कभी मैंने दूसरों के खाने का सोच किया ही नहीं। तो क्या ले चलूँ! पहले ए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्धा ही ले लू ! इतना सोचते-सोचते उसकी आँखों पर बिजली के प्रकाश की झलक पड़ी। उसने अपने को मिठाई की दूकान पर खड़ा पाया। वह शराब का अद्धा लेना भूल कर मिठाई-पूरी खरीदने लगा। नमकीन लेना भी न भूला। पूरे एक रुपये का सामान लेकर वह दुकान से हटा। जल्द पहुँचने के लिए एक तरह से दौड़ने लगा। अपनी कोठरी में पहुँचकर उसने दोनों की पाँत बालक के सामने सजा दी। उसकी सुगन्ध से बालक के गले में एक तरह की तरावट पहुँची। वह मुस्कराने लगा।

शराबी ने मिट्टी की गगरी से पानी उड़ेलते हुए कहा—"नटखट कहीं का, हँसता है! सोंधी बास नाक में पहुँची न! ले खूब ठूँस-ठूँस कर खा ले और रोया की पीटा।"

दोनों ने बहुत दिन पर दो मित्र की तरह साथ बैठ कर भरपेट खाया। सीली जगह में सोते हुए बालक ने शराबी का पुराना बड़ा कोट ओढ़ लिया था। जब उसे नींद आ गई, तो शराबी कम्बल तान कर बड़बड़ाने लगा–सोचा था,आज सात दिन पर भर-पेट पीकर सोऊँगा; लेकिन यह छोटा-सा रोना पाजी, न जाने कहाँ से आ धमका!

❀ ❀ ❀

एक चिन्तापूर्ण आलोक में आज पहले-पहल शराबी ने आँख खोल कर, कोठरी में बिखरी हुई दारिद्र्य की विभूति को देखा और देखा उस घुटनों से ठुड्डी लगाये हुए निरीह बालक को। उसने तिलमिला कर मन-ही-मन प्रश्न किया। किसने ऐसे सुकुमार फूलों को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की? आह री नियत! तब इसको लेकर मुझे घरबार बनना पड़ेगा क्या? दुर्भाग्य! जिसे मैंने कभी सोचा भी न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मेरी इतनी माया-ममता—जिसपर आज तक केवल बोतल का ही पूरा अधिकार था—इसका पक्ष क्यों लेने लगी? इस छोटे-से पाजी ने मेरे जीवन के लिए कौन-सा इन्द्रजाल रचने का बीड़ा उठाया है? तब क्या करूँ? कोई काम करूँ? कैसे दोनों का पेट चलेगा? नहीं, भगा दूँगा इसे—"आँख तो खोलो!"

बालक अंगराई ले रहा था। उठ बैठा। शराबी ने कहा—"ले, उठ! कुछ खा ले। अभी रात का बचा हुआ है, और अपनी राह देख। तेरा नाम क्या है रे?"

बालक ने सहज हँसी हँसकर कहा—"मधुआ! भला हाथ-मुँह भी न धोऊँ, खाने लगूँ? और जाऊँगा कहाँ?"

आह! कहाँ बताऊँ इसे कि चला जाय। कह दूँ कि भाड़ में जा; किन्तु वह आज तक दुःख की भट्टी में जलता ही तो रहा है। तो···वह चुपचाप घर से झल्लाकर सोचता हुआ निकला—"ले पाजी, अब यहाँ लौटूँगा ही नहीं, तू ही इस कोठरी में रह?" शराबी घर से निकला। गोमती किनारे पहुँचने पर उसे स्मरण हुआ कि वह कितनी ही बातें सोचता आ रहा था; पर कुछ भी सोच न सका। हाथ-मुँह धोने में लगा। उजली हुई धूप निकल आई थी। वह चुपचाप गोमती की धारा को देख रहा था। धूप की गर्मी से सुखी होकर वह चिन्ता भुलाने का प्रयत्न कर रहा था कि किसी ने पुकारा—"भले आदमी रहे कहाँ? सालों पर दिखाई पड़े। तुमको खोजते-खोजते मैं थक गया।"

शराबी ने चौंक कर देखा। वह कोई जान-पहचान का तो मालूम होता था; पर कौन है यह ठीक-ठीक नहीं जान सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने फिर कहा—"तुम्हीं से कह रहे हैं। सुनते हो, उठा ले जाओ अपनी सान धरने की कल, नहीं तो सड़क पर फेंक दूंगा। एक ही तो कोठरी जिसका मैं दो रुपया किराया देता हूँ, उसमें क्या मुझे अपना कुछ रखने के लिए नहीं है ?"

"ओ हो! रामजी, तुम हो भाई मैं भूल गया था। तो चलो आज ही उसे उठा लाता हूँ।"—कहते हुए शराबी ने सोचा—"अच्छा रही, उसीको बेचकर कुछ दिनों तक काम चलेगा।

गोमती नहाकर, रामजी उसका साथी, पास ही अपने घर पर पहुँचा। शराबी को कल देते हुए उसने कहा—"ले जाओ, किसी तरह मेरा इससे पिण्ड छूटे।"

बहुत दिनों पर आज उसको कल ढोना पड़ा। किसी तरह अपनी कोठरी में पहुँच कर उसने देखा कि बालक चुपचाप बैठा है। बड़बड़ाते हुए उसने पूछा—"क्यों रे, तूने कुछ खा लिया कि नहीं ?"

"भर-पेट खा चुका हूँ, और वह देखो तुम्हारे लिए भी रख दिया है।" कहकर उसने अपनी स्वाभाविक मधुर हँसी से उस रूखी कोठरी को तर कर दिया। शराबी एक क्षणभर चुप रहा। फिर चुपचाप जल-पान करने लगा। मन-ही-मन सोच रहा था—यह भाग्य का नहीं तो और क्या है ? चलूँ, फिर लेकर सान देने का काम चलता करूँ। दोनों का पेट भरेगा। वही पुराना चर्खा फिर सिर पड़ा। नहीं तो, दो बातें किस्सा-कहानी इधर-उधर की कह कर, अपना काम चला ही लेता था। पर अब तो बिना कुछ किये घर नहीं चलने का। जल पीकर बोला—"क्यों रे मधुआ, अब तू कहाँ जायगा ?"

"कहीं नहीं !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह लो, तो फिर क्या यहाँ जमा गड़ी है, कि मैं खोद-खोद क
तुझे मिठाई खिलाता रहूँगा ?"

"तब कोई काम करना चाहिए।"

"करेगा ?"

"जो कहो !"

"अच्छा, तो आज से मेरे साथ-साथ घूमना पड़ेगा। यह क
तेरे लिये लाया हूँ। चल आज से तुझे सान सिखाऊँगा। क
रहूँगा, इसका कुछ ठीक नहीं। पेड़ के नीचे रात बिता सकेगा न ?"

"कहीं भी रह सकूँगा; पर उस ठाकुर की नौकरी न कर सकूँगा !"

शराबी ने एक बार स्थिर दृष्टि से उसे देखा। बालक की आँ
दृढ़ निश्चय की सौगन्ध खा रही थीं।

शराबी ने मन-ही-मन कहा—बैठे-बैठाये यह हत्या कहाँ से लगी
अब तो शराब न पीने की मुझे भी सौगन्ध लेनी पड़ी।

वह साथ ले जानेवाली वस्तुओं को बटोरने लगा। एक गट्ठर
और दूसरा कल का, दो बोझ हुए।

शराबी ने पूछा—"तू किसे उठायगा ?"

"जिसे कहो।"

"अच्छा, तेरा बाप जो मुझे पकड़े तो ?"

"कोई नहीं पकड़ेगा, चलो भी। मेरे बाप मर गये !"

शराबी आश्चर्य से उसका मुँह देखता हुआ कल उठाकर
हो गया। बालक ने गठरी लादी। दोनों कोठरी छोड़ कर चल प

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदर्शन

(सन् १८९६-)

स्यालकोट (पंजाब) को सुदर्शन जी की जन्मभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है। उच्च मध्यम वर्ग के वातावरण में इनका विकास हुआ। यों तो शैशव काल से ही कथाकारिता की ओर इनकी प्रवृत्ति देखी गई, किन्तु प्रायः १९२० ई० से इनकी कहानियाँ सम्मान प्राप्त करने लगीं।

हिन्दी कथा-साहित्य के सम्राट् प्रेमचन्द से अनेक अंशो में इनकी समता है।

कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद के बाद इनका नाम लिया जाता है। इनकी भाषा में वैसा ही प्रवाह और प्राण है। ये भी पहले उर्दू में लिखते थे। बाद में हिन्दी में लिखने लगे। इनकी रचनाओं का भी एक विशेष उद्देश्य रहता है।

सुदर्शनजी की कहानी-कला अन्त तक पाठकों को उत्सुक बनाये रहने और सरसता के सरोवर में नहलाते रहने की विशेषता रखती है। सुदर्शनजी पत्रकार, निबन्धकार आदि भी हैं।

दुर्भाग्यवश हिन्दी साहित्य को इनकी अमूल्य सेवाएँ निरन्तर न प्राप्त हो सकीं। प्रायः पन्द्रह-बीस वर्षों से ये सिनेमा क्षेत्र में काम कर रहे हैं और इन दिनों बम्बई में रहते हैं। फिर भी समय-समय पर इनकी बहुविधि योग्यता और निपुणता के प्रमाण साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त होते रहते है। सिनेमा-क्षेत्र में कहानी और कथोपकथन-लेखक के रूप में ये विख्यात् हैं। सिकन्दर और 'पृथ्वीवल्लभ' नामक प्रसिद्ध फिल्मों में ओजपूर्ण और सशक्त कथोपकथन इन्होंने ही लिखे हैं।

इनकी कहानियाँ पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुकी हैं। 'हार-जीत' इनकी एक विख्यात् कहानी है। प्रस्तुत कहानी 'एथेंस का सत्यार्थी' में इनकी कहानी-कला की सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एथेंस का सत्यार्थी

यह एक बीते हुए युग की कहानी है, जब यूनान ऐश्वर्य और सभ्यता के शिखर पर थी, और संसार की सर्वोत्तम सन्तान यूनान में उत्पन्न होती थी। रात का समय था, काव्य और कला को कभी न भूलने वाली प्राचीन नगरी 'एथेंस' पर अन्धकार छाया हुआ था। चारों तरफ सन्नाटा था, चारों तरफ निस्तब्धता थी—सब बाजार खाली थे, सब गलियाँ निर्जन थीं। और,यह सुन्दर और आबाद नगरी रात के अन्धेरे में दूर से ऐसी दिखाई देती थी, जैसे किसी जंगल में धुँधली-सी अपूर्ण छाया का पड़ाव पड़ा हो।

पूरी नगरी पूरा विश्राम कर रही थी। उसके विद्वान् और विलासी बेटे अपनी-अपनी शय्या पर बेसुध पड़े थे। रंगशालएँ खाली हो चुकी थीं और द्वारपालों की आँखों की पलके नींद के लगातार आक्रमणों के सामने झुकी जाती थीं; परन्तु एक नवयुवक की आँखे नींद की शान्ति और शान्ति की नींद दोनों से वंचित थीं।

यह 'देवकुलीश एक विद्यार्थी था, जिसकी आत्मा सत्य-दर्शन की प्यासी थी। वह एक बहुत बड़े धनवान का बेटा था, उसकी सम्पत्ति उसके लिये हर तरह का विलास खरीद सकती थीं, वह अत्यन्त मनोहर था, वह बहुत उच्चकोटि का तत्त्व-वेत्ता था उसकी साधारण युक्तियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय के अध्यापकों की पहुँच से बाहर थीं; परन्तु इसे इस पर भी शान्ति न थी। वह सत्य की खोज में अपने अपको मिटा देने पर तुला हुआ था। वह इस रास्ते में अपना सर्वस्व निछावर कर देने को तैयार था मर्त्य-लोक की नाशवान खुशियाँ उसके लिए अर्थ-हीन वस्तुएं थीं। यौवन और सौन्दर्य की सजीव मूर्त्तियों में उसके लिए कोई आकर्षण न था। वह चाहता था, किसी तरह सत्य एकबार उसके वास्तविक रूप में देख ले। वह सत्य को बेपरदा, नंगा देखना चाहता था। ऐसा नहीं, जैसा वह दिखाई देता है, बल्कि ऐसा, जैसा वह वास्तव में है। वह अपनी इस मनोरथ-सिद्धि के लिए सब कुछ करने को तैयार था!

देवकुलीश रात-दिन पढ़ता था।

पढ़ता था और सोचता था। सोचता था और पढ़ता था, मगर उसके स्वाध्याय; चिन्तन और मनन से उसके प्यासे हृदय की प्यास मिटती न थी, बढ़ती जाती थी। सत्य का रोगी चिकित्सा से और बीमार होता जाता था।

विद्यालय के आँगन में विशाल एक ऊँचा चबूतरा था, जिस पर पता नहीं कब से 'मिनरवा' ज्ञान और विवेक की देवी, संगमरमर के वस्त्र पहने खड़ी थी। देवकुलीश पत्थर की इस मूर्त्ति के बरफ-समान पैरों के निकट आकर घण्टों बैठा रहता और संसार के रहस्य पर चिन्तन किया करता था। यहाँ तक कि उसके मित्रों और सहपाठियों ने समझ लिया कि इसके मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो गया है। वे उसकी इस शोचनीय दशा को देखते थे और कुढ़ते थे।

उस रात भी देवकुलीश देवी के पैरों के निकट बैठा था और रो रहा था—"कृपा कर! ऐ विद्या और विज्ञान की सबसे बड़ी देवी, कृपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर ! मेरे मन की अभिलाषा पूरी कर। मैं कई वर्षों से तेरी पूजा कर रहा हूँ। मैंने कई रातें तेरे पैरों को अपने आँसुओं से धोने में गुजार दी हैं। मैंने कई दिन केवल तेरे ध्यान में बिता दिये है। मेरी प्रार्थना के शब्द सुन और उन्हें स्वीकार कर !"

देवकुलीश यह कहकर खड़ा हो गया और देवी के तेज-पूर्ण मुंह की तरफ देखने लगा, मगर वह उसी तरह चुपचाप थी।

इतने में चंद्रमा आकाश में उदय हुआ उसके सुवर्ण और सुशीतल प्रकाश में देवी की मूर्त्ति और भी मनोहर दिखाई देने लगी।

अब देवकुलीश फिर मूर्त्ति के चरणों में बैठा था और उसी तरह बालकों के सदृश रो-रोकर प्रार्थना कर रहा था, मानो वह संगमरमर की की मूर्त्ति न थी, इस दुनिया की जीती-जागती स्त्री थी, जो सुनती भी है जवाब भी देती है। बुद्धिमान् देवकुलीश ने पागलपन के आवेश में कहा "आज की रात फैसले की रात है। ऐ ज्ञान और विवेक की रानी! तूने मेरे दिल में जिज्ञासा की आग सुलगाई है, तू ही उसे सत्य के शीतल जल से शान्त कर सकती है। सत्य कहाँ है ?-अजर, अमर अटल सत्य। वह सत्य जिस पर बुद्धिमान् लोग शास्त्रार्थ करते हैं जिसका पण्डित चिन्तन करते हैं, जिसे लोग एकान्त में तलाश करते हैं मन्दिरों में ढूँढ़ते हैं, जिसके लिए दूर-दूर भटकते हैं। मैं वह उच्च कोटि का सत्य देखने का अभिलाषी हूँ। नहीं तो मैं चाँद की उज्जवल चाँदनी के सामने तेरे पैरों की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि अपने निरर्थक जीवन को यहीं,-इसी जगह समाप्त कर दूंगा। मुझे सत्यहीन जीवन की कोई आवश्यकता नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहकर देवकुलीश ने अपनी चादर के अन्दर से एक कटार निकाली, और आत्म-हत्या करने को तैयार हो गया।

एकाएक सफेद पत्थर की मूर्त्ति सजीव हो गई। उसने देवकुलीश के हाथ से कटार छीन ली, उसे आँगन के एक अँधेरे कोने में फेंक दिया और कहा—देवकुलीश !"

देवकुलीश काँपता हुआ खड़ा हो गया और आशा, आनन्द और संदेह की दृष्टि से देवी की ओर देखने लगा; क्या यह सच है ?

हाँ यह सच था, देवी के होंठ सचमुच हिल रहे थे—देवकुलीश ! देवकुलीश !!—देवकुलीश देवी का एक-एक शब्द पूरे ध्यान से सुन रहा था।

"देवकुलीश ! मौत का मार्ग अँधेरा है। तू मेरा पुजारी मेरे आँखों के सामने इस मार्ग पर नहीं जा सकता। मेरे लिए असह्य है कि मेरे सामने कोई आत्म-हत्या कर जाय। बोल क्या माँगता है ? मैं तेरी हरएक मनोकामना पूरी करने को तैयार हूँ।"

देवकुलीश का दिल सफलता के आनन्द से धड़क रहा था। उसके मुँह से शब्द न निकलते थे। वह देवी के पैरों के निकट बैठ गया, और श्रद्धाभाव से बोला—"पवित्र देवी। मैं सत्य को उसके अपने असली स्वरूप में देखना चाहता हूँ। नंगा, बेपरदा, खुला सत्य। और कुछ नहीं बस सत्य।"

'तू सत्य को जानना चाहता है ?"—देवी के होंठों से आवाज आई—"तू आप सत्य है। यह आँगन भी सत्य है। मैं भी सत्य हूँ। आँखें खोल, सत्य दुनिया के चप्पे-चप्पे में मौजूद है।"

देवकुलीश—"मगर उस पर परदे पड़े हुए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी—"विवेक की आँख उन परदों के अन्दर का दृश्य भी देख सकती है।"

देवकुलीश—"पवित्र माता! मैं सत्य को विवेक से नहीं, आँखों से देखना चाहता हूँ!" मैं सोचकर नहीं देखना चाहता, देखकर सोचना चाहता हूँ।"

देवी ने अपना पत्थर का सफेद, ठंडा भारी हाथ देवकुलीश के कन्धे पर रख दिया और मीठे स्वर में बोली—"बेपरदा, नंगा सत्य आज तक दुनिया के किसी बेटे ने नहीं देखा, न देवताओं ने किसी मनुष्य को यह वरदान दिया है। तू अन्न का कीड़ा है, तेरी आँखों में यह दृश्य देखने की शक्ति कहाँ? मेरा परामर्श है यह खयाल छोड़ दे और अपने लिए कोई और वस्तु माँग; मैं अभी, इसी जगह दूँगी।"

देवकुलीश....."यूनान की सबसे बड़ी देवी! मैं केवल नंगा सत्य देखना चाहता हूँ और कुछ नहीं चाहता।"

देवी—"मगर इसका मूल्य............"

देवकुलीश—"जो कुछ तू माँगे।"

देवी—"धन, दौलत, सौन्दर्य, यश सब तुझसे छूट जायँगे। तुझे अपनी दुनिया को चाँद और सूरज के प्रकाश से वञ्चित करना होगा शायद इस यज्ञ में तुझे अपनी जीवन की भी आहुति देनी पड़े। बोल क्या अब भी तू सत्य का नंगा रूप देखना चाहता है?"

देवकुलीश—"मुझे सब स्वीकार है।"

देवी ने सिर झुका लिया।

देवकुलीश—"परमेश्वर की सृष्टि में ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो इसके लिए न त्याग सकूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी ने सिर उठाया और मुस्कुराकर कहा—"बहुत अच्छा! तू सत्य को देख लेगा। तुझे सत्य दिखा दिया जायगा; सत्य का वास्तविक, नंगा रूप तेरे सामने होगा; परन्तु एक बार नहीं धीरे-धीरे चल! आज सत्य का एक परदा उठा, बाकी एक वर्ष के बाद।"

३

यह कहते-कहते देवी ने अपनी सफेद पत्थर की चादर उतार कर चबूतरे पर रख दी और देवकुलीश को गोद में उठा लिया। देखते-देखते देवी के दोनों कन्धों पर परियों के-से दो पर निकल आये। देवी ने पर खोले, और हवा में उड़ने लगी। पहले शहर, मन्दिरों के कलश, पर्वत, फिर चाँद, तारे, बादल—सब नीचे रह गये। देवी देवकुलीश को लिये, आकाश में उड़ी जा रही थी। थोड़ी देर बाद उसने देवकुलीश को दो बादलों के एक पहाड़ पर खड़ा कर दिया। देवकुलीश ने देखा, पृथ्वी उसके पाँव तले दूर, बहुत नीचे, एक छोटे से तारे के समान टिमटिमा रही है, और थी वह यह दुनिया, जिसको वह इतना बड़ा समझ रहा था; मगर देवकुलीश का ध्यान इस ओर न था। उसने अपने पास छाया में छिपी हुई एक धुँधली-सी चीज देखी और देवी से पूछा—"यह क्या है?"

देवी—"यही सत्य है। यह छिपकर रहता है, यहीं से तेरी और अनगिनत दूसरी दुनियाओं को अपनी दिव्य ज्योति भेजता है। इसी धुंधले प्रकाश में बैठकर सयाने लोग दुनिया की पहेलियाँ हल करते हैं, और गुरु अपने शिष्यों को जीवन की शिक्षा देते हैं, यही प्रकाश सृष्टि का सूरज है, यही ज्योति मानव-चरित्र का आदर्श है। तू कहेगा, यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कुछ ज्यादा प्रकाशवान् नहीं; परन्तु देवकुलीश ! तेरे शहर के निकट जो नदी बहती है, यदि उसकी सारी रेत का एक-एक कण एक-एक सूरज बन जाय, तब भी उसमें इतना प्रकाश न होगा, जितना इस पहाड़ की छाया में है, मगर वह परदों में छिपा हुआ है। चल, आगे बढ़ और इसका एक परदा फाड़ दे।"

देवकुलीश ने एक परदा फाड़ दिया। इसके साथ ही उसे ऐसा मालूम हुआ, जैसे संसार में एक नवीन प्रकार का प्रकाश फैल गया है। सच की छाया अब पहले से ज्यादा साफ और चमकदार थी।

देवी देवकुलीश को फिर एथेन्स में उड़ा लाई और अपनी संगमरमर की चादर ओढ़कर फिर उसी तरह चुपचाप खड़ी हो गई।

अब देवकुलीश की दृष्टि में चाँदी और सोने का कोई मूल्य न था। वह लोगों को दौलत के पीछे भागते देखता उसे आश्चर्य होता था। वह चाँदी को सफेद लोहा, और सोने को पीला लोहा कहता था, और इनकी प्राप्ति के लिए अपना परिश्रम नष्ट न करता था। उसे पढ़ने की धुन थी, दिन-रात पढ़ता रहता था। उसके बाप ने उसका साधु-स्वभाव देख कह दिया कि इसे मेरी जायदाद में से कुछ न मिलेगा; परन्तु देवकुलीश को इसकी जरा चिन्ता भी न थी। उसके मित्र-संबन्धी कहते—"देवकुलीश ! यह आयु जवानी और गर्म खून की है। सफेद बालों और झुकी हुई कमर का जमाना शुरू होने से पहले कुछ जमा कर ले। नहीं, फिर बाद पछतायगा।"

देवकुलीश उनकी तरफ अद्भुत दृष्टि से देखता और कहता—"तुम क्या कह रहे हो, मैं कुछ नहीं समझता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एथेंस के एक बहुत बड़े अमीर की कुँआरी बेटी देवकुलीश की देखभाल करती और कुढ़ती थी। देवकुलीश के खाने-पीने का प्रबन्ध भी वही करती थी, वरना वह भूखा-प्यासा मर जाता।

इसी तरह एक साल के तीन सौ पैंसठ दिन पूरे हो गये। रात का समय था, एथेंस पर फिर अन्धकारपूर्ण सन्नाटा छाया हुआ था। देवकुलीश ने फिर देवी के पैरों पर सिर झुकाया। देवी उसे फिर बादलों के पहाड़ पर ले गई और देवकुलीश ने सत्य का दूसरा परदा फाड़ दिया। इस बार सत्य का प्रकाश और भी साफ हो गया। देवकुलीश ने उसे देखा और उसकी आँखों को वे ज्ञान-चक्षु मिल गये जो यौवन और सुकुमारता के लाल लहू के पीछे छिपे हुए बुढ़ापे की एक-एक झुर्री को देख सकते थे। फिर वह अपनी बनावट और अविद्या की दुनिया को वापस चला आया। देवी फिर संगमरमर का बुत बनकर अपनी जगह पर खड़ी हो गई।

४

एक दिन उसके एक मित्र ने कहा—"देवकुलीश! आज यूनान की सब कुआरी लड़कियाँ एथेंस में जमा हैं और यूनान की सबसे सुन्दरी युवती को सौन्दर्य का पहला इनाम दिया जायगा। क्या तू भी चलेगा?"

देवकुलीश ने उसकी ओर मुस्कुराकर देखा और कहा—"सत्य वहाँ नहीं।"

दूसरे दिन एक अध्यापक ने कहा—"आज यूनान के सारे समझदार लोग विद्यालय में जमा हैं। क्या तुम उनसे मिलोगे?"

देवकुलीश ने ठण्डी आह भरकर जवाब दिया—"सत्य वहाँ भी नहीं है!!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे दिन एक महन्त ने कहा—"आज चाँदी देवी के बड़े मन्दिर में देवताओं की पूजा होगी। क्या तुम भी जाओगे ?"

देवकुलीश ने लम्बी आह खींची और कहा—"सत्य वहाँ भी नहीं है।"

और, इस तरह, इस सत्यार्थी ने जवानी ही में जवानी के सारे प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर ली। अब वह पूरा महन्त था; मगर वह एथेंस के किसी मेले में नजर न आता था, उसकी आवाज किसी सभा में न सुनाई देती थी।

सत्यार्थी साल-भर एकान्त में पढ़ता रहता और उसके याद बादलों के पहाड़ पर जाकर सत्य का एक परदा फाड़ आता था। इसी तरह कई वर्ष बीत गये। उसका ज्ञान दिन-दिन बढ़ता गया, मगर उसकी आँखें अन्दर धंस गई थीं, कमर झुक चुकी थी; सिर के सारे बाल सफेद हो गये थे। उसने सत्य की खोज में अपनी जवानी बुढ़ापे की भेंट कर दी थी; मगर उसे इसका दुःख न था, क्योंकि वह जवानी और बुढ़ापे दोनों की सत्ता से परिचित हो चुका था।

और लोग यह समझते थे, देवकुलीश ने अपने लिए अपनी कोठरी को समाधि बना ली है।

५

आखिर वह प्यारी रात आ गई, जिसकी प्रतीक्षा में देवकुलीश को अपने जीवन का एक-एक क्षण, एक-एक वर्ष, एक-एक शताब्दी से भी लम्बा मालूम होता था।

आज सत्य के मुँह से अन्तिम परदा उठेगा। आज वह सत्य को नंगा, बेपरदा देखेगा, जिसे संसार के किसी नश्वर बेटे ने आज तक नहीं देखा। आज उसके जीवन की सबसे बड़ी साध पूरी हो जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधी रात को उसे विवेक और विज्ञान की देवी ने अन्तिम बार गोद में उठाया, और बादलों के पहाड़ पर ले जाकर खड़ा कर दिया!

देवकुलीश ने सत्य की ओर अधीर होकर देखा।

देवी ने कहा—"देवकुलीश! देख, इसका प्रकाश कैसा साफ, कैसा तेज है। आज तक तूने इसके जितने परदे उतारे हैं, वे इसके परदे न थे, तेरी बुद्धि के परदे थे! सत्य का एक ही परदा है, आगे बढ़ और उसे उतार दे। परन्तु अगर तू चाहे, तो अब भी लौट चल। मैं तुझे सातों समुद्र के मोती और दुनिया का सारा सोना देने को तैयार हूँ। तेरा गया हुआ स्वास्थ्य वापस मिल सकता है, तेरा उजड़ा हुआ जीवन लौटाया जा सकता है। मुझसे कह, तेरे सिर के सफेद बालों को छूकर फिर से काला कर दूँ। देवकुलीश! अब भी समय है! अपना संकल्प त्याग दे।"

मगर बहादुर सत्यार्थी ने देवी का कहना न माना, और आगे बढ़ा। उसका कलेजा धड़क रहा था, उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे, उसके हाथ काँप रहे थे, उसका सिर चकरा रहा था, मगर वह फिर भी आगे बढ़ा। उसने अपनी आत्मा और शरीर की सारी शक्तियाँ हाथों में जमा की और उन्हें फैलाकर सत्य का अन्तिम परदा फाड़ दिया।

"ओ परमात्मा!"

चारों ओर अन्धकार छा गया था; ऐसा भयानक अन्धकार जैसा इससे पूर्व देवकुलीश ने कभी न देखा था। उसने चिल्लाकर कहा—"देवी माता! यह क्या हो गया? मुझे कुछ दिखाई नहीं देता; वह जो परदे के पीछे था, कहाँ चला गया।"

देवी ने मधुर स्वर से कहा—"देवकुलीश! देवकुलीश!!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवकुलीश ने अँधेरे में टटोलते हुए कहा—"देवी ! मुझे बता, वह कहाँ है ? मैं कहाँ हूँ, तू कहाँ है ?"

देवी ने अपना हाथ धीरे से उसके कंधे पर रखा, और जवाब दिया—"देवकुलीश ! तेरी आँखें नंगे सत्य का दृश्य देखने में असमर्थ होने के कारण फूट गईं। अब संसार की कोई शक्ति ऐसी नहीं, जो उन्हें ठीक कर सके। मैंने तुझसे कहा था, वह विचार छोड़ दे; परन्तु तूने न माना, और अब तूने देख लिया कि जब मनुष्य सत्य को नंगा देखना चाहता है, तो क्या देखता है। सत्य परदों के अन्दर ही से देखा जा सकता है। जब उसका परदा उतार लिया जाता है, तो मनुष्य वह देखता है, जो कभी नहीं देख सकता।"

देवकुलीश बादलों के पहाड़ पर मुँह के बल गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा।

हजारों वर्ष बीत चुके हैं; मगर एथेंस के सत्यार्थी की खोज अभी तक जारी है। अगर कोई आदमी बादलों के पहाड़ की सुनसान घाटियों में जा सके, तो उसे देवकुलीश के रोने की आवाज अभी तक उसी तरह सुनाई देगी।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'

[सन् १८८९-१९४५]

अम्बाला छावनी में श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' का जन्म हुआ। कानपुर में अपने पितामह के साथ रह कर इन्होंने मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद कुछ असुविधाओं के कारण ये आगे न पढ़ सके तथापि अपने परिश्रम और अध्यवसाय से इन्होंने हिन्दी उर्दू, बँगला, संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया तथा इन भाषाओं के साहित्य से भी परिचय प्राप्त कर लिया।

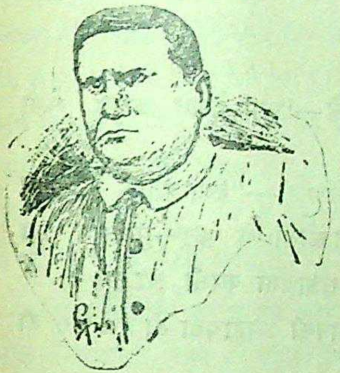

कौशिकजी का रचना-काल सन् १९१२ से आरम्भ होता है। इसी वर्ष इनकी प्रथम कहानी 'रक्षा बंधन' प्रकाशित हुई। यह कहानी हिन्दी-कथा-साहित्य विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। कौशिकजी मुख्यतः कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं, किन्तु इनकी प्रतिभा का प्रमाण अन्य क्षेत्रों में भी मिलता है। ये कहानीकार के साथ-साथ नाटककार, कवि और व्यंग-लेखक थे। इन्होंने प्रायः ३०० कहानियाँ लिखीं। इनकी कहानियों के पाँच संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'ताई' और 'रक्षाबंधन' इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। 'भिखारिणी' तथा 'माँ' इनके दो प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

आज से बीस-पच्चीस साल पहले 'चाँद' पत्रिका में बहुत दिनों तक विजयानन्द दुबे के नाम से 'दुबेजी की चिट्ठी' लिखकर इन्होंने हिन्दी जगत् में तहलका मचा दिया था। तभी से यह व्यंग-लेखक के रूप में भी प्रसिद्ध हो गये।

प्रेमचंद की तरह कौशिकजी भी आदर्शोन्मुख-यथार्थवाद के लेखक थे। इनकी कहानियों में चरित्र-चित्रण ही प्रधान होता है। भाषा और शैली की दृष्टि से प्रेमचंद के निकट थे। इनकी भाषा सरल और स्वाभाविक है। ये कथोपकथन-शैली के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार थे।

प्रस्तुत कहानी 'सभ्यता' में उपर्युक्त विशेषताओं का समावेश हुआ है। यह कहानी आधुनिक सभ्यता के बनावटीपन और खोखलेपन पर एक गहरा व्यंग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यता

पण्डित श्यामकान्त मुस्कुरा कर बोले—"आप देखते जाइए, अभी क्या गुल खिलते हैं !"

बाबू राधामोहन ने चिन्तित भाव से कहा—"क्या बताऊँ ! मैं तो इस झगड़े में पड़ता नहीं, परन्तु आप ही लोगों के कहने-सुनने से पड़ा हूँ। अतएव अब आपलोगों को मेरी सहायता करनी चाहिए।"

"इससे आप निश्चित रहिए। आपकी सहायता तो हम कर ही रहे हैं और बराबर करते रहेंगे।"

बाबू राधामोहन, एम० ए०, एल-एल० बी०, वकील की वयस् तीस वर्ष के लगभग होगी। लगभग पाँच वर्ष से वकालत कर रहे हैं, परन्तु चलती कम है। अपनी वकालत चलाने के लिए आपने बहुत कुछ प्रबन्ध कर रखे हैं। एक व्यक्ति जो समय पड़ने पर कोई भी काम कर सकता है, आपका दलाल है। इस व्यक्ति का नाम मनोहर गुरु है। एक अनाथ विधवा की कुछ भूमि जबरदस्ती हड़प कर इसने उसपर छोटा-सा मकान बनवा लिया है। इस व्यक्ति का व्यवसाय यह है कि अपने कुछ चेले-चाँटों की सहायता से मार-पीट, फौजदारी इत्यादि करना और फिर उसे मुकदमे का रूप देकर या तो पुलिस को रिश्वत दिलाकर और स्वयं भी कुछ खाकर मामले को रफा-दफा कर देना अथवा यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालत जाने की नौबत आ गई तो वकील साहब के पास ले आना। अपने महल्ले या आस-पास कहीं जरा-सा भी झगड़ा-फसाद हुआ नहीं कि मनोहर गुरु जा धमके और झट पंच बन गये। परन्तु पंच बनकर मामला शान्त करना इन्होंने सीखा ही नहीं। दोनों पार्टियों को अलग-अलग पट्टी पढ़ाकर छोटे-से-छोटे मामले को यह इतना तूल दे देते कि अदालत लाने की नौबत आ ही जाती है। संक्षेप में, मनोहर गुरु सब गुण के पूरे हैं! इनके चंगुल में फँसकर आदमी बिना कुछ भेंट चढ़ाये बच ही नहीं सकता। वकील साहब की दलाली इस शान से करते हैं कि किसी मुकदमे में यदि वकील साहब को दस रुपये दिलवाते हैं तो स्वयं पन्द्रह खा जाते हैं।

म्युनिसिपेलिटी का चुनाव आने पर मनोहर गुरु वकील साहब से बोले—"सरकार, आप म्युनिसिपेलिटी के लिए क्यों नहीं खड़े होते?"

वकील साहब बोले—"भाई, खड़े तो तब हों जब लोग हमें वोट दें।"

"अरे सरकार, आप खड़े तो हो जायँ, वोट दिलवाना हमारा काम है। आपको और वोट न मिले! यह कैसे हो सकता है। हाँ, हजार-दो-हजार खर्चा जरूर है।"

खर्च करने को तो हम तैयार हैं; परन्तु सफलता की आशा हो तब। मेम्बरी मिल जाय तो फिर कहना ही क्या है, वकालत भी चमक उठे और आमदनी के दूसरे द्वार भी पैदा हो जायँ।"

"तो फिर राम का नाम लेकर इस दफा आप खड़े हो जायँ, मेम्बरी दिलवाने का हमारा जिम्मा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पूरी कोशिश करोगे ?"

"जान लड़ा देंगे बाबूजी, आप खड़े तो हो जायँ !"

इस प्रकार की पट्टी पढ़ाकर वकील साहब को मनोहर गुरु ने तैयार कर लिया।

अब आजकल वकील साहब की ओर से बड़े जोरों की कनवासिंग चल रही है। पण्डित श्यामाकान्त वकील साहब के मित्र हैं। यह एक सम्पन्न व्यक्ति हैं, जमींदार हैं, शहर में भी काफी जायदाद है, प्रभावशाली भी हैं। यह वकील साहब की सहायता कर रहे हैं। वकील साहब के विरोधी, मेम्बरी के उम्मीदवार पण्डित ज्वाला प्रसाद शर्मा हैं। यह कपड़े के एक बड़े व्यापारी हैं, धनाढ्य आदमी हैं इनका लोगों पर काफी प्रभाव है। और अधिकांश को यह आशा है कि जीत शर्माजी की ही होगी……।

(२)

वकील साहब अपने चुनाव दफ्तर में बैठे पण्डित श्यामाकान्त को प्रतीक्षा कर रहे थे। दफ्तर में चार-पाँच व्यक्ति वोटर-लिस्ट ठीक करने में लगे थे। मनोहर गुरु भी मौजूद थे। मनोहर गुरु कह रहे थे—"अब कुछ परचेबाजी भी होनी चाहिए; बिना परचेबाजी के काम नहीं चलेगा।"

"हाँ, जरा पण्डित जी आ जायँ, उनसे भी सलाह कर लें।"

"शर्माजी की तीन-चार पोलें मालूम हुई हैं।"

"कौन-कौन सी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक तो वह शराब पीते हैं। आचरण भी दुरुस्त नहीं है। विलायती कपड़े का व्यापार करते ही हैं।"

इसी समय पण्डित श्यामाकान्त आ गये। वकील साहब ने उठकर उनका स्वागत किया। बैठने पर मनोहर गुरु पण्डितजी से बोले—"अब कुछ परचेबाजी भी होनी चाहिए, पण्डित जी !"

"हाँ, हाँ, ! वह तो होगी ही।"

मनोहर गुरु ने शर्मा जी की पोलें पण्डित जी को बताईं।

पण्डित जी बोले—"ठीक है। और कुछ फर्जी बातें भी लिख दी जायगी। एक विधवा की रकम, उसने अमानत शर्मा जी के यहाँ जमा की थी, साफ डकार गये। इसी तरह की चार-छः बातें और लिख दी जायँगी। भाई, यह तो चुनाव है इसमें तो सब पैंतरे खेलने पड़ते हैं।"

"सो तो हुई है। इसमें परचेबाजी बहुत काम देती है। झूठ-सच कुछ भी हो, छापे जाओ ! अपने आप सफाई देते घूमेंगे।"

"अच्छा, जरा आपकी तैयारी देखूँ।"

पण्डित जी को वोटर-लिस्टें दिखाई गईं। आध घंटे में पण्डित जी सब मुआयना करके बोले—"कार्य तो सब ठीक हो रहा है। बस, अब कनवासिंग होनी चाहिए।"

"तो जब से कहिए, शुरू की जाय।"

"जब से क्या, आज से ही श्रीगणेश कीजिए—शुभस्य शीघ्रम् ? आज दिन भी अच्छा है। चाहे थोड़ी ही देर घूमकर लौट आइएगा, परन्तु आरम्भ हो जाना चाहिए।"

"हाँ, हाँ ! क्या हर्ज है।" पण्डित जी बोले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील साहब मनोहर गुरु से बोले—"तो गुरु! कुछ आदमी और बुला लो। दस-बारह आदमी तो हो जायँ।"

"आदमी अभी लीजिए—आदमियों की क्या कमी है!"

इतना कह कर मनोहर गुरु चले गये।

"गुरु बेचारे बड़ी सहायता कर रहे हैं।" वकील साहब बोले।

"काम का आदमी है।" पण्डित जी ने कहा।

बीस मिनट के अन्दर मनोहर गुरु आठ-दस आदमी ले आये और बोले—"अब चलिए, देर न कीजिए। जय गणेश!"

सब लोग चले। पहले एक मकान पर पहुँचे। मकान मालिक को आवाज दी। उसके आने पर मनोहर गुरु उससे बोले—"यह वकील साहब वोट के लिए आये हैं। बोलो, क्या कहते हो?"

वह बोला—"कहना क्या है गुरु, जैसा तुम्हारा हुक्म होगा वह होगा। तुम्हारे खिलाफ थोड़े ही जा सकते हैं।"

"देखो भाई, बात जो कहना पक्की कहना। ऐसा न हो कि वादा हम से कर लो—चले दूसरी तरफ जाओ।"

"यह ऐसे आदमी नहीं है। जितनी बात कह देंगे पत्थर की लकीर है।"

एक व्यक्ति लिस्ट लिये साथ था। वकील साहब ने उससे कहा—"निशान लगाओ—पत्र में।" इसके पश्चात् आगे बढ़े। दूसरे मकान के आदमी ने कहा—"हम जी से तो वकील साहब को ही चाहते हैं, पर शर्मा जी की तरफ से हम पर बड़ा दबाव पड़ रहा है।"

"देखो भाई, यह सार्वजनिक काम है। इसमें किसी का जोर दबाव नहीं मानना चाहिए।" पण्डित जी बोले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानोहर गुरु बोल उठे—"याद रखना समय पर हमी काम आयँगे। नदी में रह कर मगर से बैर ठीक नहीं।"

"सो तो हम समझते हैं गुरु! और हम हजार हाथ वकील साहब को ही वोट देते। लेकिन ऊपर से हम शर्म्मा जी को भी दम-दिलासा देते रहेंगे।"

खूब! इसमें हर्ज नहीं है। यह तो चाहिए ही। कहते उनसे रहो, मगर समय पर काम हमारा करो। तो पक्की बात है न?"

"हाँ, पक्की ही समझिए।"

"समझिए-वमझिए की बात गलत है, पक्की बात कहो।"

"हाँ, हाँ, पक्की ही बात है।"

"शाबाश! लिखो पत्त में।"

आगे बढ़े। तीसरे मकान के एक आदमी ने कहा—"हम तो साहब शर्म्मा जी से वादा कर चुके हैं।"

"ऐं! यह कैसी बात?" मनोहर गुरु बोले।

"अब जैसी समझिए।"

"तुम हमको जानते हो?"

"हाँ, जानते क्यों नहीं हैं।"

"फिर भी शर्म्मा जी की तरफ जा रहे हो!"

"क्या करें, मजबूरी है।"

"मजबूरी-वजबूरी मैं कुछ नहीं जानता, तुम्हें वकील साहब को वोट देना पड़ेगा। वरना यह याद रक्खो हमारा नाम मनोहर गुरु है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बड़ी दिक़्क़त की बात है। यह चुनाव क्या आता है, मुसीबत आ जाती है। उनका कहा न करें तो मुसीबत, आपकी न मानें तो मुसीबत !"

"देखो भाई, दोनों आदमियों में से एक को चुन लो। जो योग्य हो उसे चुनो—बस, यह ध्यान रक्खो। अपनी समझ से काम लो-किसी के कहने में मत आओ।" पण्डित जी ने कहा।

"अपनी समझ से काम लेने पायें तब तो काम लें। आप धमकाते हैं, वह भी धमकाते हैं। अब बताइए हमारी समझ क्या काम दे ?"

"आखिर तुम्हारा मन किधर जाता है ?"

"हम तो शर्म्मा जी से वादा कर चुके हैं—आपसे पहले ही बता दिया।"

"वादा कर लिया है तो कोई तमस्सुक लिख दिया है ! चुनाव में वादों का कोई मूल्य नहीं होता।" वकील साहब बोले।

इस प्रकार कुछ देर उस व्यक्ति से हुज्जत होती रही। आखिर वह परेशान होकर बोला—"तो सच्ची बात यह है साहब कि हम किसी को वोट नहीं देंगे; न्यूट्रल हो जायँगे।"

"ख़ैर, ऐसा ही सही ! यह भी बुरा नहीं है। लेकिन ऐसा न हो कि उधर जाकर वोट दे आओ। ऐसा किया तो हमसे बुरा कोई नहीं।" मनोहर गुरु ने कहा।

"अरे साहब, हम उस दिन यहाँ रहेंगे ही नहीं; एक दिन पहले ही बाहर चले जायँगे। यहाँ रह के अपनी छीछालेदर करायँगे ?"

"यह ठीक है" वकील साहब बोले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् ये लोग आगे बढ़े। वह व्यक्ति एक अन्य व्यक्ति से बोला—"यह हाल है, देखा आपने? जबरदस्ती धमकी-घुड़की से वोट लिये जाते हैं। साथ में एक गुन्डा ले लिया—राजी से दो तो दो, नहीं तो गुँडा पीछे लगा दें। यह देशसेवा है। जब चुन जायँगे तो कहेंगे हम जनता के प्रतिनिधि हैं, जनता ने हमें चुनकर भेजा है।"

दूसरा व्यक्ति बोला—"हम तो कहते हैं भइया, कि वोट किसी को न दिया जाय—जायँ जनता के प्रतिनिधि बन कर। जनता को अपनी सच्ची राय देने का अवसर भी मिलता है?"

"अब देखिए? शर्मा जी के आदमी भी धमकाते हैं कि वोट न दिया तो अच्छा न होगा और यह तो आपके सामने ही कह गये। अब। ऐसी दशा में एक भला आदमी क्या करे?"

"एक बात हमारी समझ में नहीं आती भइया कि ये लोग इतना रुपया खर्च करके और परेशानी उठा कर जो जाते हैं तो क्यों जाते हैं?"

"हमारी और आपकी सेवा करने जाते हैं।"

"यह सेवा करने का ढंग तो हमारी समझ में नहीं आता। हम तो जनता का सच्चा प्रतिनिधि उसे समझते हैं जो जनता की प्रार्थना करने पर जाय, जिसे जनता अपनी इच्छा से, बिना किसी जोर-दबाव या लालच के, चुन कर भेजे।"

"अरे भइया, जनता की बातें! जनता की इच्छा मानता कौन है? यहाँ तो जनता मजबूर की जाती है। और अभी देखे जाओ, क्या-क्या होता है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भला जो लोग इस तरह जाते हैं वे जनता की सेवा क्या करेंगे! वहाँ भी अपना ही लाभ सोचेंगे।"

"और नहीं तो क्या उल्लू हैं, जो आपका लाभ सोचें? यह जो रुपया खर्च हो रहा है, यह हराम में थोड़े ही खर्च किया जा रहा है! सब ब्याज-सहित और उस पर भी मुनाफा दर मुनाफा सहित वसूल किया जायगा।"

"और अभी खुशामद करते हैं फिर बात भी न पूछेंगे!"

"अभी गली-गली घूम रहे हैं, फिर यदि कभी कोई कहेगा कि जरा हमारी गली की दशा चलकर देख लीजिए तो फुर्सत ही न मिलेगी।"

"तब तो हाकिम हो जायँगें न!"

"भगवान बचावे ऐसे हाकिम से। खामखाह एक स्वाँग बना रक्खा है। जब-जब यह चुनाव आता है तब-तब यही प्राणों का संकट रहता है।"

(३)

इसके पश्चात् पर्चेबाजी आरम्भ हुई। पहले बाबू राधामोहन की तरफ से एक पीला पर्चा निकला। जिसमें शर्म्मा जी की पोलें खोली गई थी और उनके आधार पर उन्हें बिल्कुल नालायक प्रमाणित किया गया था। दूसरे ही दिन शर्माजी की तरफ से लाल पर्चा निकला। इसमें बाबू राधामोहन के बाप-दादा की श्राद्ध की गई थी—दो सच्ची तो चार झूठी; यार लोगों को मजा आता था। कोई कहता—'अरे भइया, वह लाल पर्चा देखा? खूब लिखा है। वह पढ़ा कि राधामोहन बने हुए कायस्थ हैं, असल में जाति के मोची हैं? हम तो इनको कायस्थ समझे हुए थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधामोहन के एक पक्षपाती बोले—"कायस्थ तो हई हैं, खरे कायस्थ हैं। शर्म्मा जी बेचारे क्या मुँह लेकर बात करते हैं। अव्वल दर्जे का दगाबाज! न जाने कितने गरीबों की रकम मार-मार कर लखपति बने हैं। विलायती कपड़ा बेचें, विलायती पहनें। चले हैं देशसेवा करने। ऐसे रंगे सियार बोर्ड में पहुँच गये तो बोर्ड का भगवान ही मालिक है।"

"जी हाँ, बाबू राधामोहन पहुँचेंगे तो बड़ा यश करेंगे। मनोहर गुरु जैसे लोगों की बन आयगी। मनोहर गुरु जैसे गुंडे जिनके सलाहकार हों उनसे क्या आशा हो सकती है? गरीबों के गले कटेंगे।"

"तुम तो शर्म्मा जी जैसे कहोगे ही, तुम्हारी तो उनकी बदौलत रोटियाँ चलती है।"

इतना कहते ही गाली-गलौज होने लगा और हाथापाई पर नौबत आ गई। लोगों ने बीच में पड़कर मामला शान्त किया।

एक वृद्ध सज्जन बोले—"यह चुनाव ससुरा क्या आता है, बला आ जाती है। बरसों के मेल-मिलाप, मुहब्बत सब खतम हो जाते हैं।"

एक व्यक्ति बोल उठा—"दादा, अगली बार तुम भी खड़े होना।"

"भइया, मेम्बरी की बातें न करो। हम तो ऐसी मेम्बरी पर लानत भेजते हैं। रुपया खर्च करो, गली-गली मारे फिरो, जिनसे बात करने का जी न चाहे उनकी खुशामद करो, बाप-दादा की पोलें खुलवाओ तब कहीं जाकर मेम्बरी मिले।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेम्बरी मिल जायगी तो मजा नहीं करोगे ?"

"दया करो—ऐसी छीछालेदर कराकर हमें मजा नहीं करना है और वहाँ मजा क्या है, यही हमारी समझ में नहीं आता है।"

"मजा यह है कि रियासतदार बन जाओगे, दो-चार मकान खड़े हो जायँगे, बड़े-बड़े आदमियों से मेल हो जायगा। किसी बड़े आदमी के यहाँ कोई काम-काज होगा तो बुलाये जाओगे, दावतें खाने को मिलेंगी। चार आदमी खुशामद में लगे रहेंगे, नाते-रिश्तेदारों को नौकरियाँ मिल जायँगी। ये थोड़े मजे हैं। मेम्बर बन गये तो सब मजा ही मजा है।"

"माफ करो। हमें ऐसा मजा नहीं चाहिए। हम बे-मजे ही भले हैं।"

लोगों में यह चर्चा थी। उधर कुछ निठल्ले दोनों ओर अमर हो गये थे। इनका काम यह था कि सबेरे से चुनाव दफ्तर में आ जाना, जल-पान करना, सिगरेट-पान उड़ाना और बढ़-बढ़कर बातें मारना।

बाबू राधामोहन के यहाँ ऐसे ही चार-पाँच निठल्ले जमा थे। एक कह रहा था—"वकील साहब। मुँह धुएँ हैं दुश्मन के। हमारा हरा पर्चा उनके लाल पर्चे के जवाब में निकला है। उससे उनकी हवा बिगड़ी हुई है। आज मैं वार्ड भर में घूमा हूँ। सब आपका ही दम भरते हैं। यह समझ लीजिए, रुपया में बारह आने तो हम अभी से जीत गये। अभी पाँच दिन बाकी हैं। पाँच दिनों में पूरे सोलह आने जीत हो जायगी। शर्म्मा जी की हवा गई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे साहब बोले—"आज बिन्दा खटिक से मेरी बातचीत हुई थी। वह तो पूरी तौर से हमारे माफिक है। वह अलानिया कहता था कि क्या मजाल हमारी तरफ का एक भी वोट शर्म्मा जी ले जायँ! लेकिन सरकार, वह एक बात और कहता था। उसके कुछ वोटरों को रुपये देने पड़ेंगे। मैं उसे बुला आया हूँ—आता ही होगा।"

मनोहर गुरु बोल उठे—'हाँ! हाँ! रुपये भी दिये जायँगे। यह चुनाव तो जीतना है, रुपया चाहे जितना खर्च हो जाय। रुपये से, खुशामद से और आखिरी दर्जे फौजदारी से, जैसे भी बनेगा चुनाव जीतेंगे—छोड़ेंगे नहीं।

थोड़ी देर में बिन्दा खटिक आ पहुँचा। मनोहर गुरु ने पूछा—"कहो, बिन्दा भाई" क्या हालचाल है?"

"हालचाल सब ठीक है गुरु! आपकी सींक खड़ी है। कल शर्म्मा जी के आदमी आये थे। मैंने साफ-साफ कह दिया कि इधर के सब वोट बाबू राधामोहन के लिए हैं; आप यहाँ बेकार चक्कर काटते हैं। दो एक आदमियों को उन्होंने धमकाने की भी कोशिश की। लेकिन हमारे आदमी इन गीदड़-भड़कियों में कब आने लगे। चले गये अपना सा मुँह लेकर। भला बताइए! हमें धमकी दिखाते हैं।"

"शाबाश! ऐसे ही डटे रहना।" मनोहर गुरु ने कहा।

"सो तो आप निसाखातिर रहिए। उधर कोई चू नहीं कर सकता है। लेकिन एक बात है गुरु!"

"बोलो!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ रुपया भी देना पड़ेगा। मुझे तो चाहिए नहीं। मेरे लिए तो एक पैसा भी हराम है। लेकिन और लोगों को देना ही पड़ेगा।"

वकील साहब बोल उठे—"हाँ! हाँ! दे दिया जायगा। बोलो कितना चाहिए?"

"बस, एक सैकड़े में काम हो जायगा। पचीस आदमी हैं उन्हें पाँच-पाँच रुपये देने पड़ेंगे।"

"तो ले जाना। इसमें कौन-सी बात है।"

मनोहर गुरु बोल उठे—लेकिन एक बात का ख्याल रखना बिन्दा।"

"हाँ! हाँ बताइए!"

"छः तारीख को सवेरे वोट पड़ेंगे न—सो पाँच की रात को सब वोटर यहाँ ले आना। हम रात भर उन्हें अपने ही यहाँ रक्खेंगे।"

"अपने यहाँ रख लेना। वे चाहे जहाँ रहें यह समझ लीजिए आपके खिलाफ नहीं जायँगे।"

"खिलाफ जाने की बात नहीं है भइया। पहले उन्हीं के वोट डलवा देंगे। यहाँ रहेंगे तो एकदम पहले उन्हीं को भेज देंगे।"

"हाँ! हाँ! ऐसा ही हो जायगा। उन्हें तो और अच्छा है। यहाँ रहेंगे तो खायँगे भी यहीं।"

"गले बराबर। खाने को खूब खायँ। खाने की क्या कमी है। यह तुमने क्या बात कही।"

"अरे गुरु, मैं तो हँसी करता हूँ। आप ही का खाते हैं कि किसी दूसरे का।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सो बात नहीं। मैं हँसी नहीं करता। उस दिन सबका खाना यहीं होगा। काम हमारा करेंगे तो खायँगे कहाँ?"

"अच्छा तो चलूँ, आप इतमीनान रखिए। हाँ, तो रुपये मिलेंगे सरकार?"

"हाँ! हाँ! ले जाओ।"

वकील साहब ने सौ रुपये दे दिये।

बिन्दा के चले जाने पर मनोहर गुरु ने कहा—"क्यों सरकार, मैंने क्या बढ़िया तरकीब सोची? जब रुपये देते हैं तो उन्हें अपने कब्जे में भी कर लेना चाहिए। खाने-पीने में दस-पाँच और खर्च हो जायँगे, लेकिन इतमीनान तो रहेगा।"

"बड़ा अच्छा किया।"

"अब तो यह चुनाव जीतना है।"

"सो तो जीता-जिताया धरा है गुरु! मेरी बात लिख रखिए।" एक निठल्ला बोला।

"जीत तो हुई है।"

"अच्छा सरकार, अब तो इस समय कोई काम नहीं है। जायँ खाना-वना खा आयँ।"

"जाओगे कहाँ? बैठो भी, अभी जरा चलना होगा। एक जगह दस वोट हैं। वे जरा आगा-पीछा कर रहे हैं, उन्हें रास्ते पर लाना है। खाना यहीं खा लो। सरकार! इन्हें खाना यहीं खिला दूँ—घर जायँगे तो देर हो जायगी।"

"हाँ। खिला दो। इसमें पूछने की कौन बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरन्त नौकर को एक रुपये की पूड़ियाँ और आठ आने की मिठाई लाने का हुक्म दिया गया। यार लोग और चाहते ही क्या थे।

खा-पी चुकने पर मनोहर गुरु बोले—"तो अब चलना चाहिए। सरकार, एक पचास रुपये और दे दीजिए। कोशिश तो मैं यही करूँगा कि पैसा भी न देना पड़े, परन्तु यदि काम न चला तो देने ही पड़ेंगे।

"हाँ! हाँ! यह लो।"

यह कह कर वकील साहब ने पचास के नोट मनोहर गुरु के हवाले किये। वकील साहब पास का रुपया खर्च करने के पश्चात् पाँच सौ रुपये कर्ज ले चुके थे और अभी पाँच सौ रुपये और लेने का इरादा कर रहे थे।

दूसरे दिन वोटिंग हुई। दोनों ओर से खूब जाली वोट पड़े। दोनों ओर के कई आदमी पकड़े गये। सपोर्टरों में गाली—गलौज का तो कहना ही क्या--लाठी चलते-चलते बची।

जब वोट गिने गये तो बाबू राधामोहन के एक सौ चालीस वोट अधिक निकले। अतएव बाबू राधामोहन मेम्बर घोषित किये गये। उस दिन बाबू साहब का जुलूस निकाला गया खूब खुशी मनाई गई।

स्थानीय समाचारपत्रों ने अपने कालम रँगे। बाबू राधामोहन को जनता का सच्चा प्रतिनिधि बताते हुए उन्हें उनकी विजय पर बधाई दी गई और यह आशा प्रकट की गई कि वह अपनी सेवा से जनता को निहाल कर देंगे।

लेकिन जनता को यह आश्चर्य था कि बाबू राधामोहन कैसे जीत गये; क्योंकि अधिकांश जनता शर्माजी के ही पक्ष में थी। परन्तु करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ? जो बोर्ड में पहुँच जाता है वह जनता का ही प्रतिनिधि समझा जाता है।

इस प्रकार खोपड़ी पर कर्ज का बोझ लाद कर दुनिया भर के कलंक और अपमानजनक बातें सहकर बाबू राधामोहन को मेम्बरी मिली। सन्तोष की बात इतनी ही थी कि बोर्ड की कुर्सी पर बैठते ही बाबू साहब सब कुछ भूल गये। अभीष्ट सिद्ध करने में जो कुछ भी करना पड़े करे और कार्य हो जाने पर सब कुछ भूल जाय। इसी का नाम तो सभ्यता है।

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवपूजन सहाय

[१८९३—]

शाहाबाद जिले के एक गाँव में श्री शिवपूजन सहाय का जन्म हुआ। इनकी शिक्षा-दीक्षा उल्लेख्य नहीं; किन्तु प्रतिभा और योग्यता असाधारण है।

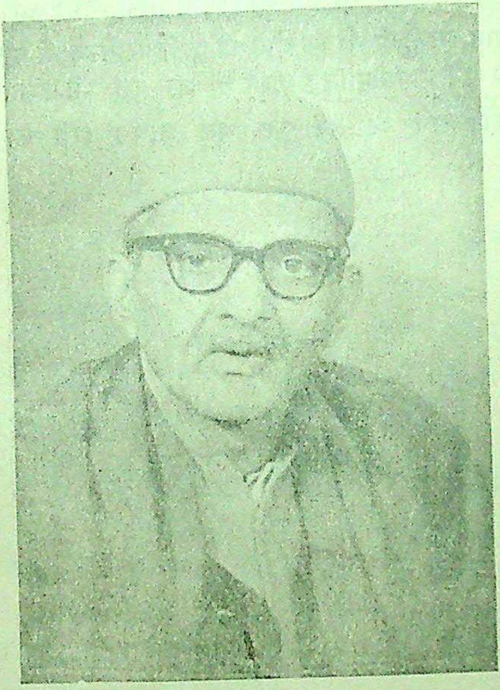

इनकी पहली कहानी 'हठभगत जी' सन् १९११ में निकली। इसी वर्ष 'अनूठी अँगूठी' नामक कहानी भी प्रकाशित हुई। हिन्दी-कथा-साहित्य के विकास में प्रेमचंद, प्रसाद, कौशिक की कहानियों की भाँति 'हठ भगत जी' का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनकी कहानियों का एक संग्रह 'विभूति' नाम से प्रकाशि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुका है। इनका 'देहाती दुनिया' नामक एक उपन्यास भी प्रकाशित हो चुका है। ये दोनों पुस्तकें समस्त हिन्दी-संसार द्वारा समादृत हैं। इनके अलावा इनकी कई छोटी-मोटी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और अनेक अप्रकाशित पड़ी हैं। अब इनकी समस्त रचनाओं को 'शिवपूजन-ग्रन्थावली' के नाम से बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् खंडशः प्रकाशित कर रही है। एक खंड प्रकाशित भी हो चुका है।

शिवपूजन जी वर्तमान हिन्दी-साहित्य के गिने-चुने महारथियों में हैं। ये हिन्दी-जगत् में 'आचार्य' के रूप में सम्मानित हैं। दो वर्ष पूर्व भारत के राष्ट्रपति ने भी इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। इन्होंने अपना सारा जीवन साहित्य और साहित्यिकों के निर्माण में लगा दिया। इन्हें हिन्दी-साहित्य का जीता-जागता कोष कहा जाता है।

इनकी कहानियाँ मुख्यतः यथार्थवाद पर आधारित हैं। इनकी अनेक कहानियों में ओज, त्याग और आदर्श का अनूठा समन्वय हुआ है। भाषा पर इनका असाधारण अधिकार है। शैली की दृष्टि से हिन्दी में शिवपूजन जी अकेले हैं। इनके जैसा देहाती भाषा, ग्राम्य अभिव्यक्तियाँ, अछूती उपमाओं एवं मुहावरों का सफल प्रयोग हिन्दी के किसी अन्य लेखक ने नहीं किया है।

कथाकार, उपन्यासकार आदि के अतिरिक्त ये एक महान् सम्पादक हैं। इन्होंने 'मतवाला', 'माधुरी', 'जागरण', 'बालक', 'हिमालय' और 'साहित्य'-जैसे पत्रों तथा 'द्विवेदी-अभिनन्दन-ग्रन्थ', 'राजेन्द्र-अभिनन्दन-ग्रन्थ'-जैसे विशाल ग्रन्थों का सम्पादन कर श्रम और कला के दुर्लभ समन्वय का उत्कृष्ट दृष्टान्त प्रस्तुत किया है।

ये लगभग सात-आठ साल तक राजेन्द्र कालेज, छपरा में हिन्दी के प्राध्यापक थे। इसके बाद लगभग इतने ही समय तक बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के सम्मानित मंत्री रहे। इन दिनों बदरीनाथ सर्व-भाषा-महाविद्यालय, पटना के प्राचार्य हैं।

प्रस्तुत कहानी में आर्थिक अभाव से उत्पन्न परिस्थितियों का सजीव चित्रण किया गया है।

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी का प्लाट

मैं कहानी लेखक नहीं हूँ। कहानी लिखने-योग्य प्रतिभा मुझमें नहीं है। कहानी-लेखक को स्वभावतः कला-मर्मज्ञ होना चाहि और मैं साधारण कलाविद् भी नहीं हूँ। किन्तु कुशल कहानी-लेख के लिये एक प्लाट पा गया हूँ। आशा है, इस 'प्लाट' पर वे अप भड़कीली इमारत खड़ी कर लेंगे।

❀ ❀ ❀ ❀

मेरे गाँव के पास एक छोटा-सा गाँव है! गाँव का नाम ब गँवारू है, सुनकर आप घिनायँगे। यहाँ एक बूढ़े मुंशीजी रहते थे- अब वे इस संसार में नहीं हैं! उनका नाम भी विचित्र ही था- 'अनमिल आखर अर्थ न जापू'—इसलिए उसे साहित्यिकों के सा बताने से हिचकता हूँ! खैर, उनकी एक पुत्री थी, जो अबतक मौ है। उसका नाम एक—जाने दीजिए, सुनकर क्या कीजिएगा? बताऊँगा भी नहीं। हाँ, चूँकि उसके संबन्ध की बातें बताने में सहूलियत होगी, इसलिए उसका एक कल्पित नाम रख लेना जरूरी मान लीजए उसका नाम है 'भगजोगनी'। दिहात की घटना इसलिए दिहाती नाम ही अच्छा होगा। खैर, आगे बढ़िए—

मुंशीजी के बड़े भाई पुलिस-दारोगा थे—उस जमाने में, अँग्रेजी जाननेवालों की संख्या उतनी ही थी, जितनी आज धर्म-श के मर्म जाननेवालों की है। इसलिये उर्दू-दाँ लोग ही ऊँचे ओहदे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। दारोगाजी ने आठ-दस पैसे का करीमा खालिकबारी पढ़कर जितने रुपये कमाये थे, उतना आज कालेज और अदालत की लाइब्रेरियाँ चाटकर वकील होनेवाले भी नहीं कमाते।

लेकिन दारोगाजी ने जो कुछ कमाया, अपनी जिन्दगी में ही फूँक-ताप डाला। उनके मरने के बाद सिर्फ उनकी एक घोड़ी बची थी, जो थी तो महज सात रुपये की, मगर कान काटती थी तुर्की घोड़ों के—कम्बख्त बारूद की पुड़िया थी! बड़े-बड़े अँग्रेज अफसर उस पर दाँत गड़ाये रह गये, मगर दारोगाजी ने सबको निवुआ-नोन चटा दिया। इसी घोड़ी, की बदौलत उनकी तरक्की रुकी रह गई, लेकिन आखिरी दम तक वे अफसरों के चपले में न आये। हर तरह से काबिल, मेहनती, ईमानदार, चालाक, दिलेर और मुस्तैद आदमी होने हुए भी दारोगा-के-दारोगा ही रह गये—सिर्फ घोड़ी की मुहब्बत से।

किन्तु, घोड़ी ने भी उनकी इस मुहब्बत का अच्छा नतीजा दिखाया। उनके मरने के बाद खूब धूमधाम से उनका श्राद्ध करा दिया। अगर कहीं घोड़ी को भी बेच खाये होते तो, उनके नाम पर एक ब्राह्मण भी न जीमता। एक गोरे अफसर के हाथ खासी रकम पर घोड़ी को ही बेचकर मुंशीजी अपने बड़े भाई से उऋण हुए।

दारोगाजी के जमाने में मुंशीजी ने खूब घी के दीये जलाये थे। गाँजे में बढ़िया-से-बढ़िया इत्र मिलाकर पीते थे। चिलम कभी ठंडी न होने पाती थी। एक जून बत्तीस बटेर और चौदह चपातियाँ उड़ा जाते थे। हर साल एक नया जल्सा रंग लाया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु, जब बढ़िया बह गई तब चारों ओर उजाड़ नजर आने लगा। दारोगाजी के मरते ही सारी अमीरी घुसड़ गई। चिलम के साथ-साथ चूल्हा-चक्की भी ठंढी हो गई। जो जीभ एक दिन बटेरों का शोरबा सुड़कती थी, वह अब सराह-सराह कर मटर की सत्तू सरपोटने लगी; चपातियाँ चबानेवाले दाँत अब चन्द चने चबाकर दिन गुजारने लगे। लोग साफ कहने लग गये—थानेदारी की कमाई और फूस का तापना दोनों बराबर है।

अब मुंशीजी को गाँव-जवार के लोग भी अपनी नजरों से उतारने लगे। जो मुंशीजी चुल्लू-के-चुल्लू इत्र लेकर अपनी पोशाक में मला करते थे, उन्हीं को अब अपनी रूखी-सूखी देह में लगाने के लिए चुल्लू भर कड़वा तेल मिलना भी मुहाल हो गया। शायद किस्मत की फटी चादर के कोई रफूगर भी नहीं हैं।

लेकिन जरा किस्मत की दोहरी मार तो देखिये। दारोगाजी के जमाने में मुंशीजी के चार-पाँच लड़के हुए, पर सब-के-सब सुबह के चिराग हो गये। जब बेचारे की पाँचों उँगलियाँ घी में थीं, तब तो कोई खानेवाला न रहा, और अब, जब दोनों टाँगें दरिद्रता की दलदल में आ फँसीं और ऊपर से बुढ़ापा भी कंधे दबाने लगा, तब कोढ़ में खाज की तरह एक लड़की पैदा हो गई। और, तारीफ यह कि मुंशीजी की बदकिस्मती भी दारोगाजी की घोड़ी से कुछ कम स्थावर नहीं थी।

सच पूछिये तो इस तिलक-दहेज के जमाने में लड़की पैदा करना ही बड़ी भारी मूर्खता है। चाहे लड़के वाले के पास एक धूर भी खेत न हो लेकिन लड़का अगर अँग्रेजी की एकाध परीक्षा भी पास कर गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, तो उसका मोल दो हजार हो गया, चाहे उसे दस रुपये की कलर्की भले ही नसीब न हो और, बनकर बिगड़े हुए घराने की तो और भी दुर्दशा है। सचमुच, अमीरी की कब्र पर पनपी हुई गरीबी की घास बड़ी जहरीली होती है।

"भगजोगनी" चूँकि मुंशीजी की गरीबी में पैदा हुई, और जनमते ही माँ के दूध से वंचित होकर 'टुअर' कहलाने लगी, इसलिए अभागिनी तो अजहद थी—इसमें शक नहीं; पर सुन्दरता में वह अँधेरे घर का दीपक थी। आजतक वैसी सुघर लड़की किसी ने कभी कहीं देखी न थी।

अभाग्यवश मैंने उसे देखा था। जिस दिन पहले-पहल उसे देखा, वह करीब ग्यारह-बारह वर्ष की थी। पर एक ओर उसकी अनोखी सुघराई और दूसरी ओर उसकी दर्दनाक गरीबी देखकर, सच कहता हूँ—कलेजा काँप गया! यदि कोई भावुक कहानी-लेखक या सहृदय कवि उसे देख लेता, तो उसकी लेखनी से अनायास करुणा की धारा फूट निकलती। किन्तु मेरी लेखनी में इतना जोर नहीं है कि उसकी गरीबी के भयावने चित्र को हृदय-पट से उतारकर कागज के इस कोमल 'दल' पर रख सके। और, सच्ची घटना होने के कारण; केवल प्रभाव-शाली बनाने के लिए मुझसे भड़कीली भाषा में लिखते भी नहीं बनता। भाषा में गरीबी को ठीक-ठीक चित्रित करने की शक्ति नहीं होती, भले ही वह राजमहलों की ऐश्वर्य-लीला और विलास-वैभव वर्णन करने में समर्थ हो।

आह! बेचारी उस उम्र में भी कमर में सिर्फ एक पतला सा चिथड़ा लपेटे हुए थी, जो मुश्किल से उसकी लज्जा ढकने में समर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उसके सिर के बाल, तेल के बिना, बुरी तरह उलझ-बिखरकर बड़े डरावने हो गये थे। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में एक अजीब ढंग की करुण-कातर चितवन थी। दरिद्रता-राक्षसी ने सुन्दरता सुकुमारी का गला टीप दिया था।

कहते हैं, प्राकृत सुन्दरता के लिए कृत्रिम शृंगार की जरूरत नहीं होती, क्योंकि जंगल में पेड़ की छाल और फूलपत्तियों से सजकर शकुन्तला जैसी सुन्दरी मालूम होती थी, वैसे दुष्यन्त के राजमहल में सोलहों सिंगार करके भी वह कभी न फबी। किन्तु शकुन्तला तो चिन्ता और कष्ट के वायुमंडल में नहीं पली थी। उसके कानों में उदर-दैत्य का कर्कश हाहाकार कभी न गूँजा था। वह शान्ति और सन्तोष की गोद में पलकर सयानी हुई थी, और तभी उसके लिए महाकवि की शैवाल-जाल-लिप्त-कमलिनी वाली उपमा उपयुक्त हो सकी। पर भगजोगनी' तो गरीबी की चक्की में पिसी हुई थी, भला उसका सौन्दर्य कब खिल सकता था! वह तो दाने-दाने को तरसती रहती थी-एक चित्ता कपड़े के लिए भी मुहताज थी, सिर में लगाने के लिए अलसी का तेल भी सपना हो रहा था—महीने के एक दिन भी भर-पेट अन्न के लाले पड़े थे। भला हड्डियों के खँडहर में सौन्दर्य-देवता कैसे टिके रहते?

उफ! उस दिन मुंशीजी जब रो-रोकर अपना दुखड़ा सुनाने लगे, तो कलेजा टूक-टूक हो गया। कहने लगे—"क्या कहूँ बाबू साहब, पिछले दिन जब याद आते हैं, तो गैश आ जाता है। यह गरीबी की मार इस लड़की की वजह से और भी अखरती है। देखिए, इसके लि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाल कैसे खुश्क और गोरख-धन्धा हो रहे हैं। घर में इसकी माँ होती तो कम-से-कम सिर तो जूँओं का अड्डा न होता। मेरी आँखों की जोत अब ऐसी मन्द पड़ गई कि जूँएँ सूझतीं नहीं। और तेल तो एक बूँद भी मयस्सर नहीं। अगर अपने घर में तेल होता, तो दूसरे के घर जाकर भी कंघी-चोटी करा लेती, सिर पर चिड़ियों का घोंसला तो न बनता। आप तो जानते हैं, यह छोटा-सा गाँव है, यहाँ कभी साल-छमाहे में किसी के घर बच्चा पैदा होता है, तब कहीं इसके रूखे-सूखे बालों के नसीब जगते हैं। गाँव के लड़के अपने-अपने घर भर-पेट खाकर जो झोलियों में चबेना लेकर खाते हुए घर से निकलते हैं; तो यह उनकी बाट जोहती रहती है—उनके पीछे-पीछे लगी फिरती है, तो भी मुश्किल से दिन में एक-दो मुट्ठी चबेना मिल पाता है। खाने-पीने के समय किसी के घर पहुँच जाती है, तो इसकी डीठ लगने के भय से घरवालियाँ दुरदुराने लगती हैं! कहाँ तक मुसीबत का बयान करूँ भाई साहब, किसी की दी हुई मुट्ठीभर भीख लेने के लिए इसके तन पर फटा आँचल भी तो नहीं है। इसकी छोटी उँगलियों में ही जो कुछ अट जाता है उसीसे किसी तरह पेट की जलन बुझा लेती है। कभी-कभी एक-आध फँका चना-चबेना मेरे लिए भी ले आती है; उस समय हृदय दो टूक हो जाता है। किसी दिन, दिन-दिन भर घर-घर घूमकर जब शाम को मेरे पास आकर धीमी आवाज से कहती है कि बाबूजी, भूख लगी है—कुछ हो तो खाने को दो, उस वक्त, आपसे ईमानन कहता हूँ, जी चाहता है कि गलफाँसी लगाकर मर जाऊँ या किसी कुएँ-तालाब में डूब मरूँ। मगर फिर सोचता हूँ कि मेरे सिवा इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोज-खबर लेनेवाला इस दुनिया में अब है ही कौन ? आज अगर इसकी माँ भी जिन्दा होती, तो कूट-पीसकर इसके लिए मुट्ठी-भर चून जुटाती; किसी कदर परवरिश कर ही ले जाती, अगर कहीं आज मेरे बड़े भाई साहब होते तो गुलाब के फूल-सी ऐसी लड़की को हथेली का फूल बनाये रखते, जरूर ही किसी रायबहादुर के घर में इसकी शादी करते। मैं भी उनकी अन्धाधुन्ध कमाई पर ऐसी बेफिक्री से दिन गुजारता था कि आगे आनेवाले इन बुरे दिनों की जरा भी खबर न रही। वे भी ऐसे खर्चीले थे कि अपने कफन-काठी के लिए भी एक खरमुहरा न छोड़ गये—अपनी जिन्दगी में ही एक-एक चप्पा जमीन बेच खाई-गाँव-भर से ऐसी अदावत बढ़ाई कि आज मेरी इस दुर्गति पर भी कोई रहम करनेवाला नहीं। उलटे सब लोग आवाजें कसते हैं। इस लड़की के लिए आस-पास के सभी जवारी-भाइयों के यहाँ मैंने पचासों फेरे लगाये, दाँत दिखाये, हाथ जोड़ कर विनती की, पैरों पड़ा—यहाँ तक कि बेहया होकर कह डाला कि बड़े-बड़े वकीलों, डिप्टियों और जमीन्दारों की चुनी-चुनाई लड़कियों में मेरी लड़की खड़ी करके देख लीजिये कि सबसे सुन्दर जँचती है या नहीं, अगर इसके जोड़ की एक भी लड़की कहीं निकल आये, तो इससे अपने लड़के की शादी मत कीजिए। किन्तु मुझे लाख गिड़गिड़ाने पर भी किसी भाई का दिल न पिघला। कोई यह कहकर टाल देता कि लड़के की माँ ऐसे घराने में शादी करने से इनकार करती है, जिसमें न सास है न साला और न बरात की खातिरदारी करने की हैसियत। कोई कहता कि गरीब घर की लड़की चटोर और कंजूस होती है, हमारा खानदान बिगड़ जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादातर लोग यही कहते मिले कि हमारे लड़के को इतना तिलक-दहेज मिल रहा है, तोभी हम शादी नहीं कर रहे हैं, फिर बिना तिलक के तो बात भी करना नहीं चाहते। इसी तरह, जितने मुँह उतनी ही बातें सुनने में आईं। दिनों का फेर ऐसा है कि जिसका मुँह न देखना चाहिए उसकी भी खुशामद करनी पड़ी। महज मामूली हैसियत वालों को भी पाँच सौ और एक हजार तिलक-दहेज फरमाते देखकर जी कुढ़ जाता है—गुस्सा चढ़ आता है। मगर गरीबी ने तो पंख तोड़ दिया है, तड़फड़ा भी नहीं सकता। जो लोग मोल-भाव करके लड़के की बिक्री करते हैं, वे भले आदमी समझे जाते हैं; और कोई गरीब बेचारा अगर उसी तरह मोल-भाव करके लड़की को बेचता है, तो वह कमीना कहा जाता है। मैं अगर आज इसे बेचना चाहता, तो इतनी काफी रकम ऐंठ सकता था कि कम-से-कम मेरी जिन्दगी तो जरूर ही आराम से कट जाती। लेकिन जीते जी हरगिज एक मक्खी भी न लूँगा। चाहे यह क्वाँरी रहे या सयानी होकर मेरा नाम हँसाए। अब अधिक क्या कहूँ बाबू साहब, अपनी ही करनी का नतीजा भोग रहा हूँ। मोतियाबिन्द, गठिया और दम्मा ने निकम्मा कर दिया है। अब मेरे पछतावे के आँसुओं में भी ईश्वर को पिघलाने का दम नहीं है। अगर सच पूछिए तो इस वक्त सिर्फ एक ही उम्मीद पर जान अटकी हुई है। एक साहब ने बहुत कहने-सुनने से इसके साथ शादी करने का वादा किया है। देखना है कि गाँव के खोटे लोग उन्हें भी भड़काते हैं, या मेरी झाँझरी नैया को पार लगाने देते हैं। लड़के की उम्र कुछ कड़ी जरूर है—इकतालिस-बयालिस साल की; मगर अब इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवा कोई चारा भी नहीं है। छाती पर पत्थर रखकर अपनी इस राज-कोकिला को........"

इसके बाद मुंशीजी का गला रुध गया—बहुत विलाप कर रो उठे, और 'भगजोगनी' को अपनी गोद में बैठाकर फूट-फूट कर रोने लगे। अनेक प्रयत्न करके भी मैं किसी प्रकार उनको आश्वासन न दे सका। जिनके पीछे हाथ धोकर वाम विधाता पड़ जाता है, उसे तसल्ली देना ठट्ठा नहीं है।

मुंशीजी की दास्तान सुनने के बाद मैंने अपने कई क्वाँरे मित्रों से अनुरोध किया कि उस अलौकिक रूपवती दरिद्र-कन्या से विवाह करके एक निर्धन भाई का उद्धार और अपने जीवन को सफल करें; किन्तु सबने मेरी बात अनसुनी कर दी। ऐसे-ऐसे लोगों ने आनाकानी की, जो समाज-सुधार सम्बन्धी विषयों पर बड़े शान गुमान से लेखनी चलाते हैं। यहाँ तक कि प्रौढ़ावस्था के मित्र भी राजी न हुए। आखिर वही महाशय डोला काढ़कर भगजोगनी को अपने घर ले गये और वहीं शादी की। कुल रस्में पूरी करके मुंशीजी को चिन्ता की दलदल से उबारा। बेचारे की छाती से पत्थर का बोझ तो उतरा, मगर घर में कोई पानी देनेवाला भी न रह गया। बुढ़ापे की लकड़ी जाती रही, देह लच गई, साल पूरा होते-होते अचानक टन बोल गये। गाँववालों ने गले में घड़ा बाँधकर नदी में डुबो दिया।

❀ ❀ ❀

भगजोगनी जीती है, आज भी उसकी जीवन-नैया संसार-सागर की लहरों पर ज्यों-त्यों डोलती चली जा रही है। लेकिन आज उस नैया का कर्णधार वह नहीं है; जिसके हाथों समाज ने उसका भार सौंपा था। वह कर्णधार भी उसे मँझधार या निराधार छोड़ जाता रहा।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

[सन् १८९६–१९६१]

मेदिनीपुर (बंगाल) के महिषादल नामक स्टेट में श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म हुआ। इनके पिता उन्नाव (उ० प्र०) के गढ़ाकोला गाँव के निवासी थे; किन्तु नौकरी के कारण उक्त स्टेट में बस गये थे। बचपन से ही निरालाजी को जहाँ कुश्ती और घुड़सवारी का शौक रहा, वहाँ साहित्य और संगीत के प्रति हार्दिक अभिरुचि भी। ये जन्मजात प्रचण्ड प्रतिभाशाली थे।

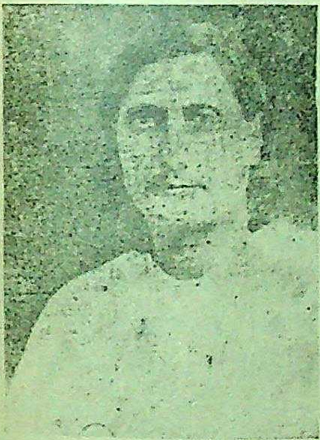

बंगाल में उत्पन्न होने के कारण इनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रारम्भ बंगल और संस्कृत से हुआ। बाद में इन्होंने हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की।

निरालाजी की भाषा संस्कृत से परिपूर्ण और मांसल है। इनकी भाषा में जगह-जगह उर्दू शब्दों का भी सुन्दर प्रयोग मिलता है। ये क्लिष्ट और सहज दोनों तरह की भाषा लिखने में निपुण थे। इनका रचना-काल संवत् १९७२ से प्रारम्भ होता है।

गीतिका, अनामिका, तुलसीदास आदि इनकी प्रसिद्ध कविता-पुस्तकें हैं। अप्सरा, अलका, प्रभावती, लिली, कुल्ली भाट आदि इनकी प्रसिद्ध कथा-कृतियाँ हैं।

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी के ईमानदार कलाकारों में निरालाजी का ही सबसे पहले उल्लेख होता है। जितना संघर्ष निरालाजी ने किया है उतना कोई महान् निष्ठावान् साहित्यकार ही कर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग-प्रवर्तक महाकवि के अतिरिक्त निरालाजी कथाकार, उपन्यासकार, निबन्धकार, आलोचक, अनुवादक आदि भी थे।

प्रस्तुत कहानी 'चतुरी चमार' स्वयं निरालाजी के अनुसार उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी है। व्यंग्यों की बौछार से कहानी का यथार्थवाद मर्म पर पड़ी पपड़ियाँ तोड़ कर पैठ जाता है। 'मार्मिकता और संवेदना के सहारे हृदय के भीतर छिपी भावनाओं, कमजोरियों और कुतूहल को जगा कर विभिन्न परिस्थितियों में मानव-जीवन का अध्ययन और विश्लेषण करने वाली निरालाजी की कहानियाँ केवल मनोरञ्जक ही नहीं, हमें अनुभव करने और सोचने के लिए मजबूर भी करती हैं। 'चतुरी चमार' जैसी संवेदनाशील कहानियाँ हमारे साहित्य में बेजोड़ हैं।'

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुरी चमार

चतुरी चमार डाकखाना चमियानी, मौजा गढ़ाकोला, जिला उन्नाव का एक कदीमी बाशिंदा है। मेरे, नहीं, मेरे पिताजी के, बल्कि उनके भी पूर्वजों के मकान के पिछवाड़े, कुछ फासले पर, जहाँ से होकर कई और मकानों के नीचे और ऊपरवाले पनालों का, बरसात और दिन-रात का, शुद्धाशुद्ध जल बहता है, ढाल से कुछ ऊँचे एक बगल चतुरी चमार का पुश्तैनी मकान है। मेरी इच्छा होती है, चतुरी के लिए 'गौरवे बहुवचनम्' लिखूँ, क्योंकि साधारण लोगों के जीवनचरित या ऐसे ही कुछ लिखने के लिए सुप्रसिद्ध संपादक पं० बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा दिया हुआ आचार्य द्विवेदीजी का प्रोत्साहन पढ़कर मेरी श्रद्धा बहुत बढ़ गई है; पर एक अड़चन है, गाँव के रिश्ते में चतुरी मेरा भतीजा लगता है। दूसरों के लिए वह श्रद्धेय अवश्य है; क्योंकि वह अपने उपानह-साहित्य में आजकल के अधिकांश साहित्यिकों की तरह अपरिवर्त्तनवादी है। वैसे ही देहात में दूर-दूर तक उसके मजबूत जूतों की तारीफ है। पासी हफ्ते में तीन दिन हिरन, चौगड़े और बनैले सुअर खदेड़कर फाँसते हैं, किसान अरहर की ठूँठियों पर ढोर भगाते हुए दौड़ते हैं—कटीली झाड़ियों को दबाकर चले जाते हैं; छोकड़े बेल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बबूल, करील और बेर के काँटों से भरे रूँधवाए बागों से सरपट भाग हैं, लोग जँगरे पर मड़नी करते हैं, द्वारिका नाई न्योता बाँटता हुआ दो साल में दो हजार कोस से ज्यादा चलता है, चतुरी के जूते अर्था वर्त्तनवाद के चुस्त रूपक जैसे टस-से-मस नहीं होते; यह जरूर है कि चतुरी के जूते जिला बाँदा के जूतों से वजन में हल्के बैठते हैं, सम्भव है; चित्रकूट के इर्द-गिर्द होने के कारण वहाँ के चर्मकार भाइयों पर रामजी की तपस्या का प्रभाव पड़ा हो, इसलिए उनका साहित्य ज्यादा ठोस हुआ; चतुरी वगैरह लखनऊ के नजदीक होने के कारण नव्वाबों के साये में आये हों। उन दिनों मैं गाँव रहता था। घर बगल में होने के कारण, घर बैठे हुए ही मालूम कर लिया कि चतुरी चतुर्वेदी आदि से संत-साहित्य का अधिक मर्मज्ञ है, केवल चिट्ठी लिखने का ज्ञान होने के कारण एक-क्रिय होकर भी भिन्न-फल है—वे पत्र और पुस्तकों के सम्पादक हैं, यह जूतों का। एक रोज मैंने चतुरी आदि के लिए चरस मंगवाकर अपने ही दरवाजे बैठक लगवाई। चतुरी उम्र में मेरे चाचा से कुछ ही छोटा होगा, कई घरों के लड़के-बच्चे-समेत 'चरस-रसि रघुपति पद-नेहु' लोध आदिकों के सहयोग से मजीरेदार डफलियाँ लेकर वह रात आठ बजे आकर डट गया। कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, पल्टूदास आदि ज्ञात, अज्ञात अनेकानेक संतों के भजन होने लगे। पह मैं निर्गुण शब्द का केवल अर्थ लिया करता था, लोगों को 'निर्गुण है' कहकर संगीत की प्रशंसा करते हुए सुनकर हँसता था, अब गंभीर जाया करता हूँ—जैसी उम्र की बाढ़ के साथ अक्ल बढ़ती है! मचिया पर बैठकर भजन सुनने लगा। चतुरी आचार्य-कंठ से लो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भूले पदों की याद दिया दिला करता। मुझे मालूम हुआ, चतुरी कबीर-पदावली का विशेषज्ञ है। मुझसे उसने कहा—"काका, ये निर्गुण-पद बड़े-बड़े विद्वान् नहीं समझते।" फिर शायद मुझे भी उन्हीं विद्वानों की कोटि में शुमार कर बोला—"इस पद का मतलब-" मैंने उतरे गले से बात काटकर उभड़ते हुए कहा—"चतुरी, आज गा लो, कल्ह सुबह आकर मतलब समझाना। मतलब से गाने की तलब चली जायगी।" चतुरी खँखार कर गंभीर हो गया। फिर उसी तरह डिक्टेट करता रहा। बीच-बीच में ओजस्विता लाने के लिए चरस की पुट चलती रही। गाने में मुझे बड़ा आनन्द आया। ताल पर तालियाँ देकर मैंने भी सहयोग किया। वे लोग ऊँचे दर्जे के उन गीतों का मतलब समझते थे उनकी नीचता पर यह एक आश्चर्य मेरे साथ रहा। बहुत-से गाने आलंकारिक थे। वे उनका भी मतलब समझते थे। रात एक तक मैं बैठा रहा। मुझे मालूम न था कि 'भगत' कराने के अर्थ रात-भर गवाने के हैं। तब तक आधी चरस भी खतम न हुई थी। नींद ने जोर मारा। मैंने चतुरी से चलने की आज्ञा माँगी। चरस की ओर देखते हुए उसने कहा—"काका, फिर कैसे काम बनेगा ?" मैंने कहा—"चतुरी, तुम्हारी काकी तो भगवान के यहाँ चली गई; जानते ही हो—भोजन अपने हाथ पकाना पड़ता है, कोई दूसरा मदद के लिए है नहीं, जरा आराम न करेंगे, तो कल उठ न पायँगे।" चतुरी नाराज होकर बोला—"तुम ब्याह करते ही नहीं, नहीं तो तरह काकी आ जायँ हाँ, वैसी तो-" मैंने कहा—"चतुरी, भगवान की इच्छा।" दुःखी हृदय से सहानुभूति दिखलाते हुए चतुरी ने कहा—"काकी बहुत पढ़ी-लिखी थीं। मैंने हसार को कई चिट्ठियाँ उनसे लिखवाई हैं।" फिर चलती हुई चिलम में दम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाकर, धुवाँ पीकर, सर नीचे की ओर जोर से दबाकर, नाक से धुवाँ निकाल कर बैठे गले से बोला—"काकी रोटी भी करती थीं, बर्तन भी मलती थीं, और रोज रामायण भी पढ़ती थीं, बड़ा अच्छा गाती थीं काका, तुम वैसा नहीं गाते, बुढ़ऊ बाबा (मेरे चाचा) दरवाजे बैठे थे—भीतर काकी रामायण पढ़ती थीं। जजलें और न-जाने क्या-क्या—टिल्लाना गाती थीं क्यों काका ?" मैंने कहा—"हूँ; तुम लोग चतुरी गाओ, मैं दरवाजा बन्द करके सुनता हूँ।"

जगने तक भगत होती रही। फिर कब बन्द हुई, मालूम नहीं। जब आँख खुली, तब काफी दिन चढ़ आया था। मुँह धोकर दरवाजा खोला, चतुरी बैठा एकटक दरवाजे की ओर देख रहा था। कबीर पदावली का अर्थ उससे किसी ने नहीं सुना, मैंने सुबह सुनने के लिए कहा था, वह आया हुआ है। मैंने कहा—"क्यों चतुरी, रात सोये नहीं ?" चतुरी सहज-गंभीर मुद्रा से बोला—"सोकर जगे तो बड़ी देर हुई: बुलाने की वजह आया हुआ हूँ।" जिनमें शक्ति होती है, अवैतनिक शिक्षक वही हो सकते हैं। मैंने कहा—"मैं तैयार हूँ, पहले तुम कबीर साहब की कोई उल्टबाँसी सीधी करो।" "कौन सुनाऊँ ?" चतुरी ने कहा—"एक-से-एक बढ़कर हैं। मैं कबीरपंथी हूँ न काका, जहाँ गिरह लगती है, साहब आप खोल देते हैं।" मैंने कहा—"तुम पहुँचे हुए हो, यह मुझे कल ही मालूम हो गया था।" चतुरी आँख मूँद कर शायद साहब का ध्यान करने लगा, फिर सस्वर एक पद गुनगुनाकर गाने लगा, फिर एक-एक कड़ी गाकर अर्थ समझाने लगा। उसके अर्थ में अनर्थ पैदा करना आनन्द खोना था। जब वह भाष्य पूरा कर चुका, जिस तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाष्य से हिन्दीवालों पर 'कल्याण' के निरामिष लेखों का प्रभाव पड़ सकता है, मैंने कहा—"चतुरी, तुम पढ़े-लिखे होते, तो पाँच सौ की जगह पाते।" खुश होकर चतुरी बोला—"काका, कहो तो अर्जुनवा (चतुरी का एक सत्रह साल का लड़का) को पढ़ने के लिये भेज दिया करूँ, तुम्हारे पास पढ़ जायगा, तुम्हारी विद्या ले लेगा, मैं भी अपनी दे दूँगा, तो कहो, भगवान की इच्छा हो जाय तो कुछ हो जाय।" मैंने कहा—"भेज दिया करो। दीया घर से लेकर आया करे। हमारे पास एक ही लालटेन है। बहुत नजदीक घिसेगा, तो गाँववाले चौंकेंगे। आगे देखा जायगा। लेकिन गुरु-दक्षिणा हम रोज लेंगे। घबराओ मत। सिर्फ बाजार से हमारे लिये गोश्त ले आना होगा, और महीने में दो दिन चक्की से आटा पिसवा लाना होगा। इसकी मिहनत हम देंगे। बाजार तुम जाते ही हो।" चतुरी को इस सहयोग से बड़ी खुशी हुई। एक प्रसंग पर आने के विचार से मैंने कहा—"चतुरी, तुम्हारे जूते की बड़ी तारीफ है।" खुश होकर चतुरी बोला—"हाँ काका, दो साल चलता है।" उसमें एक दर्द भी दबा था। दुखी होकर कहा—"काका, जिमींदार के सिपाही को एक जोड़ा हर साल देना पड़ता है। एक जोड़ा भगतवा देता है, एक जोड़ा पंचमा। जब मेरा ही जोड़ा मजे में दो साल चलता है, तब ज्यादा लेकर कोई चमड़े की बरबादी क्यों करे?" कहकर डबडबाई आँखों देखता हुआ जुड़े हाथों से सेवई-सी बटने लगा।

मुझे सहानुभूति के साथ हँसी आ गई। मगर हँसी को होंठों से बाहर न आने दिया। सँभलकर स्नेह से कहा—"चतुरी, इसका वाजिब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल अर्ज में प[illegible] लगाना होगा। अगर तुम्हारा जूता देना दर्ज होगा तो इसी तरह पुश्त-दर-पुश्त तुम्हें जूते देते रहने पड़ेंगे।"

चतुरी सोच कर मुस्किराया। बोला—"अब्दुल-अर्ज में दर्ज होगा क्यों काका ?" मैंने कहा—"हूँ, देख लो, सिर्फ एक रुपया ह[illegible] लगेगा।"

वक्त बहुत हो गया था। मुझे काम था। चतुरी को मैंने वि[illegible] किया। वह गम्भीर होकर सर हिलाता हुआ चला। मैं उसं[illegible] मनोविकार पढ़ने लगा—"वह एक ऐसे जाल में फँसा है, जिसे व[illegible] काटना चाहता है, भीतर से उसका पूरा जोर उभड़ रहा है, पर ए[illegible] कमजोरी है, जिसमें बार-बार उलझकर रह जाता है।"

अर्जुन का आना जारी हो गया। उन दिनों बाहर मुझे कोई क[illegible] न था, देहात में रहना पड़ा। गोश्त आने लगा। समय-समय पर लो[illegible] पासी, धोबी, और चमारों का ब्रह्मभोज भी चलता रहा। घृत-प[illegible] मसालेदार मांस की खुशबू से जिसकी भी लार टपकी, आप निर्म[illegible] होने को पूछा। इस तरह मेरा मकान साधारण जनों का अड्डा, बा[illegible] हाउस आफ कामन्स हो गया। अर्जुन की पढ़ाई उत्तरोत्तर बढ़ च[illegible] पहले-पहल जब 'दीदी, मामा, काका, दादी, नानी' उसने सीखा तो [illegible] में उसके माँ-बाप सम्राट-पद पाये हुए को छापकर छलके। सब[illegible] आपस में कहने लगे, अब अर्जुनवा 'दादा-दीदी' पढ़ गया। अ[illegible] अपने बाप चतुरी को दादा और माँ को दीदी कहता था। दूसरे [illegible] उसके बड़े भाई ने मुझसे शिकायत की, कहा—'बाबा, अर्जुनवा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सब कुछ लिख-पढ़ लेता है, पर भय्या नहीं लिखता।" मैंने समझाया कि किताब में 'दादा-दीदी' से भय्या की इज्जत बहुत ज्यादा है, भय्या तक पहुँचने में उसे दो महीने की देर होगी।

धीरे-धीरे आम पकने के दिन आये। अर्जुन अब दूसरी किताब समाप्त कर अपने खानदान में विशेष प्रतिष्ठित हो चला। कुछ नाजुक-मिजाज भी हो गया। मोटा काम न होता था। आम खिलाने के विचार से मैं अपने चिरंजीव को लिवा लाने के लिये ससुराल गया। तब उसकी उम्र ९-१० साल की होगी। सोम या चहरुम में पढ़ता था। मेरे यहाँ उसके मनोरञ्जन की चीज न थी। कोई स्त्री भी न थी, जिसके प्यार से वह बहला रहता। पर दो-चार दिन के बाद मैंने देखा, वह ऊबा नहीं, अर्जुन से उसकी गहरी दोस्ती हो गई है। मैं अर्जुन के बाप का जैसा, वह भी अर्जुन का काका लगता था। यद्यपि अर्जुन उम्र से उससे पौने दो-पट था, फिर भी पद और पढ़ाई में मेरे चिरंजीव बड़े थे, फिर यह ब्राह्मण के लड़के भी थे। अर्जुन को नई और इतनी बड़ी उम्र में उतने छोटे से काका को श्रद्धा देते हुए प्रकृति के विरुद्ध दबना पड़ता था। इसका असर अर्जुन के स्वास्थ्य पर तीन ही चार दिन में प्रत्यक्ष हो चला। तब मुझे कुछ मालूम न था, अर्जुन शिकायत करता न था। मैं देखता था, जब मैं डाकखाना या बाहर-गाँव से लौटता हूँ, मेरे चिरंजीव अर्जुन के यहाँ होते हैं, या घर ही पर उसे घेरकर पढ़ाते रहते हैं। चमारों के टोले में गोस्वामीजी के इस कथन को—'मनहु मत्त गजगन निरखि, सिंह-किसोरहिं चोर'—वह कई बार सार्थक करते देख पड़े। मैं ब्राह्मण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कारों की सब बातों को समझ गया। पर उसे उपदेश क्या देता? चमार दबेंगे, ब्राह्मण दबायँगे। दवा है, दोनों की जड़ें मार दी जायँ, पर यह सहज-साध्य नहीं। सोचकर चुप हो गया।

मैं अर्जुन को पढ़ाता था, तो स्नेह देकर, उसे अपनी ही तरह का एक आदमी समझकर, उसके उच्चारण की त्रुटियों को पार करता हुआ। उसकी कमजोरियों की दरारें भविष्य में भर जायँगी, ऐसा विचार रखता था। इसलिए कहाँ-कहाँ उनमें प्रमाद है, यह मुझे याद भी न था। पर मेरे चिरंजीव ने चार ही दिन में अर्जुन की सारी कमजोरियों का पता लगा लिया, और समय-असमय उसे घर बुलाकर (मेरी गैरहाजिरी में) उन्हीं कमजोरियों के रास्ते उसकी जीभ को दौड़ाते हुए अपना मनोरंजन करने लगे। मुझे बाद को मालूम हुआ।

सोमवार मियाँगंज के बाजार का दिन था। गोश्त के पैसे मैं चतुरी को दे दिये थे। डाकखाना तब मगरायर था। वहाँ से बाजार नजदीक है। मैं डाकखाने से प्रबन्ध भेजने के लिए टिकट लेकर टहलता हुआ बाजार गया। चतुरी जूते की दूकान लिए बैठा था। मैंने कहा— "कालिका (धोबी) भैया आये हुए हैं, चतुरी, हमारा गोश्त उनके हाथ भेज देना। तुम बाजार उठने पर जाओगे, देर होगी।" चतुरी ने कहा— "काका, एक बात है, अर्जुनवा तुमसे कहते डरता है, मैं घर आकर कहूँगा, बुरा न मानना लड़कों की बात का।" "अच्छा" कहकर मैंने बहुत कुछ सोच लिया। बकर-कसाई के सलाम का उत्तर देकर बाजार और ठण्डई लेने के लिए बनियों की तरफ गया। बाजार में मुझे पहचाननेवाले न पहचाननेवालों को मेरी विशेषता से परिचित करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे—चारों ओर से आँखें उठी हुई थीं—ताज्जुब यह था कि अगर ऐसा आदमी है, तो मांस खाना-जैसा घृणित पाप क्यों करता है। मुझे क्षण-मात्र में यह सब समझ लेने का काफी अभ्यास हो गया था। गुरुमुख ब्राह्मण आदि मेरे घड़े का पानी छोड़ चुके थे। गाँव तथा पड़ोस के लड़के अपने-अपने भक्तिमान पिता-पितामहों को समझा चुके थे कि बाबा (मैं) कहते हैं, मैं पानी-पाँड़े थोड़े ही हूँ, जो ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे सबको पानी पिलाता फिरूँ। इससे लोग और नाराज हो गये थे। साहित्य की तरह समाज में भी दूर-दूर तक मेरी तारीफ फैल चुकी थी—विशेष रूप से जब एक दिन विलायत की रोटी-पार्टी की तारीफ करने वाले एक देहाती स्वामीजी को मैंने कबाब खाकर काबुल में प्रचार करने वाले, रामचन्द्रजी के वक्त के, एक ऋषि की कथा सुनाई; और मुझसे सुनकर वहीं गाँव के ब्राह्मणों के सामने बीड़ी पीने के लिए प्रचार करके भी वह मुझे नीचा नहीं दिखा सके—उन दिनों भाग्यवश मिले हुए अपने आवारागर्द नौकर से बीड़ी लेकर सबके सामने दिया-सलाई लगाकर मैंने समझा दिया कि तुम्हारा इस जूठे धुएँ से बढ़कर मेरे पास दूसरा महत्त्व नहीं।

मैं इन आश्चर्य की आँखों के भीतर बादाम और ठण्ढई लेकर जरा रीढ़ सीधी करने को हुआ कि एक बूढ़े पंडितजी एक देहाती भाई के साथ मेरी ओर बढ़ते नजर आये। मैंने सोचा, शायद कुछ उपदेश होगा। पंडितजी सारी शिकायत पीकर मधु-मुख हो अपने प्रदर्शक से बोले—"आप ही हैं?" उसने कहा—"हाँ यही हैं।" पंडितजी देखकर गद्गद हो गये। ठोढ़ी उठाकर बोले—"ओहोहो! आप धन्य हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने मन में कहा—"नहीं मैं धन्य हूँ। मजाक करता है खूसट।" पर गौर से उनका पग्गा और खौर देखकर कहा—"प्रणाम करता हूँ पंडितजी।" पंडितजी मारे प्रेम के संज्ञा खो बैठे। मेरा प्रणाम मामूली प्रणाम नहीं—बड़े भाग्य से मिलता है। मैं खड़ा पंडितजी को देखता रहा। पंडितजी ने अपने देहाती साथी से पूछा—"आप बे-मे सब पास हैं?" उनका साथी अत्यन्त गम्भीर होकर बोला—"हाँ! जिला में दूसरा नहीं है।" होंठ काटकर मैंने कहा—"पंडितजी, रास्ते में दो नाले और एक नदी पड़ती है। भेड़िए लागन हैं। डंडा नहीं लाया। आज्ञा हो, तो चलूँ—शाम हो रही है।" पंडितजी स्नेह से देखने लगे। जो शिकायत उन्होंने सुनी थी, आँखों में उस पर सन्देह था; दृष्टि कह रही थी—"यह वैसे नहीं—जरूर गोश्त न खाता होगा, बीड़ी न पी होगी, लोग पाजी हैं।" प्रणाम करके, आशीर्वाद लेकर मैंने घर का रास्ता पकड़ा।

दरवाजे पर आकर रुक गया। भीतर बातचीत चल रही थी। प्रकाश कुछ-कुछ था। सूर्य डूब रहे थे। मेरे पुत्र की आवाज आई—"बोल रे, बोल।" इस वीर-रस का अर्थ मैं समझ गया। अर्जुन बोलता हुआ हार चुका था, पर चिरंजीव को रस मिलने के कारण बुलाते हुए हार न हुई थी। चूँकि बार-बार बोलना पड़ता था, इसलिए अर्जुन बोलने से ऊबकर चुप था। डाँटकर पूछा गया, तो सिर्फ कहा—"क्या?"

"वही—सुग्गा, बो-ल।"

अर्जुन ने कहा—"गुड़।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे के अट्टहास से घर गूँज उठा। भरपेट हँसकर, स्थिर होकर फिर उसने आज्ञा की—"बोल—गणेश।"

रोनी आवाज में अर्जुन ने कहा—"गड़ेस!" खिलखिला कर, हँसकर, चिरंजीव ने डाँटकर कहा—"गड़ेस-गड़ास करता है—साफ नहीं कहने आता—क्योंरे, रोज दातौन करता है?"

अर्जुन अप्रतिभ होकर, दबी आवाज में एक छोटी-सी 'हूँ' करके, सर झुकाकर रह गया। मैं दरवाजा धीरे से धकेलकर भीतर खम्भे की आड़ से देख रहा था। मेरे चिरंजीव उसे उसी तरह देख रहे थे, जैसे गोरे कालों को देखते हैं। जरा देर चुप रहकर फिर आज्ञा की—"बोल वर्ण।"

अर्जुन की जान की आ पड़ी। मुझे हँसी भी आई, गुस्सा भी लगा। निश्चय हुआ, अब अर्जुन से विद्या का धनुष नहीं उठने का। अर्जुन वर्ण के उच्चारण में विवर्ण हो रहा था। तरह-तरह से मुँह बना रहा था। पर खुलकर कुछ कहता न था। उसके मुँह बनाने का आनन्द लेकर चिरंजीव ने फिर डाँटा—"बोलता है, या लगाऊँ झापड़। नहीं लूँगा, गरमी तो है।"

मैंने सोचा, अब प्रकट होना चाहिए। मुझे देखकर अर्जुन खड़ा हो गया, और आँखें मल-मल कर रोने लगा। मैंने पुत्ररत्न से कहा—"कान पकड़ कर उठो बैठो दस दफे।" उसने नजर बदल कर कहा—"मेरा कसूर कुछ नहीं, और मैं यों ही कान पकड़ कर उठूँ-बैठूँ!" मैंने कहा—"तुम इससे गुस्ताखी कर रहे थे।" उसने कहा—"तो आपने भी की होगी। इससे 'गुण' कहला दीजिए, आपने पढ़ाया तो है, इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किताब में लिखा है।" मैंने कहा—"तुम हँसते क्यों थे ?" उसने कहा—"क्या मैं जान-बूझ कर हँसता था ?" मैंने कहा—"अब आज से तुम इससे बोल न सकोगे।" लड़के ने जवाब दिया—"मुझे मामा के यहाँ छोड़ आइए, यहाँ डाल के आम खट्टे होते हैं—चोपी होती है-मुँह फद्क जाता है, वहाँ पाल के आम आते हैं।"

चिरंजीव को नाई के साथ भेजकर मैंने अर्जुन और चतुरी को सांत्वना दी।

कुछ महीने और मुझे गाँव रहना पड़ा। अर्जुन कुछ पढ़ गया। शहरों की हवा मैंने बहुत दिनों से न खाई थी—कलकत्ता, बनारस, प्रयाग आदि का सफर करते हुए लखनऊ में डेरा डाला—स्वीकृत किताबें छपवाने के विचार से। कुछ काम लखनऊ में और मिल गया। अमीनाबाद होटल में एक कमरा लेकर निश्चिन्त चित्त से साहित्य-साधना करने लगा।

इन्हीं दिनों देश में आंदोलन जोरों का चला—यही, जो चतुरी आदिकों के कारण फिस्स हो गया है। होटल में रहकर, देहात से आनेवाले शहरी युवक मित्रों से सुना करता था, गढ़ाकोला में भी आन्दोलन जोरों पर है—छः-सात सौ तक का जोत किसान लोग इस्तीफा देकर छोड़ चुके हैं—वह जमीन अभी तक नहीं उठी—किसान रोज इकट्ठे होकर झंडा गीत गाया करते हैं। साल-भर बाद, जब आंदोलन में प्रतिक्रिया हुई, जमींदारों ने दावा करना और रियाया को बिना किसी रियायत के दबाना शुरू किया, तब गाँव के नेता मेरे पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदद के लिए आये, बोले—"गाँव में चलकर लिखो। तुम रहोगे, तो मार न पड़ेगी, लोगों को हिम्मत रहेगी; अब सख्ती हो रही है।" मैंने कहा—"मैं कुछ पुलिस तो हूँ नहीं, जो तुम्हारी रक्षा करूँगा, फिर मार खाकर चुपचाप रहने वाला धैर्य मुझ में बहुत थोड़ा है, कहीं ऐसा न हो कि शक्ति का दुरुपयोग हो।" गाँव के नेता ने कहा—"तुम्हें कुछ करना तो है नहीं, बस बैठा रहना है।" मैं गया।

मेरे गाँव की कांग्रेस ऐसी थी कि जिले के साथ उसका कोई तअल्लुक न था—किसी खाते में वहाँ के लोगों के नाम दर्ज न थे। पर काम में पुरवा-डिवीजन में उससे आगे दूसरा गाँव न था। मेरे जाने के बाद पता नहीं, कितनी दरखास्तें जमींदार साहब ने इधर-उधर लिखीं।

कच्चे रंगों से रंगा तिरंगा झंडा महावीर स्वामी के सामने एक बड़े बाँस में गड़ा, बारिश से धुलकर धवल हो रहा था। इन दिनों मुकदमेबाजी और तहकीकात जोरों से चल रही थी। कुछ किसानों पर, एक साल के हरी-भूसे को तीन साल की बाकी बनाकर जमींदार साहब ने दावे दायर किये थे, जो अपनी क्षुद्रता के कारण जमींदार आनरेरी मजिस्ट्रेट के पास आकर किसानों की दृष्टि में और भयानक हो रहे थे। एक दिन दरखास्तों के फलस्वरूप शायद, दारोगाजी तहकीकात करने आये। मैं मगरायर डाक देखने जा रहा था। बाहर निकला, तो लोगों ने कहा—"दारोगाजी आये हैं, अभी रहो।"आगे दारोगाजी भी मिल गये। जमींदार साहब ने मेरी तरफ दिखाकर अँगरेजी में धीरे से कुछ कहा। तब मैं कुछ दूर था, सुना नहीं। गाँववाले समझे नहीं, दारोगाजी झंडे के तरफ जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे। जमींदार शायद उखड़वा देने के इरादे लिये जा रहे थे। महावीरजी के अहाते में झण्डा देखकर दारोगाजी कुछ सोचने लगे, बोले—"यह तो मंदिर का झंडा है।" अच्छी तरह देखा, उसमें कोई रंग न देख पड़ा। जमींदार साहब को गौर से देखते हुए लौटकर डेरे की तरफ चले। जमींदार साहब ने बहुत समझाया कि यह बारिश से धुलकर सफेद हो गया है, लेकिन है यह कांग्रेस का झंडा। पर दारोगाजी बुद्धिमान् थे।

महावीरजी के अहाते में सफेद झंडा को उखड़वाकर वीरता प्रदर्शित करने की आज्ञा न दी। गाँव में कांग्रेस है, इसका पता न सबडिवीजन में लगा, न जिले में; थानेदार साहब करें क्या ?

उन दिनों मुझे उन्निद्र-रोग था। इसलिए सर के बाल साफ थे मैंने सोचा—"वेश का अभाव है; तो भाषा को प्रभावशाली करना चाहिए; नहीं तो थानेदार साहब पर अच्छी छाप न पड़ेगी। वहाँ तो महावीर स्वामी की कृपा रही, यहाँ अपनी ही सरस्वती का सहारा है।" मैं ठेठ देहाती हो रहा था; थानेदार साहब ने मुझसे पूछा—"आप कांग्रेस में हैं ?" मैंने सोचा—"इस समय राष्ट्रभाषा से राजभाषा का बढ़कर महत्व होगा।" कहा—"मैं तो विश्व-सभा का सदस्य हूँ।" इस सभा का नाम भी थानेदार साहब ने न सुना था। पूछा—"यह कौन-सी सभा है ?" उनके जिज्ञासा-भाव पर गम्भीर होकर नोबुल-पुरस्कार पाये हुए कुछ लोगों के नाम गिनाकर मैंने कहा—"ये सब उसी सभा के सदस्य हैं।" थानेदार साहब क्या समझे: वह जानें। मुझसे पूछा—"इस गाँव में कांग्रेस है ?" मैंने सोचा—युधिष्ठिर की तरह सत्य की रक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूँ, तो असत्य-भाषण का पाप न लगेगा। कहा--"इस गाँव के लोग तो कांग्रेस का मतलब भी नहीं जानते।" इतना कहकर मैंने सोचा—अब ज्यादा बातचीत ठीक न होगी। उठ कर खड़ा हो गया, और थानेदार साहब से कहा—"अच्छा, मैं चलता हूँ। जरा डाकखाने में काम है। चिट्ठीरसा हफ्ते में दो ही दिन गश्त पर आता है। मेरी जरूरी चिट्ठियाँ होती हैं, और रजिस्ट्री, अखबार, मासिक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं, फिर उस गाँव में हमलोगों की लाइब्रेरी भी है, जाना पड़ता है।" थानेदार साहब ने पूछा--"कांग्रेस की चिट्ठियाँ आती हैं?" मैंने कहा—"नहीं, मेरी अपनी।" मैं चला आया। थानेदार साहब जमींदार साहब से शायद नाराज होकर गये।

इससे तो बचाव हुआ, पर मुकदमा चलता रहा। जमींदार ऑनरेरी मजिस्ट्रेट ने, जिनके एक रिश्तेदार जमींदार की तरफ से वकील थे, किसानों पर जमींदार को डिगरी दे दी। बाद को चतुरी वगैरह की बारी आई। दावे दायर हो गये, अब तक जो सम्मिलित धन मुकदमों में लग रहा था, सब खर्च हो गया। पहले की डिगरी में कुछ लोगों के बैल वगैरह नीलाम कर लिये गये। लोग घबड़ा गये। चतुरी को मदद की आशा न रही। गाँववालों ने चतुरी आदि के लिए दोबारा चन्दा न लगाया।

चतुरी सूखकर मेरे सामने आकर खड़ा हुआ। मैंने कहा—"चतुरी, मैं शक्ति-भर तुम्हारी मदद करूँगा।"

"तुम कहाँ तक मदद करोगे काका?" चतुरी जैसे कुएँ में डूबता हुआ उभड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम्हारा क्या इरादा है ?" उसे देखते हुए मैंने पूछा।

"मुकदमा लड़ूँगा। पर गाँववाले डर गये हैं, गवाही न देंगे।" दिल से बैठा हुआ चतुरी बोला।

उस परिस्थिति पर मुझे भी निराशा हुई। उसी स्वर से मैंने पूछा--"फिर चतुरी ?"

चतुरी बोला—"फिर छेदनी-पिरकिया आदि मालिक ही ले लें।"

मैंने गाँव में कुछ पक्के गवाह ठीक कर दिये। सत्तू बाँधकर, रेल छोड़कर, पैदल दस कोस उन्नाव चलकर, दूसरी पेशी के बाद पैदल ही लौटकर हँसता हुआ चतुरी बोला—"काका, जूता और पुरवाली बात अब्दुल-अर्ज में दर्ज नहीं है।"

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैनेन्द्रकुमार

[सन् १६०५—]

कौड़ियागंज, जिला अलीगढ़ के एक मध्यवर्गीय परिवार में जैनेन्द्रजी ने जन्म ग्रहण किया। अब दिल्ली में ही स्थायी रूप से रहते हैं। जैन गुरुकुल, हस्तिनापुर के अतिरिक्त काशी विश्वविद्यालय में इन्होंने अध्ययन किया। फिर सन् १६२१ के असहयोग आन्दोलन में पढ़ाई छोड़ दी। जेल चले गये। वहीं लिखना प्रारम्भ किया।

१६२८ ई० में इनकी पहली कहानी 'खेल' 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुई। 'परख' नामक इनके प्रथम उपन्यास का प्रकाशन भी इन्हीं दिनों हुआ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ (सात भाग) परख, सुनीता, कल्याणी, त्यागपत्र, सुखदा, विवर्त्त, व्यतीत आदि इनकी मुख्य कथाकृतियाँ हैं।

आधुनिक कहानी लेखकों में जैनेन्द्रजी की लोकप्रियता सबसे बढ़ी-चढ़ी है। ये भावना-प्रधान कहानीकार हैं। चरित्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण करते हुए, ये अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन के गहनतम भावों का विश्लेषण करते हैं। एक दार्शनिक की भाँति गुत्थियाँ सुलझाते हैं; मानव प्रकृति के निगूढ़ रहस्यों का उद्घाटन करते हैं; सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अनुभूतियों को भी वाणी देने का प्रयास करते हैं।

भाषा में प्रौढ़ता और घरेलूपन, कथोपकथन में सरलता और स्वाभाविकता इनकी शैली की विशेषता है।

प्रस्तुत कहानी में एक बालक का मर्मस्पर्शी चरित्र उपस्थित किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मशिक्षण

महाशय रामरत्न को इधर रामचरण को समझने में कठिनाई हो रही है। वह पढ़ता है और अपने में रहता है। कुछ कहते हैं तो वह एक बार तो सुनता ही नहीं। सुनता है तो जैसे चौंक पड़ता है। ऐसे समय, मानो विघ्न पड़ा हो इस भाव से वह झुंझला भी उठता है। लेकिन तभी झुँझलाने पर वह अपने से अप्रसन्न भी देखता है और फिर बिन बात, बिन अवसर वह बेहद विनम्र हो जाता है।

यह तेरह वर्ष की अवस्था ही ऐसी है। तब कुछ बालक में न रहा होता है। इससे न वह ठीक बालक होता है, न कुछ और। उसे प्यार नहीं कर सकते, न उससे परामर्श कर सकते हैं। तब वह किस क्षण बालक है और किस पल बुजुर्ग, यह नहीं जाना जा सकता। उसका आत्मसम्मान कब कहाँ रगड़ खा जायगा, कहना कठिन है। उससे कुछ डरकर चलना पड़ता है।

रामरत्न की बात तो भी दूसरी है। घर में अधिक काल उन्हें नहीं रहना होता। सबेरे नौ बजे दफ्तर की तैयारी हो जाती है और साँझ अंधेरे वापस आते हैं। बाद में खाने के समय के अलावा कोई घड़ी भर घर में रहने पाते होंगे। रात नींद की होती ही है। पर दिनभर की परेशानी की न पूछो। वह रामचरण को लेकर हैरान है। अकेले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बैठकर सोचती है, दो जनियों से पूछकर वह विचारती है। पर ठीक कुछ समझ नहीं आता कि रामचरण से कैसे निबटे? जानती है कि लड़का यह सुशील है, खोटी आदत कोई नहीं है। किताबें सदा अच्छी और धर्म की पढ़ता है पर उसकी तबियत की थाह जो नहीं मिलती। वह गुम-सुम रहता है। चार दफे बात कहते हैं तब जाकर कहीं जवाब देता है। इस कारण आये दिन कलह बनी रहती है। इसमें दिनमणि को अपनी ज़ुबान खराब करनी पड़ती है और रामचरण अटल रहता है, वह दस तरह झोकती है—फटकारती है और कहती है मैं क्या भौंकने के लिये हूँ? पर रामचरण को जो करना होता है करता है और जो नहीं करना होता वह नहीं करता। सारांश, दिनमणि कह-सुनकर अपने आप में ही फुक रहती है।

दिनमणि ने अब अपने भीतर से सीख लेकर रामचरण से कहना-सुनना लगभग छोड़ दिया है। कुछ होता है तो पुत्र के पिता पर जा डालती है। सवेरे का स्कूल है और आठ बज गये हैं पर रामचरण अभी खाट पर पड़ा है। पड़ोस के सब बालक स्कूल गये, खुद घर की छोटी बिन्नी नाश्ता करके स्कूल जा चुकी है। आंगन में धूप चढ़ आई है। लेकिन रामचरण है कि खाट पर पड़ा है।

दिनमणि ने पति से कहा—"सुनते हो जी, लड़का सो रहा है और वक्त इतना हो गया। उसे क्या स्कूल नहीं जाना है? जगा क्यों नहीं देते?"

रामरत्न अखबार पढ़ रहे थे, युद्ध में अनी का समय आया ही चाहता है, बोले—"क्या रामचरण!—तो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या"—पत्नी कपार पर हाथ-रखकर बोली—"सूरज सिर पर आ जायगा तब वह उठेगा ? एक तो कमजोर है और तुमने आँख पे रखी है। कहती हूँ, स्कूल नहीं भेजोगे ? या ऐसे ही उसे नवाब बनाने का इरादा है ? तुमने ही उसे सिर पर चढ़ा रखा है।"

रामरत्न ने कहा—"क्या बात है ? बात क्या है ?"

दिनमणि का भाग्य ही वाम है। वैसा पुत्र और ऐसा पति ! बोली—"बात क्या है—तब से कह तो रही हूँ कि अपने लाड़ले को चलकर उठाओ। पता है, नौ बजेंगे !"

रामरत्न ने अन्दर जाकर जोर से कहा—"रामचरण ! उठोगे नहीं या तुम्हें पढ़ने का खयाल नहीं है ?"

करवट लेकर रामचरण ने पिता की ओर देखा।

उन आँखों में निर्दोष आलस्य था और आज्ञा-पालन की शीघ्रता नहीं थी।

पिता ने कहा—"चलो, उठो। सुना नहीं।"

मालूम हुआ कि रामचरण ने सचमुच नहीं सुना है। वह झट उठकर बैठ नहीं गया। पिता ने हाथ से पकड़कर उसे खींचते हुए कहा—"चलो उठते हो कि नहीं ? दिन चढ़ आया है और दुनिया स्कूल गई। नवाबसाहब सोये पड़े हैं ?"

रामचरण पहले झटके में ही उठकर सीधा हो गया। अब वह आँखें मल रहा था। पिता ने कहा—"चलो, जल्दी निबटो, और स्कूल जाओ। क्या तमाशा बना रखा है, अपने स्कूल का तुम्हें खयाल नहीं है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण बिस्तर से उठकर चल दिया। दिनमणि उसी कमरे में एक ओर खड़ी यह देख रही थी। उसके जाने पर बोली—"मिजाज तो देखो इस शरीर के इतना भौंकवाया तब कहीं जाकर उठा है। और अब भी देखो तो मुँह चढ़ा हुआ है।"

अखबार रामरत्न के हाथ में ही था, बोले—"उसके नाश्ते-वाश्ते को निकाल रखो कि जल्दी स्कूल चला जाय। देर न हो। बच्चा है, एक रोज आँख नहीं खुली तो क्या बात है ?"

दिनमणि इसका उपयुक्त उत्तर देने को ही थी कि रामरत्न चल कर अपनी बैठक में आ गये और रूस-जर्मन मोर्चे का नया नकशा अपने में बैठाने लगे। पर नकशा ठीक तरह वहाँ जम न सका ; क्योंकि जहाँ रोस्टोव चाहते हैं वहाँ रामचरण आ बैठता था। तब रामचरण पर उन्हें करुणा होने लगी, मानो वह अनाथ हो। माता है, पिता है पर जैसे उस बालक का फिर भी संगी कोई नहीं है। उन्हें अपने पर और अपनी नौकरी पर क्षोभ होने लगा कि देखो वह लड़के के लिए कुछ भी समय नहीं दे पाते। घर में रहकर बालक पराया हुआ जा रहा है।

इसी समय सुनते क्या हैं कि अन्दर कुछ गड़बड़ मच उठी है। जाकर मालूम हुआ कि रामचरण (दिनमणि ने साहब बहादुर कहा था।) नहाया नहीं है, न ठीक तरह मंजन किया है और मैं कहती हूँ तो बदलकर नया निकर भी नहीं पहनता है।

मैंने कहा—"निकर बदल न लो, रामचरण ?"

उसने कहा—"देर हो जायगी।"

मैंने कहा—"आधी मिनट में क्या फर्क होता है, इतने के लिए माँ का कहना नहीं टाला करते भाई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण ने इस पर जाकर निकर बदल लिया और बस्ता ले चलने को तैयार हो गया।

स्कूल जाते समय यह एक आना पैसा ले जाता है। देते समय पिता उससे तर्क करते हैं कि ऐसी-वैसी चीज बाजार की लेकर नहीं खानी चाहिए, समझे। पर वह बात ऊपरी होती और पिता आना टैक्स देना नहीं भूलते। उसको जाते देख पिता ने कहा—"क्यों आज चार पैसे नहीं ले जाओगे ?"

उसके आने पर कहा—"नाश्ता तो करते जाओ और पैसे भी लेते जाना।"

उसने सुन लिया। उसका मुँह गिरा हुआ था और वह बोला "नहीं।"

रामरत्न ने सोचा कि स्कूल में शायद देर हो जाने का उसे डर है। थपथपाते हुए वह उसे मेज पर ले गये और खुद मँगाकर नाश्ते की तश्तरी उसके सामने रख दी। कहा कि मैं हेडमास्टर को चिट्ठी लिख दूँगा, देर के लिए वह कुछ नहीं कहेंगे। अब तुम खाओ। तब उन्होंने घड़ी देखी साढ़े आठ हो गये थे और उनका सब नित्यकर्म शेष था। "खाओ बेटा, खाओ।" कहते हुए वहाँ से चल दिये।

स्नान समाप्त कर पाये थे कि बाहर से दिनमणि ने सुनाकर कहा "देखो जी, तुम्हारे साहबजादे बिना खाये-पीये जा रहे हैं। फिर जो पीछे तुम मुझे कहो।"

रामरत्न शीघ्रता से केवल धोती पहने और अँगोछा कन्धे पर रखकर बाहर आये, रामचरण से बोले—"नाश्ता करते जाते बेटे!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरण का मुँह सूखा था और गिरा हुआ था। उसने कुछ जवाब नहीं दिया।

"क्यों तबीयत तो खराब नहीं?"

रामचरण ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से पिता को देखा और अब भी कुछ बोला नहीं। पिता को ऐसा लगा कि उन आँखों में पानी गिर आना चाहता है। इन्हें कुछ समझ न आया। हठात् बोले—"माँ से नाराज नहीं होना चाहिए। भई, वह जो कहती है तुम्हारे भले के लिए ही कहती है। आओ चलो कुछ नाश्ता कर लो।"

रामचरण फिर एक बार मूगी आँखों से देखकर मुँह लटकाये वहीं-का-वहीं खड़ा रह गया।

पिता ने इसपर पुत्र को किंचित् उपदेश दिया और फिर भी उसे वहीं अचल देखकर किंचित् रोष में उसे छोड़कर चल दिये। वहीं से पुकारकर पत्नी से उन्होंने कहा—"नहीं खाता है तो जाने दो।" और रामचरण के प्रति कहते गये—"हमारे बक्स में पर्स होगा, उसमें से अपनी इकन्नी लेते जाना समझे? भूलना नहीं।"

रामरत्न संध्या बीते घर लौटे तो देखा कि रामचरण खाट पर लेटा हुआ है। और रोज अबतक वह खेल से मुश्किल से लौट पाता था। यह भी मालूम हुआ कि उसने खाना नहीं खाया है और उसकी माँ ने काफी उसे कहा-सुना है।

रामरत्न विचारशील हैं, पर उन्हें अति अच्छी नहीं लगती। सब सुनकर उन्होंने जोर से कहा—"रामचरण, क्या बात है जी?"

दफ्तर से वह उसी उधेड़-बुन में चले आ रहे थे। डर रहे थे कि घर कहीं बात बढ़ी न हो। उनके मन में पुत्र के लिए करुणा का भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उन्हें अपना बचपन याद आता था कि किस तरह बचपन में भी गलत समझा गया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की इन्ट्रेन्स में 'होमकमिंग' कहानी का वह लड़का याद आता था जिसका नाम कर भी वह स्मरण न कर पाते थे। उसकी बात सोचकर उनके खड़े हो जाते थे। विचार करते थे कि लड़कों की अपनी स्वप्न दुनिया अलग होती है। हम बड़ों का प्रवेश वहाँ निषिद्ध है। सपनों पर चोट वह नहीं सह सकते। हम बड़ों को इसका खयाल र चाहिए।

लेकिन जब घर में पैर रखते ही दिनमणि ने रामचरण की उद्द और अपने धैर्य की बात सुनाई तो उन्हें मालूम हुआ कि सचमुच में जिद बढ़ने देना नहीं चाहिए। यह बात सच थी कि दिनम स्कूल से लौटने पर पुत्र से खाने के लिए आध घन्टे तक अनुरोध था। उस सारे काल रामचरण मुँह फेर खाट पर पड़ा रहा था। अन्त में उत्तर में उसने तीन बार यही कहा था--"मैं नहीं खा नहीं खाऊँगा, नहीं खाऊँगा।" यह उत्तर सुनकर दिनमणि खाट खड़ी हुई थी और उसने कुछ तथ्य की बातें बिना लाग-लपेट के रा को वहीं-की-वहीं सुना दी थीं। रामचरण सबको पीता चला गया

यथार्थ स्थिति का परिचय पाकर रामरत्न दफ्तर के कपड़ों अन्दर जाकर उसे डपटकर बोले—"रामचरण, क्या बात है जी

रामचरण ने पिता के स्वर पर चौंककर ऐसे देखा जैसे कहीं खास बात के होने का उसे पता न हो, और वह जानना चाहता

रामचरण की आँखों में फैली इस शिशुवत अबोधता पर और तैश हो आया। बोले—"खाना तुमने क्यों नहीं खा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी मंशा क्या है ? क्या चाहते हो ? क्या घर में किसी को चैन लेने देना नहीं चाहते ? सब तुम्हारी खुशामद करें, तब तुम खाओगे ? आखिर तुम क्या चाहते हो ? रोज-रोज ये तमाशा किस लिये ?"

इसी तरह दो-तीन मिनट तक रामरतन क्रोध में अपनी बात कहते चले गये। रामचरण खाट पर पड़ा आँख फाड़े उन्हें देख रहा था। जैसे वह कुछ न समझ रहा हो।

पिता ने वहीं से पत्नी से हुक्म देकर कहा—"लाना तो खाने को देखें कैसे नहीं खाता है।"

दिनमणि खाना लेने गई और पिता ने पुत्र को कहा—"अब और तमाशा न कीजिए। हम समझते थे कि आप समझते हैं। लेकिन दीखता है कि आप इसी तरह बाज आइएगा।"

रामचरण तत्क्षण न उठता दिखाई दिया तो कड़ककर बोले—"सुना नहीं आपने, या अब चपत लगे ?"

रामचरण सुनकर एक साथ उठकर बैठ गया। उसके मुख पर भय नहीं विस्मय था और वह पिता को आँख फाड़कर चकित बना-सा देख रहा था।

खाने की थाली आई और सामने उसकी खाट पर रख दी गई। पर उसकी ओर रामचरण ने हाथ बढ़ाने में शीघ्रता नहीं की।

पिता ने कहा—"अब खाते क्यों नहीं हो ? देखते तो हो कि मैंने दफ्तर के कपड़े भी नहीं उतारे, क्या मैं तुम्हारे लिए कयामत तक यहीं खड़ा रहूँगा ? चलो शुरू करो।"

रामचरण फिर कुछ देर पिता को देखता रहा, अन्त में बोला "मुझे भूख नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे भूख नहीं है ?" पिता ने कहा—"सबेरे से कुछ नहीं खाया जितना भूख हो उतना खाओ।"

रामचरण ने उन्हीं फटी आँखों से पिता को देखते हुए कहा—"मु बिल्कुल नहीं है।"

पिता अबतक जब्त से काम ले रहे थे। लेकिन यह सुनकर उन धैर्य छूट गया और उन्होंने एक चाँटा कनपटी पर दिया; कहा—"मच न करो, सीधी तरह खाने लग जाओ।"

इस पर रामचरण बिलकुल नहीं रोया, न शिकायत का भाव उस दिखाई दिया। वह शान्त भाव से थाली की तरफ हाथ बढ़ाकर टुक तोड़ने लगा। माता और पिता दोनों पास खड़े हुए देख रहे रामचरण का मुँह सूखा था और ऐसा लगता था कि कौर उससे चब नहीं जा रहा है। इस बात पर उसके पिता को तीव्र क्रोध आया जाने किस विधि वह अपने क्रोध को रोके रह गये।

पाँच-सात कौर खाने के बाद रामचरण सहसा वहाँ से उठा, ज जल्दी चलकर बाहर आया, नाली पर पहुँचकर सब कै कर बैठा।

पिता यह सब देख रहे थे। मुँह साफ करके रामचरण लौटा पिता ने कठिनाई से अपने को वश में करके कहा—"अच्छा हु कै तो अच्छी चीज है। अब स्वस्थ हो गये होगे, लो अब खाओ।"

रामचरण ने आँखों में पानी लाकर कहा,—"मुझे भूख बिल नहीं है।"

"लेकिन तुमने सबेरे से खाया ही क्या है ?" पिता ने कह "देखो रामचरण, यह सब आदत तुम्हारी नहीं चलेगी। जिद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। या तो सीधी तरह खाना खा लो, नहीं तो अब से हमसे तुम्हारा वास्ता नहीं—बोलो, खाते हो ?"

रामचरण ने कहा,—"मुझे भूख नहीं है।"

इसपर पिता जोर से बोले—"लो जी, ये उठा ले जाओ थाली। अब इनसे खबरदार जो तुमने कुछ कहा। हम तो इनके लिए कुछ हैं ही नहीं। फिर कहना-सुनना क्या ?"

थाली वहाँ से उठ गई और रामचरण बिना कुछ बोले हक्का-बक्का-सा पिता को देखता रह गया। पिता वहाँ से जाते-जाते पुत्र से बोले, "सुनिए, अब आपका राज है, जो चाहे कीजिए, जो चाहे न कीजिए। हमने आपको इसी रोज के लिए पाला था।" कहते-कहते उनकी वाणी गद्‌गद हो आई। बोले—"ठीक है, जैसी आपकी मर्जी। बुढ़ापे में हमें यही दिन दिखाइएगा।"

कहते हुए पिता वहाँ से चले गये। रामचरण की आँखों में आँसू आ गये थे। पर पिता के जाने पर अपना सिर हाथों में लेकर वह वहीं खाट पर पड़ गया।

रात होती जाने लगी। पर पिता के मन का उद्वेग शान्त होने में न आता। उनको रोष था और अपने से खीज थी। वह विचारवान् व्यक्ति थे। सोचते थे लड़के में दोष हमसे ही आ सकता है। त्रुटि कहीं हममें ही होगी। लेकिन खयाल होता था—जिद अच्छी नहीं है। दिनमणि का कहना है कि लड़के को शुरू में काबू में नहीं रक्खा, इससे वह सिर चढ़ गया है। क्या यह गलती है ? क्या डाँटना बुरा है ? लाड़ से बच्चे बेशक सँभल नहीं सकते। लेकिन मैंने कब उसकी तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान दिया है। उसने कभी कुछ पूछा है तो मैंने टाल दिया है। न उसकी माँ ही समय दे पाती है। मैं समझता हूँ कि लापरवाही है जिससे उसमें यह आदत आई है।

सोचते-सोचते उन्होंने पत्नी को बुलाया और पूछा और जिरह की। वह कहीं-न-कहीं से बच्चे से बाहर दोष को पा लेना चाहते थे। पर जिरह से कुछ फल नहीं निकला। उन्हें मालूम हुआ कि वह स्कूल से घर रोज से कुछ जल्दी ही आया था।

"पूछा नहीं, जल्दी क्यों आया है?"

"नहीं, मैं तो उससे कुछ पूछती नहीं, मुँह लटकाये आया और चादर लेकर खाट पर लेट गया। कुछ बोला न चाला।" तब पिता ने जोर से आवाज देकर पुकारा—"रामचरण!" सुनकर रामचरण वहाँ आ गया।

पूछा—"तुम आज स्कूल पूरा करके नहीं आये?"

"नहीं।"

"पहले आ गये?"

"हाँ।"

"क्यों?"

इसका उत्तर लड़के ने नहीं दिया। झुककर पास की कुर्सी का सहारा ले वह पिता को देखने लगा।

पिता ने कहा—"सहारा छोड़ो, सीधे खड़े हो। तुम बीमार नहीं हो। और सुनो, तुम सवेरे बिना खाये गये और किसी की बात नहीं सुनी। स्कूल बीच में छोड़ कर चले आये। आये तो रूठकर पड़े रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इतना कहा तो भी अब तक खाना नहीं खाया। बताओ, ऐसे कैसे चलेगा ?"

लड़का चुप रहा।

पिता जोर से बोले—"तुम्हारे मुँह में जुबान नहीं है ? कहते क्यों नहीं ऐसे कैसे चलेगा ? बताओ, इस जिद की तुम्हें क्या सजा दी जाय ? देखते नहीं, घर भर में तुम्हारी वजह से क्लेश मचा रहता है।"

लड़का अब भी चुप ही था।

अत्यन्त संयमपूर्वक पिता ने कहा—"देखो, मेरी मानो तो अब भी खाना खा लो और सबेरे समय पर स्कूल चले जाना। आइन्दा ऐसा न हो। समझे ? सुनते हो ?"

लड़के की आँखें नीची थीं। कुछ मद्धम पड़कर पिता ने कहा—"भूख नहीं तो जाने दो। लेकिन कल सबेरे नाश्ता करके ठीक वक्त से स्कूल चले जाना। देखो इस उम्र में मेहनत से पढ़ लोगे और माँ-बाप का कहना मानोगे तो तुम्हीं सुख पाओगे। नहीं तो पीछे तुम्हें ही पछताना होगा। लो जाओ, कैसे अच्छे बेटे हो। बोलो, खाओगे ?"

जाते-जाते रामचरण ने कहा—"मुझे भूख नहीं है।"

पिता का जी यह सुनकर फिर खराब हो आया। लेकिन उन्होंने विचार से काम लिया और अपने को संयत रखा।

अगले दिन देखा गया कि वह फिर समय पर नहीं उठ सका है। जैसे-तैसे उठाया गया है तो अनमने मन से काम कर रहा है। नाश्ते को कहा गया तो फिर नाश्ता नहीं ले रहा है।

पिता ने बहुत धैर्य से काम लिया। लेकिन कई बार अनुरोध करने पर भी जब रामचरण ने यही कहा कि भूख नहीं है तो उनका धीरज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूट गया। तब उन्होंने उसे अच्छी तरह पीटा और अपने सामने नाश्ता कराके छोड़ा। उसके स्कूल चले जाने पर उनमें आत्मालोचन और कर्त्तव्यभावना जागृत हुई। उन्होंने सोचा कि सायंकाल का समय वह मित्र-मण्डली से बचाकर पुत्र को दिया करेंगे। उसे अच्छी-अच्छी बातें बतायँगे और पढ़ाई की कमजोरी दूर करेंगे। पत्नी से कहकर रामचरण की आलमारी में से उन्होंने उसकी किताब और कापियाँ मँगाई। वह कुछ समय लगाकर रामचरण की पढ़ाई-लिखाई के बारे में परिचय पा लेना चाहते थे। पहले उन्होंने पुस्तकें देखीं फिर कापियाँ देखीं। कापियों से अन्दाजा हुआ कि उसका कम्पोजीशन बहुत खराब है और भाषा का ज्ञान काफी नहीं है। किन्तु अन्तिम कापी जो सबसे साफ और बढ़िया थी, जिस पर किसी विषय का उल्लेख नहीं था उसको खोला तो देखते-के-देखते रह गये। सुन्दर-सुन्दर अक्षरों में पुस्तकों में से चुने हुए नीति-वाक्य बालक ने उस कॉपी में अंकित कर रक्खा था। जगह-जगह नीचे लाल स्याही से महत्त्वपूर्ण अंशों पर रेखा खिंची हुई थी। उसमें पहले ही सफे पर पिता ने पढ़ा—

"बड़ों की आज्ञा सदा सुननी चाहिए और कभी उनको उत्तर नहीं देना चाहिए।"

"दुःख सहना वीरों का काम है। अपने दुःख में सज्जन पुरुष किसी को कष्ट नहीं देते और उसे शान्ति से सहते हैं।"

"रोग मानने से बढ़ता है। रोग की सबसे अच्छी औषधि निराहार है।"

"घर ही उत्तम शिक्षालय है। सफल पुरुष पाठशाला में नहीं जीवन-शाला में अध्ययन करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दृढ़ संकल्प में जीवन की सिद्धि है। जो बाधाओं से नहीं डिगता, वही कुछ करता है।"

पहले पृष्ठ के ये रेखांकित वाक्य पढ़कर कापी को ज्यों-का-त्यों खोले पिता सामने शून्य में देखते-के-देखते रह गये।

दफ्तर में भी वह शान्ति न पा सके। शाम को लौटे तो मानो अपने को क्षमा न कर पाते थे। घर आने पर पत्नी ने कहा—"अरे उसे देखो तो, तब से ही कै हो रही है।"

रामरत्न ने आकर देखा। रामचरण शान्त भाव से लेटा हुआ था।

पत्नी ने कहा—"स्कूल से आया तो निढाल हो रहा था। मुश्किल से दीवाल पकड़ करके जीना चढ़ करके आया। और तब से दस बार कै हो चुकी है। पूछती हूँ तो कुछ कहता नहीं। देखो न क्या हो गया है।

पिता ने कहा—"रामचरण, क्या बात है ?"

रामचरण ने कहा—"कुछ नहीं, मतली है।"

"कल भी थी ?"

"हाँ।"

पिता को और समझना शेष न रहा। वह यह भी न पूछ सके कि ऐसी हालत में तुम दोनों रोज दो-दो मील पैदल गये और आये। बस, उनकी आँखें भर आईं और वह डाक्टर लाने की बात सोचने लगे।

रामचरण ने उनकी ओर देखकर कहा—"कुछ नहीं हैं बाबूजी, न खाने से सब ठीक हो जायगा।"

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञेय

[सन् १९११—]

गोरखपुर जिले के कसिया नामक ऐतिहासिक स्थान को 'अज्ञेय' जी की जन्मभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है. यों ये पंजाब के निवासी हैं। इनका पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन है। लाहौर से बी० एस-सी० की परीक्षा इन्होंने १९२९ में पास की और १९३० के क्रान्तिकारी आन्दोलन में आगे की पढ़ाई छोड़ कर जेल चले गये।

जब ये जेल ही में थे, इनकी एक कहानी जैनेन्द्र जी ने छपने के लिए भेज दी थी और उसके लेखक का नाम 'अज्ञेय' कल्पित कर दिया था, तभी से ये अज्ञेय हो गए।

निराला के बाद हिन्दी में उद्दाम प्रतिभा की दृष्टि से अज्ञेय ही का नाम लिया जाना चाहिए। ये एक ही साथ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, आलोचक, निबन्धकार—सब कुछ हैं। और प्रत्येक प्रकार में इनकी श्रेष्ठ प्रतिभा का प्रखर प्रकाश पाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी कहानियाँ विशेषकर मनोवैज्ञानिक हैं। अन्तर्द्वन्द्वों का स्वाभाविक चित्रण, विद्रोहात्मक भावना और भाषा का सौम्यशिल्प—इनकी कला की विशेषता है। इनकी कृतियों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

साहित्य कार्य के साथ-साथ अज्ञेय जी ने सम्पादन कार्य भी किया है। आगरे के 'सैनिक', कलकत्ते के 'विशाल भारत', पटने की 'आरती' तथा दिल्ली के 'प्रतीक' का सम्पादन इन्होंने सफलतापूर्वक किया है। इन्हें हिन्दी के समान अँगरेजी भाषा पर भी अधिकार है। अँगरेजी भाषा में भी इन्होंने काफी लिखा है। ये दिल्ली से प्रकाशित 'थॉट' नामक अँगरेजी पत्रिका का सम्पादन कर चुके हैं। ये घुमक्कड़ जीव हैं। भारत का कोना-कोना छान चुके हैं और विदेश-भ्रमण भी कर चुके हैं।

शरणार्थी, परम्परा, कोठरी की बात आदि इनके कहानी-संग्रह हैं। शेखर एक जीवनी (दो भाग) और नदी के द्वीप इनके उपन्यास हैं। ये इस युग के एक प्रतिनिधि कलाकार हैं।

प्रस्तुत कहानी में मानव-मन के एक शाश्वत सत्य का उद्घाटन किया गया है।

—::○::—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु

ज्ञान को, एक रात, सोते समय, भगवान ने स्वप्न में दर्शन दिये और कहा,—"ज्ञान, मैंने तुम्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर संसार में भेजा है। उठो, संसार का पुनर्निर्माण करो।"

ज्ञान जाग पड़ा। उसने देखा, संसार अन्धकार में पड़ा है और मानव-जाति उस अन्धकार में पथ-भ्रष्ट होकर विनाश की ओर बढ़ती चली जा रही है। वह ईश्वर का प्रतिनिधि है, तो उसे मानव-जाति को पथ पर लाना होगा, अन्धकार से बाहर खींचना होगा, उसका नेता बनकर उसके शत्रु से युद्ध करना होगा।

और, वह जाकर चौराहे पर खड़ा हो गया और सबको सुनाकर कहने लगा—"मैं मसीह हूँ, पैगम्बर हूँ, भगवान का प्रतिनिधि हूँ, मेरे पास तुम्हारे उद्धार के लिए एक सन्देश है।"

लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। कुछ उसकी ओर देखकर हँस पड़ते; कुछ कहते, पागल है; अधिकांश कहते, यह हमारे धर्म के विरुद्ध शिक्षा देता है, नास्तिक है, इसे मारो! और बच्चे उसे पत्थर मारा करते।

\+ \+ \+

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर तंग आकर वह एक अँधेरी गली में छिपकर बैठ गया और सोचने लगा। उसने निश्चय किया कि मानव-ज्ञाति का सबसे बड़ा शत्रु है धर्म, उसी से लड़ना होगा।

तभी पास कहीं से उसने स्त्री के करुण-क्रन्दन की आवाज सुनी। उसने देखा, एक स्त्री भूमि पर लेटी है, उसके पास एक बहुत छोटा-सा बच्चा पड़ा है, जो या तो बेहोश है, या मर चुका है, क्योंकि उसके शरीर में किसी प्रकार की गति नहीं है।

ज्ञान ने पूछा—"बहन, क्यों रोती हो ?"

उसी स्त्री ने कहा,—"मैंने एक विधर्मी से विवाह किया था। जब लोगों को इसका पता चला, तब उन्होंने उसे मार डाला और मुझे निकाल दिया। मेरा बच्चा भी भूख से मर रहा है।"

ज्ञान का निश्चय और दृढ़ हो गया। उसने कहा, "तुम मेरे साथ आओ, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।" और उसे अपने साथ ले गया।

ज्ञान ने धर्म के विरुद्ध प्रचार करना शुरू किया। उसने कहा—"धर्म झूठा बन्धन है। परमात्मा एक है, अबाध और धर्म से परे है। धर्म हमें सीमाबद्ध रखता है, रोकता है, परमात्मा से अलग करता है, अतः हमारा शत्रु है।"

लेकिन किसी ने कहा—"जो व्यक्ति पराई और बहिष्कृता औरत को अपने पास रखता है, उसकी बात हम क्यों सुनें? वह समाज से पतित है, नीच है।"

तब लोगों ने उसे समाजच्युत करके बाहर निकाल दिया।

\+ \+ \+

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान ने देखा कि धर्म से लड़ने से पहले समाज से लड़ना है। जबतक समाज पर विजय नहीं मिलती, तबतक धर्म का खण्डन न हो सकता।

तब वह इसी प्रकार का प्रचार करने लगा। वह कहने लगा,—धर्मध्वजी ये पोंगे-पुरोहित-मुल्ला, ये कौन हैं? इन्हें क्या अधिकार हमारे जीवन को बांध रखने का? आओ, हम इन्हें दूर कर दें, स्वतंत्र समाज की रचना करें, ताकि हम उन्नति के पथ पर बढ़ सकें।

तब एक दिन विदेशी सरकार के दो सिपाही आकर उसे पकड़ ले गये, क्योंकि वह वर्गों में परस्पर विरोध जगा रहा था।

\+ \+ \+

ज्ञान जब जेल काटकर बाहर निकला, तब उसकी छाती में विदेशियों के प्रति विद्रोह धधक रहा था। यही तो हमारी क्षुद्रता को स्थायी बनाये रखते हैं और उससे लाभ उठाते हैं। पहले अपने को विदेशी प्रभुत्व से मुक्त करना होगा, तब समाज को तोड़ना होगा, तब............।

और, वह गुप्त रूप से विदेशियों के विरुद्ध लड़ाई का आयोजन करने लगा।

एक दिन उसके पास एक विदेशी आदमी आया। वह मैले-कुचैले फटे-पुराने खाकी कपड़े पहने हुए था। मुख पर झुर्रियाँ पड़ी थीं, आँखों में एक तीखा दर्द था। उसने ज्ञान से कहा, "आप मुझे कुछ काम दें, ताकि मैं अपनी रोजी कमा सकूँ। मैं विदेशी हूँ, आप के देश में भूखों मर रहा हूँ। कोई भी काम आप मुझे दें, मैं करूँगा। आप परीक्षा लें। मेरे पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान ने खिन्न होकर कहा—"मेरी दशा तुमसे कुछ अच्छी नहीं है, मैं भी भूखा हूँ।"

वह विदेशी एकाएक पिघल-सा गया। बोला—"अच्छा! मैं आपके दुःख से बहुत दुखी हूँ। मुझे अपना भाई समझें। यदि आपस में सहानुभूति हो, तो भूखे मरना मामूली बात है। परमात्मा आप की रक्षा करें। मैं आपके लिये कुछ कर सकता हूँ।"

\+ \+ \+

ज्ञान ने देखा कि देशी-विदेशी का प्रश्न तब उठता है जब पेट भरा हो। सबसे पहला शत्रु तो यह भूख ही है। पहले भूख को जीतना होगा, तभी आगे कुछ सोचा जा सकेगा।

और उसने 'भूख के लड़ाकों' का एक दल बनाना शुरू किया, जिसका उद्देश्य था अमीरों से धन छीनकर सबमें समान रूप से वितरण-करना, भूखों को रोटी देना, इत्यादि; लेकिन जब धनिकों को इस बात का पता चला, तब उन्होंने एक दिन चुपचाप अपने चरों द्वारा उसे पकड़ मँगाया और एक पहाड़ी किले में कैद कर दिया। वहाँ एकान्त में वे उसे सताने के लिए नित्य एक मुट्ठी चबेना और एक लोटा पानी दे देते, बस।

धीरे-धीरे ज्ञान का हृदय ग्लानि से भरने लगा। जीवन उसे बोझ जान पड़ने लगा। निरन्तर यह भाव उसके भीतर जगा करता कि मैं, ज्ञान, परमात्मा का प्रतिनिधि, इतना विवश हूँ; कि पेट-भर रोटी का प्रबन्ध मेरे लिए असम्भव है। यदि ऐसा है, तो लिखना व्यर्थ है—यह जीवन कितना छूँछा, कितना बेमानी!

एक दिन वह किले की दीवार पर चढ़ गया। बाहर खाई में भरा हुआ पानी देखते-देखते उसे एकदम से विचार आया, और उसने निश्चय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लिया कि वह उसमें कूदकर प्राण खो देगा। परमात्मा के पास लौट कर प्रार्थना करेगा कि मुझे इस भार से मुक्त करो; मैं तुम्हारा प्रतिनिधि तो हूँ लेकिन ऐसे संसार में मेरा स्थान नहीं है।

वह स्थिर, मुग्ध दृष्टि से खाई के पानी में देखने लगा। वह कूदने को ही था कि यकायक उसने देखा, पानी में उसका प्रतिबिम्ब झलक रहा है और मानो कह रहा है, "बस अपने आप से लड़ चुके ?"

+ + +

ज्ञान सहमकर रुक गया, फिर धीरे-धीरे दीवार पर से नीचे उतर आया और किले में चक्कर काटने लगा।

और उसने जान लिया कि जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरन्तर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं।

—❀—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधाकृष्ण

[सन् १९१२—]

राधाकृष्णजी की जन्मभूमि राँची हैं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। सांसारिक कठिनाइयों से लोहा लेते रहने के कारण ये स्कूल-कॉलेज की सिलसिलेवार शिक्षा न प्राप्त कर सके, किन्तु स्वाध्याय के बल पर इन्होंने यथेष्ट ज्ञान प्राप्त कर लिया।

इन्हें बचपन से कहानी लिखने का शौक रहा है। सन् १९२९ में 'हिन्दी-गल्पमाला' में इनकी पहली कहानी 'सिन्हा साहब' प्रकाशित हुए।

इन्होंने 'राधाकृष्ण' तथा 'घोष बोस, बनर्जी, चटर्जी' इन दो नामों से कहानियाँ लिखी हैं। सन् १९३३-३४ में घोष, बोस; बनर्जी चटर्जी' के नाम से हास्य-विनोद-व्यंग पूर्ण कहानियाँ लिखकर इन्होंने इस क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित कर दिया। उच्चकोटी की हास्य-विनोद-व्यंगपूर्ण कहानियाँ लिखने में राधाकृष्णजी हिन्दी-संसार में अकेले हैं। ये गम्भीर कहानियाँ भी लिखते हैं, लेकिन ऐसी कहानियों में भी व्यंग का पुट अवश्य रहता है। ये जीवन के व्यापक अनुभावों के कथाकार हैं।

कथा-सम्राट् प्रेमचन्द इनकी तेजस्विनी प्रतिभा के उन्मुक्त प्रशंसक थे।

ये हिन्दी के प्रथम श्रेणी के कहानीकार हैं। इतना ही नहीं; यदि समस्त हिन्दी-संसार से पाँच-छः प्रतिनिधि कहानीकार चुने जायँ तो उनमें राधाकृष्ण अवश्य होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजीव चित्रण, प्रवाहपूर्ण भाषा तथा मर्मस्पर्शी व्यंग इनकी कला की विशेषता है।

राधाकृष्णजी को जीविकोपार्जन के लिए अनेक तरह के कार्य करने पड़े हैं। कुछ समय पहले ये ऑल इंडिया रेडियो में प्रोग्रामप्रोड्यूसर थे। इन दिनों राँची से निकलने वाले सरकारी पत्र 'आदिवासी' के सम्पादक हैं। रामलीला, सजला, फुटपाथ, रूपान्तर आदि इनकी प्रसिद्ध कथा-कृतियाँ हैं।

प्रस्तुत कहानी में आज के समाज की आर्थिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग है।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य और पशु

अभी हाल में आदमी ने पशुओं के ऊपर एक भारी विजय प्राप्त की है। पहले इक्के, ताँगे और फिटिन की सवारी थी। उसे घोड़े खींचते थे। फिर रिक्शा का प्रचलन हुआ। इसे आदमी खींचते हैं। लगातार कई वर्षों तक आदमी और घोड़ों में एक भीषण व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता चलती रही। उसके बाद आदमी ने घोड़ों को परास्त कर दिया। अब तमाम रिक्शा ही नजर आते हैं, घोड़ेवाली गाड़ियाँ बहुत विलुप्त हो चुकी हैं; कुछ जो बची हैं सो शीघ्र ही विलुप्त होने को प्रस्तुत हैं।

घोड़े की अपेक्षा आदमी अच्छा होता है। दुलत्तियों का खौफ इनसे नहीं रहता। घोड़े तो कानून की जरा भी परवा न करके सड़क पर जहाँ-तहाँ लीद कर देते हैं, आदमी के द्वारा ऐसी हरकत नहीं होती। ये कानून की पाबन्दी मानते हैं। इसके अलावा जिस मुसाफिर को ये अपनी गाड़ी पर चढ़ाते हैं उससे दुःख-सुख की बातें भी किया करते हैं।

एक रिक्शावाला मेरी फुलवारी के घर में रहता है। रोज आधी रात को वह टिमटिमाती हुई लालटेन (जिससे मिट्टी के रंग की लाल-सी रोशनी निकलती रहती है) लेकर फुलवारी में घुसता है। मेरे माली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उसकी रिश्तेमन्दी है। रोज रात को, वह वहीं सोता है। उसे मैं जानता हूँ। नाम है उसका रामू। उस रामू को मैंने अक्सर फुलवारी में आते देखा है; जाते किसी दिन भी नहीं देखा। तड़के उठकर का वह चल देता है, सो मुझे मालूम नहीं। तबसे वह आधी रात तक रिक्शे में जुता रहता है। किसान के बैलों को हल लेकर कभी-कभी ही काम करना पड़ता है; लेकिन रामू को सब दिन काम करना पड़ता है बारहो मास, तीसो दिन। रामू है और उसका रिक्शा है।

सो रिक्शा भी उसका नहीं है। रिक्शा का वह भाड़ा देता है। रिक्शा किसी मध्यवर्गीय विधवा का है। वह कोई काम नहीं कर सकती। उसने पाँच-सात रिक्शे खरीद लिये हैं। आठ आने रोज के हिसाब से हरएक रिक्शा का भाड़ा मिल जाता है। रामू भी उसी विधवा का रिक्शा खींचता है।

मैंने भी रामू के रिक्शे पर सवारी की है। भीड़वाली सड़कों पर भी वह आँका-बाँका होकर इस तरह तेजी से दौड़ता है कि देखकर आश्चर्य होता है! मोटर से, बस से, कभी-कभी ऐसा मालूम हुआ कि टक्कर लग जायगी, 'अब लगी, अब लगी,' कि रामू बाल-बाल बचकर निकल गया है। पहले लोग इक्कागाड़ी के घोड़े के गले में घुँघरू बाँधते थे। रामू भी घुँघरू रखता है; घुँघरू रखने का कानून है। लेकिन वह इतना करता है कि घुँघरू का हार बनाकर गले में नहीं बाँधता। सिर्फ एक घुँघरू वह अपने दाहिने हाथ में रखता है और चलते समय अविराम गति से रिक्शे के बम्पर से घुँघरू टकराता रहता है। ठक-ठक, ठक-ठक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सधी हुई गत-सी बराबर निकलती रहती है। रिक्शे पर सवारी करनेवालों को यह गत कंठस्थ हो जाती है। खुद रामू को भी इस गत के अस्तित्व की याद नहीं रहती। ऐसी गत बजाते रहना उसके लिए अनिवार्य है—ठक-ठक, ठक-ठक—मधुर-सी एक आवाज। तब राही जान लेते हैं कि पीछे से रिक्शा आ रहा है। वे हट जाते हैं, राह दे देते हैं, रामू का रिक्शा आगे निकल जाता है। रामू अच्छा आदमी है। जब-जब मैंने उसे भाड़े के पैसे दिये हैं, उन्हें लेते समय उसे कुछ संकोच हुआ है और बरबस हँसकर उसने अपना संकोच हँसी में ढक दिया है। वह मुझे पहचानता है। मुझ पर कुछ अहसान-सा भी करना चाहता है, मगर……खैर….

अब मेरे एक मित्र हैं, सो लालपुर में रहते है। उस दिन उनके यहाँ रामू के रिक्शे पर ही पहुँचा। देखता हूँ कि दरवाजा बन्द है और वहाँ कुर्सी पर एक पुर्जे पर चंद पंक्तियाँ मेरे नाम लिखी हैं कि तुम आओ, जरा बैठ जाओ, कुर्सी रखी है। काम जरूरी था। अगर कुर्सी नहीं भी रहती तब भी वहाँ रुकना ही पड़ता। मैं कुर्सी पर बैठ गया और रामू भी वहाँ दीवार से सटकर जमीन पर बैठ गया। वक्त काटने और रामू को जानने का यह अवसर मुफ्त में मिल गया था। परिचय को घनिष्ट करने के अभिप्राय से मैंने पूछा—"आजकल कैसा कमाते हो रामू ?"

'आजकल' शब्द से मेरा खास मतलब था। उस समय हाल-हाल लड़ाई शुरू हुई थी। लोभी-लुटेरों ने हरएक चीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का दाम बढ़ाना शुरू किया था। प्रत्येक चीज पर कन्ट्रोल भी उसी समय लागू हुआ था। यह नवम्बर १९३९ की बात है।

रामू ने कहा—"कमा लेता हूँ, बाबू साहब सवा-डेढ़ का रोजगार रोज हो जाता है।"

"तुम्हारा घर कहाँ है ?"

"यहाँ से सात कोस पर एक गाँव है, मुड़या।"

"बाल बच्चे ?"

"दो लड़के हैं, एक लड़की है।"

"घरवाली ?"

"सो भी है ! आजकल बीमार है, बाबूजी !"

उसने एक लम्बी साँस ली।

घोड़े दौड़ते हैं, हाँफते हैं लेकिन घरवाली के विरह से कातर होकर ऐसी व्यथा-भरी लम्बी साँस नहीं लिया करते। अपनी घर-वाली की बीमारी की उन्हें सुध नहीं होती और वे ऐसे कातर नहीं होते।

मैंने रामू को सोचने दिया। उसकी घरवाली की स्मृति में कोई बाधा नहीं डाली। मैं खुद सोचने लगा कि रामू का घोड़ा होना ही ज्यादा अच्छा था। तब यह प्रपंचों में नहीं पड़ता। सिर्फ खाने और दौड़ने के पीछे मस्त रहता। आदमी होकर यह अपने बाल-बच्चों के बारे में चिन्ता करता है, स्त्री बीमार पड़ती है तो सोचता है। उस रामू से तो घोड़े ही अच्छे। रामू के तन पर अगर मुसाफिरों का बोझ रहता है तो मन पर स्त्री, बालक और घर-दरभाजे का भार रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बोझ भी तो कम नहीं। यह कहना कठिन है कि रामू और किसी घोड़े में कितना वैषम्य है। रामू ने व्यापारिक क्षेत्र में घोड़े को परास्त कर दिया है; लेकिन खुद घोड़ा नहीं हो पाया।

फिर रामू को नहीं देखा। उसकी मुझे कोई याद नहीं थी; लेकिन जब बहुत दिनों के बाद उसे देखा तो याद आया कि बहुत दिनों से मैंने रामू को नहीं देखा था।

रिक्शास्टैंड पर पहुँचते ही रामू ने मुझे सलाम किया। आदमी यह सलाम नाम की चीज खूब पसन्द करता है। रामू की जगह अगर कोई घोड़ा होता, बैल होता या बारहसिंगा ही होता तो कदापि सलाम नहीं करता। कुत्तों में कुछ-कुछ ऐसी आदत है। वे सलाम नहीं करते, दुम हिलाते हैं। रामू सलाम करता है।

लेकिन रामू को हो क्या गया है? शरीर में हड्डियाँ छोड़कर स्वास्थ्य निकल भागा है। आँखें गड्ढे में धँस गई हैं। चेहरा कितना करुण मालूम होता है। अगर कोई बीमारी बैल को गाड़ी में जोते तो हम उसे बुरा-भला कहेंगे। उसे हृदयहीन पशु साबित करने में जरा भी संकोच नहीं करेंगे। लेकिन रामू बीमार बैल नहीं जोतता। वह बीमार रहकर खुद अपने को गाड़ी में जोत लेता है, इसलिए हम नैतिक या कानूनी आपत्ति नहीं करते।

मैं रिक्शा पर बैठ गया।

"कहाँ चलूँ, बाबूजी?"

"घर!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रामू घर की ओर दौड़ पड़ा। लेकिन उससे दौड़ा नहीं जाता ! धीरे-धीरे दौड़ता है और प्यासे कुत्ते की तरह हाँफता है। रामू बहुत बीमार रहा होगा। उसके बाद उसकी आवश्यकताओं ने उसे रिक्शे में जोत दिया। कोई घोड़ा या बैल ऐसी अवस्था में स्वेच्छापूर्वक गाड़ी में जुतना मंजूर नहीं करता। मगर रामू घोड़े की अपेक्षा ज्यादा समझदार है। कैसा हाँफ रहा है। छाती की हड्डियाँ स्प्रिंग की तरह हिल रही हैं।

जहाँ कोई बाधा न हो, वहाँ हम मध्यवर्गियों को सहानुभूति बड़े जोर से उमड़ पड़ती है। मुझे भी जल्दी पहुँचने की कोई जल्दी नहीं थी। मैंने रोककर कहा—"तेज चलने की जरूरत नहीं है रामू।"

रामू धीरे-धीरे चलने लगा। तब भी उसे रिक्शे को खींचने में जोर लगाना पड़ता था, तब भी वह हाँफ रहा था।

मैंने पूछा—"बीमार थे क्या ?"

"हाँ सरकार !" उसने हाँफते-हाँफते जवाब दिया—बहुत बीमार था। बचने की उम्मीद नहीं थी। छः महीने की बीमारी भोगकर अभी-अभी तो उठा हूँ।'

और अभी ही रिक्शे में जुत गया। जरा स्वस्थ तो हो लेता। यह तो ऐसा मरियल हो गया है कि कोई भी इसके रिक्शे पर बैठना मंजूर नहीं करेगा। रिक्शे पर चढ़ते समय आदमी रिक्शेवाले के स्वास्थ्य को भी देखता है। लोग इसकी सूरत देखते ही मुँह सिकोड़ लेते होंगे।

पूछा—"आजकल कैसा कमाते हो ?'

"क्या कमाऊँगा, सरकार ! लोग मेरे रिक्शे पर चढ़ते ही नहीं। कहते हैं, आराम करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पूछा—'आजकल कितने दिनों से रिक्शा खींच रहे हो ?'

'पन्द्रह-बीस दिनों से !'

सो रामू कष्ट में है। शरीर और मन कुछ भी ठीक नहीं और हमारा पौने दो मन का शरीर टाँगे जा रहा है। अगर मैं तीन और चार मन का भी होता तब भी रामू उज्र नहीं कर सकता था। उसे ले जाना पड़ता ही।

घर पहुँच कर मैंने उसे पैसे दिये और कहा—"देखो, कोई जरूरत आ जाय, तो मुझे खबर देना। शायद तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ !'

रामू ने कृतज्ञता से हँस दिया।

और उसी रात को उसने खबर भी भेज दी।

ग्यारह बजे होंगे। दिन-भर का थका-माँदा, एक उपन्यास पढ़कर तबीयत बहला रहा था। एक बुड्ढी विलासिनी किस प्रकार एक उठते हुए नौजवानों को फँसाती थी। लेखक बार-बार हमारा ध्यान आकृष्ट कर रहा था। ऐसा स्वाभाविक है, ऐसा मनोविज्ञान से सम्मत है। बुढ़िया का दोष नहीं।.......कि माली ने आकर समाचार दिया—"रिक्शावाला रामू मेरे यहाँ पड़ा है। उसे खून की कै हो रही है। तीन कै हो चुकी है।"

सुनकर मैं सर्द हो उठा।

हमारे एक मित्र डाक्टर हैं। उन्हें बुलाया। रामू की भली भाँति परीक्षा करने के बाद बोले—"सेकेंड स्टेज में है !"

पूछा—'अब क्या उपाय हो सकता है ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सैनिटोरियम ! परफेक्ट रेस्ट ! और कोई उपाय नहीं है।"

मगर घोड़े का काम करनेवाला यह रामू किसी सैनिटोरियम में कैसे प्रवेश पा सकता है। इसने घोड़े को परास्त किया था और उसकी कमाई खाता था। इसने पूँजीपतियों को परास्त नहीं किया था कि उन लोगों के समान ही सैनिटोरियम में प्रवेश पा सकता, वहाँ का खर्च उठा सकता।

डाक्टर ने उसे सलाह दी—"तुम घर चले जाओगे!" और दूसरे दिन सबेरे उठकर उसने अपने घर की राह ली। यहाँ से सात कोस पर उसका घर था। जो सबको गाड़ी पर बिठाता था, आज उसके लिए कोई गाड़ी नहीं थी!

—❀—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह

[सन्–१८९१]

शाहाबाद जिले का सूर्यपुरा नामक स्थान इनकी जन्मभूमि है। सन् १९१५ ई० में इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम० ए० की परीक्षा पास की। सन् १९१२ ई० से ही हिन्दी की सेवा में संलग्न हैं।

हिन्दी के समान ही इन्हें बंगला, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का भी यथेष्ट ज्ञान है।

इनकी पहली कहानी 'कानों में कँगना' सन् १९१३ ई० में 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित हुई। अपनी पहली कहानी से ही इन्होंने समस्त हिन्दी-जगत् का ध्यान आकर्षित कर लिया। हिन्दी-कथा-साहित्य के विकास में इस कहानी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ये शैलीकार हैं। इतनी सहजता से ये वाक्यों को अभिव्यक्ति की अनोखी भंगिमाएँ देते हैं जो स्वयं कथा-वस्तु से अधिक आकर्षक बन जाते हैं। इनकी शैली और वस्तु में होड़-सी मच जाती है।

अबतक इनकी कितनी ही कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें राम-रहीम, पुरुष और नारी, चुम्बन और चाँटा आदि अधिक प्रसिद्ध हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ऐतिहासिक दृष्टि से इनकी 'कानों में कंगना' नामक कहानी को उल्लेख बताया है। उन्होंने 'राम-रहीम' को भी मानवता के व्यापक सम्बन्ध पर जोर देने वाला उपन्यास बताया है।

प्रस्तुत कहानी 'दरिद्रनारायण' में मानव-जीवन के एक कटु सत्य पर प्रकाश डाला गया है।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरिद्र नारायण

राजा की पलकों में नींद नहीं थी। मखमली सेज पर काँटे बिछ रहे थे। हजारों तरद्दुद सिर पर थे। सिर चीरते-चीरते वे और भी सरकश हो गये—उफ! सर तो फटा जा रहा है, ताज किस पर रखूँ?

वे उठ बैठे—"आखिर इस सरदर्द की कोई दवा भी है? कहीं पौ फटने के पहले सर न फट पड़े! मेरे राज के किस कोने से यह कराह की हवा उठी है, जो आह बनकर मेरी रूह में भर गई! आज ताज के तमाम हीरे बेकार हो गये—न मन पर चमक पाते हैं, न बदन पर उनकी किरण का जाल जंजाल हो गया। आह! इस भरे घर में शून्यता की बू कहाँ से भर आई है—"

वे चुपचाप बाहर निकल आये।

उनकी सवारी जब फकीर की कुटिया पर पहुँची, पौ फट चुकी थी। इर्द-गिर्द फूलों की महक थी, डालों पर चिड़ियों की चहक।

उन्होंने देखा, आश्रम के चारों ओर की प्रकृति पर एक विचित्र आभा टपक रही है। महल के गुंबदों पर उषा के फव्वारे कुछ और हैं, कुटिया के छज्जे पर किरणों के करिश्मे कुछ और। चमन में फूल खिलते हैं, वन में फूल हँसते हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिरों की घंटाध्वनि, राजद्वार की नौबत की शहनाई के सुर से मिलकर, मंगल में मधु बिखेरने लगी।

\+ \+ \+

महर्षि प्रसन्नवदन चुप बैठे हैं। चेहरे पर तेज की ताजगी है। राजा ने सामने जाकर हाथ जोड़े और गिड़गिड़ाकर कहा—"महाराज! यह ताज तो मेरे सर पर भार हो चला है।"

"सच?"—महर्षि ने हँसकर कहा-"तो इस ताज के तले मुहताज की तादाद तरक्की पर होगी! जो वजनी हीरे भार हो रहे हैं, उन्हें ताज से निकाल कर वितरण कर दो।"

"हीरे! महाराज! ये अनमोल.......।"

"हाँ हीरे? कितने मनों लहू के पसीने तुम्हारे ताज पर नगीने होकर फले हैं! इन मोती के लच्छों में किन बेबसों के आँसू के मोती पिरोये हैं—तुम्हें पता है? आखिर इस कहर का असर तुम्हारे सर पर तो होगा ही।...."

"मगर, महाराज! इस ताज की क्या गति होगी?"

"यही इसकी सद्गति है। जब भार है तो इसे उतार ही डालो। इसका जमाना लद गया।"

"तो फिर?"

"जिसने तुम्हारे सर पर रक्खा है, उसे वापस करो।"

"उसे पाऊँ कहाँ?"

"उसे क्या ढूँढ़ना है? वह कहाँ नहीं है? हाँ, उसे ढूढ़ने के पहले अपने मन को ढूँढ़ लो। तुम्हारी आत्मा की वाणी तुम्हारे लहू के पर्दे को चीरती हुई दिल के कानों तक पहुँची है या नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा लौट आये। उनकी चिन्ता गई नहीं। "उसे कहाँ ढूंढ़ना होगा ? महर्षि का इसारा किस ओर है ?"—वे मीन-मेख में पड़े रहे।

महर्षि की बातें उनके दिल में घर न कर सकीं। उन्होंने राज पुरोहित को बुला भेजा। सारी बातें कह डालीं।

"मिश्रजी, महर्षि का आदेश क्या है ? मैं इस मुकुट को किन चरणों में अर्पित करूँ ?"

"महाराज ! भगवान के चरणों में। और कहाँ ?"

"तो फिर उन्हें ढूँढ़ना तो टेढ़ी खीर है। मुझे दर्शन कहाँ होंगे ?"

"तीर्थों में और कहाँ ?"

\+ \+ \+

राजा ने तीर्थ-पर्यटन पर कमर बाँधी। एक लश्कर साथ चला। संतरी और घुड़सवार। खवास और चोबदार। जैसी सजधज थी, वैसी ही चहल-पहल। जमीन की गर्द उड़कर बादल बन गई।

उनकी सवारी सुनहरी तामजाम थी। कहारों की किसमिसी कमखाब की वर्दी उनकी प्याजी पगड़ियों के कलाबत्तू पर चुटकियाँ लेती थीं।

ज्योंही सवारी भीतर से विशाल सिंहद्वार पर पहुँची; सामने एक कंगाल की दर्दनाक चीख कानों पर फट पड़ी।

वे चिहुँक पड़े। सर पर तिलमिलाते ताज को सँभाला। उचककर देखा—चिथड़ों में लिपटा एक काला कलूटा कंगाल है, जिसे सिपाहियों ने डंडे की चोट से सड़क के किनारे मार भगाया।

उनका चेहरा एक बार जर्द हो गया। मगर वे टोक न सके, सवारी आगे बढ़ गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने चारों धाम में नाम कमाया। पुरी में लाखों के अटके चढ़े। कहीं जड़ाऊ छत्र और चँवर। कहीं कुन्दन के जेवर।

पुण्य बटोरते-बटोरते हाथ थक गये—जी ऊब आया। लकदक मन्दिरों की माया-मरीचिका आँखों को चौंधिया गई, मगर वह दर्शन न मिला, वह शान्ति न मिली।

फूल और प्रसाद तो बहुत पाया, मगर जी का अवसाद न मिटा। मानों सोना गलाकर भी मन न गला। इस पुण्य के ठेलमठेल पर भी हृदय का कोना सूना ही रह गया। सर का ताज दर्द सर बनकर सर पर छाया ही रहा।

वे घर लौट आये। उनके सोने के थाल के पुलाव और कलिए फीके पड़ गये।

राजपुरोहित की फिर हाँक पड़ी! राजा ने कहा—"मिश्रजी, मुझे दर्शन तो मिले नहीं, न शान्ति का पता पाया।"

"महाराज! यात्रा पर टोकने की मेरी हिम्मत न पड़ी! मगर फाटक पर ही जो बदशकुन नजर आया, उसी पर मैं शंकित था।'

"यह कैसे?"—राजा ने अकचकाकर पूछा।

"वह कलूटा कोढ़ी, जो सामने आ पड़ा। उसी नंगे भुच्च ने सरकार की यात्रा पर मनहूसियत बिखेर दी।"

राजा चुप हो गये। उनका दर्दसर बराबर बना रहा—"तो भगवान की तलाश व्यर्थ ही गई?"

रात को फिर नींद हराम हो गई। न पलक लगी, न भूख जगी। एक अजब सूनापन घिर आया।

\+ \+ \+

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौ फटते राजा फिर फकीर की कुटी पर पहुँचे। देखा—महर्षि के आसन पर वही कलूटा कंगाल बैठा है। उसके चेहरे पर एक विचित्र आभा-सी टपक रही है।

राजा ने अकचकाकर पूछा—"तुम कौन ?"

"मैं वही हूँ, जिसकी तलाश में तुम तीर्थों की खाक छानते रहे।"

"तुम ?.........भगवान ?.........नहीं-नहीं तुम तो वही मनहूस कंगाल हो, जो तीर्थ-यात्रा के समय मेरे फाटक पर आकर...."

"तुमने मुझे पहचाना नहीं ! तुम्हारी आँखों पर चर्बी छाई हुई है। कंगाल ही कलयुग का कल्कि-अवतार है।"

"कैसे पहचानूँ ? यह भगवान का शास्त्रविहित रूप नहीं है। कहाँ है तुम्हारा शंख-चक्र....?"

"इस युग में मेरा यही रूप है। वह किताबी रूप तो दकियानूसी हो गया।"

"मगर इस रूप को कभी किसी ने देखा भी है ?"

"क्यों नहीं ? देखते तो सब हैं, मगर पहचानते हैं लाख में एक। भूल गये ? गौतम ने तो इसी रूप पर अपने ताज को उतार कर रख दिया था !"

"तो फिर मन्दिर में जो मूर्त्ति है वह कौन है ?"

"वह तो चितेरे के हाथ की मनचीती तस्वीर है—मैं नहीं हूँ।"

"मगर पुरोहित पण्डित उसी........"

"वे बेचारे क्या करें ? उनकी तो वह रोटी है—उनकी दूकान का इश्तहार।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वाह ! यह कैसे ? आपके तमाम भक्त भी तो उसी रूप पर........"

"मेरे सच्चे भक्त मुझे प्रत्येक रूप में बराबर देखते हैं—किसी खास में नहीं ।"

"तो फिर आपके पाने का उपाय ?"

"मेरी सेवा ।"

"मेरे दर्द दिल की दवा ?"

'मेरा आशीर्वाद ।"

"मगर मैं तो भगवान की सेवा मुद्दत से करता आया हूँ ।"

"तुम भूलते हो । तुमने पत्थर की मूर्त्ति पूजी है-आदमी की नहीं ।" याद रखो, वह मन्दिर में प्रतिष्ठित नहीं है-मानव शरीर में प्रतिष्ठित है ।'

"महाराज ! तो क्या मैं भिखारी से भीख लूँ ? यह दीन क्या देगा ?"

"तुम न समझते हो, वह दीन है ! मगर उसी की देन तुम्हारे सर पर ताज है । बलि ने भी बामन को दीन ही समझा था—रसातल को चले गये ! जिसे तुम अपना आश्रित समझते हो; उसी के तुम आश्रित हो । तुमने भगवान को भूखा रखा है इसलिए तुम्हें भूख नहीं । तुम उनका आशीर्वाद नहीं पाते, इसीलिए तुम्हारा अवसाद नहीं मिटता ।

"महाराज ! काश मुझे भूख होती—मेरी पलकों को नींद होती !"

"ताज के तले नींद ? यह तो तभी मुमकिन है जब ताज के तले त्याग हो, दिमाग नहीं । और भूख ? भूखों के गरोह के कप्तान को भूख कहाँ ? तुम्हारी भूख तो तुम्हारी भूखी प्रजा खा गई ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा चिन्ता में डूब गये। उन्होंने गिड़गिड़ा कर कहा—"महाराज! मैं जन को जनार्दन तो मान लूँ—नर को नारायण तो समझ लूं, पर उसमें शक्तिमान की शक्ति तो नहीं मिलती ?"

"दम धरो। तुमने अभी उसका विराट् रूप नहीं देखा है।" राजा की आँखों के सामने वह मूर्त्ति अन्तर्ध्यान हो गई।

+ + + +

राजा लौट पड़ें। किले के पास आकर देखा—चारों ओर भूखे कंगालों की सेना विराट् रूप धारण किये उमड़ पड़ी है।

उनके हाहाकार के फुत्कार से किले के कँगूरे काँप उठे। उनकी तोपों के ताव में भी वे नहीं आते—उनकी फौज की मौज भी टकराकर लौट जाती है। वे बाढ़ की तरह बढ़ते जा रहे हैं।

राजा ने विराट् रूप के दर्शन पाये। वे सन्न हो गये।

उनके कलूटे कंगाल ने सामने आकर कहा—"अर्जुन ने अपने रथ के सारथी का जब विराट् रूप देखा तब उसे जाना—वह कोचवान नहीं, भगवान है। तुम्हारा रथ का सारथी तुम्हारी प्रजा है। देखा न उसका विराट् रूप !"

राजा ने सर के ताज उतार कर रख दिया—

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द; तुभ्यमेव समर्पये।"

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेनीपुरी

[सन् १९०१—]

मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर नामक गाँव में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। ये बिहार के सबसे बड़े क्रान्तिकारी लेखक हैं। इनका संघर्षी और क्रान्तिकारी जीवन इनके साहित्य की पृष्ठभूमि है।

इनकी भाषा में एक अद्भुत सजीवता है। ये ग्रामीण शब्दों में भी इतनी अर्थ-व्यञ्जकता भर देते हैं कि वे साहित्यिक शब्दों को भी छवि-छटा में पीछे छोड़ देते हैं। आधुनिक बिहार ने आचार्य शिवपूजन सहाय, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह और रामवृक्ष बेनीपुरी के रूप में हिन्दी को तीन शैलीकार दिये हैं।

बेनीपुरी जी जनता के कलाकार हैं। इनकी कला में जनता की जिंदगी की धड़कन सुनाई देती है।

इन्होंने शब्द-चित्र, रेखा-चित्र, संस्मरण, नाटक आदि भी लिखे हैं। इनकी दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब ये सभी पुस्तकें पुनः 'बेनीपुरी-ग्रन्थावली' में प्रकाशित हो रही हैं। पत्रकार तो सुप्रसिद्ध ही हैं। बालक, युवक, योगी, जनता, हिमालय-जैसे श्रेष्ठ पत्रों का सम्पादन इन्होंने जिस योग्यता से किया है, उसका अतिरिक्त महत्त्व है। ये बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति रह चुके हैं। इन दिनों ये 'नईधारा' नामक मासिक पत्रिका के सम्पादक हैं।

इस कहानी में वर्तमान समाज की असंगति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है। वर्गहीन समाज की रचना के लिए इसमें पर्याप्त प्रेरणा है।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं धूप कहीं छाया

बाबू साहब की बेटी की शादी है। उनके घर पर सरगर्मी का क्या कहना है? किन्तु उससे भी ज्यादा सरगर्मी समूचे गाँव में है। गाँव ही क्यों, उनकी जमींदारी-भर के गाँवों में एक हलचल-सी दीख पड़ती है।

बढ़ई बुलाये गये और उन्हें आज्ञा हुई कि इतने पलंग, इतनी कुर्सियाँ, इतनी बेंचें आदि तैयार करो; पुराने फर्नीचर की मरम्मत अलग। कुम्हारों को हुक्म मिला कि इतनी हाँड़ियाँ, इतने घड़े, इतनी तश्तरियाँ और इतने आबखोरे बनाकर ड्योढ़ी पर हाजिर करो। छोटी जातियों के सछूत लोगों के दरवाजे पर धान के बोरे 'चिउड़ा' कूटने के लिए रखवा दिये गये; अछूत भी न बचे, दाल और आटे के लिए अरहर और गेहूँ के बोरे उनके आँगनों में फेंक दिये गये। तम्बोली से पान की और तेली से तेल की फरमाइश हुई। लोहार से तम्बू-शामियाने के लिए खूटे और मोखियाँ तैयार करने तथा जलाने के लिए प्रचुर परिमाण में चैला चीरने की ताकीद कर दी गई। राज को बुलाकर ड्योढ़ी की दीवारों की मरम्मत और उन पर सफेदी करने का आदेश हुआ। ग्वालों तथा गाय-भैंस पालनेवाले दूसरे लोगों पर दही और घी के लिए फरमान निकले। इस तरह, जो जिस योग्य था, उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर पर वैसा बोझ लादा गया—किन्तु लादा गया सब के सिर पर कुछ-न-कुछ जरूर। बाबू की बेटी का ब्याह है या ठट्ठा ?

फिर गाँवों की सरगर्मी और हलचल का क्या पूछना ?

एक पहर रात से ही मूसलों की धम्म-धम्म और चक्कियों की घर्र-घर्र—जिनमें कभी-कभी काँच की चूड़ियों की खन्खन् और कांसे के कड़ों की टन्टन् भी मिली होती थी—से सारा गाँव मुखरित हो उठता। कुम्हार की चाक अविरल गति से नृत्य करती, जिस पर उसकी थाप अपने थप्-थप् शब्द से ताल-सा देती रहती। बढ़ई के बसूले की खट्-खट् और लोहार की कुल्हाड़ी के ठायँ-ठायँ की कर्णकटुता को तेली के कोल्हू का चर-चों और ग्वाले के मटके का घर्र-घों बहुत अंशों में स्निग्ध और मधुर बनाने की चेष्टा करता। बाबू साहब की ड्योढ़ी से सटे, एक कमरे में दर्जी की सिंगर-मेशीन हरहराती रहती; दूसरी तरफ सोनार की हथौड़ी-छेनी खुट्-खुट् करती हुई सोने और चाँदी की निर्जीवता में सजीव चित्रण का प्रयत्न करती। राज की कन्नी भी खर खराती ही रहती। कहाँ तक गिनाया जाय, सारे गाँव का वायुमण्डल नाना प्रकार के शब्दों से आन्दोलित और प्रकम्पित रहता।

कोई दौड़ा हुआ तम्बू और शामियाने की मँगनी को जा रहा है, तो कोई कहीं से इत्रदान और गुलाबपास के गंगाजमुनी जोड़े ला रहा है। बाजेवाले और नाचवालियाँ, रोशनी और अतिश-बाजीवाले—सबको साइयाँ दी जा रही हैं। पुराने तालाबों की मरम्मत हो रही है; कुओं की कीचड़ निकाली जा रही है; टूटी सड़क दुरुस्त की जा रही है, बागों के गड्ढे-सड्ढे भर-भराकर घास-फूस छील-छालकर, उन्हें साफ-सुथरा बनाया जा रहा है। क्यों न हो ? इतनी बड़ी बरात आनेवाली है, उसके आरामचैन के लिए इतना भी न किया जाय ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू साहब के घर में भी सरगर्मी है—बाबू साहब बरात के ठहराने, खिलाने-पिलाने, दहेज देने आदि की स्कीमें बनाने में तल्लीन हैं, उनकी श्रीमती अपने दामाद को नाना तरह के उपहार और अपनी बेटी को अच्छी विदाई देने का प्रबन्ध कर रही है; उनकी पतोहू अपने नन्दोई के सामने किस रूप-रंग में जायगी, इसकी विवेचना गौर से कर रही है, उनकी छोटी बेटी चुहल और दिल्लगियाँ सोचने में लीन है। जिनके द्वारा वह अपने बहनोई को एकदम पराजित और लज्जित कर देगी, और उनकी वह बेटी—भावी दुलहन—किस-किस चीज और विषय में, किस-किस स्वप्न और कल्पना में मस्त है, कैसे बताया जाय ?

यों बाबू साहब के घर की सरगर्मी भी कुछ कम नहीं है; किन्तु उनके घर की सरगर्मी और इन गाँववालों की सरगर्मी में कितना अन्तर है। ऊपर की सूरत-शकल मिलने पर भी अन्दर में—हृदय में—कितना भेद है। एक तरफ उल्लास है, आनन्द है, मनुहार है—दूसरी ओर लाचारी है; बेवसी है, बेगारी है।

२

मखना—मातृ-भक्त मखना—अपनी बीमार माँ के सिरहाने बैठा अनवरत पंखा झलता और जबतब माँ को उसकी अपनी करनी के लिए कोस रहा था कि किसीने बाहर से पुकारा—"मखना ओ मखना-मखना रे—सुनता नहीं है; घर से बाहर आता है कि........"

मखना की माँ आज चार-पाँच दिनों से बीमार है। बीमार तो सभी पड़ते हैं, किन्तु इस बीमारी को मखना की समझ में, उसकी माँ ने स्वयं निमन्त्रण देकर बुलाया है, इसीलिए सब सेवा करता हुआ भी झल्लाया हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग दो सप्ताह पहले की बात है। उस दिन उसमें और उसकी पत्नी में कुछ कहा-सुनी हो गई थी इसी माँ को लेकर, स्त्री के मुँह से उसकी माँ के प्रति एक फूहड़ शब्द निकल गया। मातृ-भक्त मखना का क्रोध सातवें आसमान पर चढ़ गया। झोंटे में हाथ लगा, खींचकर उसे घर से निकाल बाहर किया, और एक धौल उसकी गर्दन पर जमाकर कहा—"आज से मेरे घर में पैर रखे तो जानोगी—जा अपने बाप के घर! बदमाश कहीं की।"

मखना अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था—बहुत ही ज्यादा। इस प्यार ने उसमें थोड़ा मान का भाव दिया था—ऐसा होता ही है। अपने मान पर पहले-पहल ऐसा आकस्मिक आघात होते देख वह आपे से बाहर हो गई, और सचमुच अपने मैके को चल दी।

माँ ने मखना को बहुत समझाया, किन्तु वह अपनी पत्नी को क्षमा न कर सका। वह भी चुप रही—अपने इकलौते बेटे का मिजाज वह जानती थी। क्रोध आने पर वह किसी का सुनने वाला नहीं। माँ ने सोचा, क्या हुआ, दो-चार दिन में क्रोध शान्त हो जायगा, तब फिर ससुराल जाकर वह बहू को बुला लायगा; अभी चुप्पी में ही खैर है।

इसके दूसरे ही दिन बाबू साहब का सिपाही एक मजदूर के सिर पर एक बोरा धान लिये पहुँचा और फरमान सुनाया कि आठ दिन के अन्दर इसका चिउड़ा कूटकर ड्योढ़ी पर पहुँचाना होगा। डेढ़ मन धान है एक मन चिउड़ा होना चाहिए, तौल में कमी हुई, तो खैर नहीं; चिउड़ा पतला हो; कन-भूसा जरा भी रहेगा, तो अच्छा न होगा। इतना कह, बोरा पटकवा, सिपाही चलता बना। वह कुछ सुनने-सुनाने को राजी न था—मालिक की ऐसी ही मर्जी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मखना भी बड़ा जीवट का आदमी था। पुष्ट शरीर पर कुश्ती ने और भी मद लाद दिया था। वह डेढ़ मन के बोरे अकेले सिर पर रख बाबू की ड्योढ़ी की ओर चल पड़ा।

"अन्धेर है दिन-भर बेगारी करते-करते मरा जा रहा हूँ; न खाना, न दाना; आज यहाँ जाओ, कल वहाँ जाओ; आज यह करो, कल वह करो। बाप रे, गाँव भर परेशान है। यह शादी क्या हुई, हमलोगों की जान साँसत में आ गई। अब यह चिउड़ा!—मेरी स्त्री नैहर चली गई, माँ बूढ़ी और बीमार है, कौन कूटेगा?—उहुँक यह न होगा, अपनी माँ के गले में खुद फाँसी न लगाऊँगा, न लगने दूँगा; नहीं; नहीं मुझी को मार डाल; यह उनकी बेटी है कि मेरा काल। एक दिन तो मरना ही है—इसी यज्ञ में सही......."

यों ही मन-ही-मन बराबरता जा रहा था कि पीछे माँ ने आकर उसके पैर पकड़ लिये। वह जानती थी कि इस धान के लौटाने का क्या नतीजा होगा?—आज ही बेटे से उसको हाथ धोना पड़ेगा! माँ की ममता उमड़ चली। आँगन से दौड़ी और आकर बेटा का पैर पकड़ बैठी।

माँ को इस प्रकार पैर पकड़ते देख वह सन्न हो गया। कुछ देर तक पत्थर की मूर्ति-सा अचल खड़ा रहा। फिर बोला—"तू क्या करती है पगली! मुझे जाने दे: मुझसे जितना बेगार करावें, मैं तुझे मरने न दूँगा।"

"इसमें मरना कहाँ है बेटा? बस एक मन तो कूटना है। एक पसेरी भी कर लूँगी, तो आठ दिन में खतम।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बड़ी खतम करनेवाली बनी है। एक वक्त रसोई बनानी पड़ती है, सो तो दम फूलता है, चिल्लाने लगती है कि बहू को बुला ला, बहू को बुला ला; और इन्हींसे चिउड़ा कूटा जायगा? नहीं, मैं बिना लौटाये नहीं छोड़ूँगा—जमींदार हैं, तो अपने घर के; बेगार लेंगे, या खाल खींचेंगे·······"

बुढ़िया ने ठुड्डी पकड़ ली—"ऐसा न करो बेटा! बाबू की बेटी तो मेरी भी बेटी ठहरी; क्या अपनी बेटी के ब्याह में मैं इतना भी न कर सकूँगी? मुनिया के ब्याह में तो अकेले ढाई मन चिउड़ा मैंने कूट लिया था। उस समय कहाँ थी तुम्हारी बहू? जैसी मुनिया मेरी बेटी वैसी बाबू की बेटी भी मेरी बेटी। मुनिया तो बाप की बेटी थी, यह धर्म की बेटी। चल मेरे लल्ला, लौट····" आदि नाना प्रकार के तर्क-वितर्क और आरजू मिन्नत के द्वारा मखना को लौटा लाई।

किन्तु लौटा लाना जितना आसान था, धान का चिउड़ा बनाना उतना आसान न था। तो भी लग पड़ी। ईंधन नहीं था, बगीचे से पत्ते बटोर लाई। कुम्हार से कह-सुन कर एक खपड़ी माँग लाई। अब अकेले तारना, भारना, घानी करना और कूटना। कभी चूल्हे-खपड़ी से झगड़ती, कभी ओखल-मूसल से युद्ध करती। बुढ़ापे का शरीर, थोड़ी ही देर में अँगुलियाँ ऐंठने लगतीं। हाथ झनझना उठते। किन्तु तोभी वह डटी रहती। बेगार से फुर्सत पा, जब कभी मखना घर आता तो इस प्रकार हँसकर बतियाती मानो आसानी से सब काम सम्पन्न हो रहे हैं। मखना को भी अचरज होता। खैर, किसी प्रकार अपने पर अत्याचार कर और मखना को धोखे में रख उसने चिउड़ा तैयार कर दिया। मखना भी उसे ड्योढ़ी पर तौलवा कर निश्चिन्त-सा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु मखना की माँ अपने बेटे को धोखे में डालकर भी प्रकृति को धोखा न दे सकी। अब प्रकृति ने अपने नियम के व्यतिक्रम का दंड चुकाना आरंभ किया। मखना की माँ बीमार पड़ी। चार-पाँच दिनों से वह शय्या पर बेहोश-सी पड़ी थी। अंग-अंग टूट रहे थे, बुखार उतरने का नाम ही नहीं लेता था; किन्तु ज्यों ही आज थोड़ा बुखार घटा कि मखना को शांत करने की कोशिश करने लगी। वह बताना चाहती थी कि बीमारी स्वभावत: हुई है, चिउड़ा कूटने के सबब से नहीं; किन्तु मखना को अब धोखे में नहीं डाला जा सकता था। झल्ला-झल्लाकर माँ को कोसता; कहता—"कर अब बेटी का ब्याह! कहाँ है बेटी? क्यों नहीं आकर दवा-दारू करती? धर्म की बेटी! बड़ी बेटी कहीं की। धनी की बेटी गरीबों की मौत होती है! वह बिना खाये तुझे न छोड़ेगी—हाँ! तू भी मरेगी, मैं भी मरूँगा। मैं तुझे अकेले मरने न दूँगा। समझी? मर तो।"

इसी प्रकार की झल्लाहट के बीच मखना के कानों में बाहर से पुकार की आवाज पहुँची। बोली से ही पहचान गया कि बाबू साहब का सिपाही है। ऐसे श्रुति-मधुर शब्द दूसरे किसके मुँह से निकल सकते थे? भर्राई हुई आवाज में इसने भी जवाब दिया—"मैं नहीं जाता, मेरी माँ बीमार है........"

"तुम्हारी माँ बीमार है तो क्या इसलिए बाबू साहब की बेटी का ब्याह रुक जायगा? चल, भरथुआ चौर से पुरइन के पत्ते लाना है; शाम तक लौट आयगा; चलता है........"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं चलता। बाबू साहब की बेटी का ब्याह नहीं रुकता तो क्या मैं किसी की बेटी के लिए अपनी माँ को मार दूँ। जाओ इसको दूसरा कोई देखनेवाला नहीं है, मैं नहीं जाता……"

इस सूखे कथन को इस रूखे ढंग से कहा था कि सिपाही दाँत पीसता हुआ ड्योढ़ी की ओर चल पड़ा।

[३]

ड्योढ़ी पर आकर सिपाही ने एक की दस-बीस बनाकर सुनाई। मुंशीजी बाबू साहब के कारबार के एकमात्र कर्त्ता-धर्त्ता हैं। मुंशीजी क्रोध से आग-बबूला हो गये और—"पाँच सिपाही जाकर, टाँग-टूँगकर उस हरामजादे को ले आओ।" यह हुक्म निकालने वाले ही थे कि रामधनी मुखिया बीच में पड़ गये। उन्होंने मुंशीजी को बहुत तरह से समझाया—"मखना अभी लड़का है, गदेल है; उसका बाप मनोहर ड्योढ़ी का वफादार असामी था, मखना भी सदा बेगार करता रहा है; सचमुच उसकी माँ बीमार है, तो भी उसने ऐसा नहीं कहा होगा; शायद सिपाही को सुनने में धोखा हुआ है, मैं अभी जाकर बुला लाता हूँ……"

रामधनी वृद्ध थे, गाँव के मुखिया थे; मुंशीजी ने उनकी बात मान ली। रामधनी अपनी लाठी टेकते मखना के घर आये, बहुत समझाया। माँ ने भी आजिजी प्रकट की ; खैर मखना राजी हो गया, और ड्योढ़ी पर आया। रामधनी साथ थे। उन्होंने मखना को रास्ते में ही समझा दिया था कि तुम वहाँ कुछ नहीं बोलना; जो हुक्म हो, चुपचाप मान लेना। मखना भी यही निश्चय करके आया था; किन्तु यहाँ तो दूसरा ही होना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंशीजी के सामने एक हट्टा-कट्टा नौजवान खड़ा था। उसकी चौड़ी छाती, मांसल बाँहों और चेहरे को देखकर मुंशीजी को आनन्द नहीं हुआ। जो एक धनी के लिए गुण है, गरीब के लिए घोर अवगुण। कौन नहीं जानता कि जब कहीं चोरी होती या डाके पड़ते हैं तो दारोगाजी आसपास के ऐसे नौजवानों को ही पहले पकड़ते हैं, जो गरीब होकर भी हट्टे-कट्टे होते हैं। मुंशीजी ने मखना को देखते ही समझ लिया कि यह जरूर बदमाश होगा! रुखाई से पूछा—"हूँ क्या तुम्हारा ही नाम मखना है ?"

मखना ने सिर हिलाकर जवाब दिया। मुंशीजी बोले—"अबे, बोलता क्यों नहीं, क्या गूँगा है ? क्या सचमुच तूने कहा था कि मैं नहीं जाता ?"

मखना ने स्वाभाविक स्वर से कहा—"जी हाँ।"

"जी-हाँ"—मुंशीजी का क्रोध ज्वालामुखी-सा यकायक भड़क गया। बोलते गये—"जी हाँ कहता है ? बदमाश, पाजी। क्यों तुमने ऐसा कहा ?"

"सरकार मैया बीमार........"

"तेरी........"

बस मुंशीजी ने एक ही साँस में कितनी ही गालियों की गोलियाँ दनादन बरसा दीं। मनुष्य की कौन बात, कोई भी ऐसा पशु-प्राणी नहीं बचा, जिसके साथ उसकी माँ का सम्बन्ध न जोड़ा गया। मुंशीजी बकते चले जा रहे थे, इधर मखना अवाक खड़ा था, वह सुनते ही सन्न हो गया। एक बुरा शब्द के कारण वह अपनी पत्नी—प्यारी पत्नी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को घसीट कर घर से निकाल चुका था। आज उसी माता की इज्जत यों सरे आम....इस भरी ड्योढ़ी पर—जहाँ गाँव भर के लोग इकट्ठे हैं—लूटी जा रही है, लुटाई जा रही है। एक बार उसने रामधनी की ओर घूरकर देखा—मानो उसकी आँखें कह रही हों—रामधनी चाचा, तुम्हीं आज मेरी माँ की इज्जत लुटवा रहे हो। फिर उसने प्रज्वलित आँखों को मुंशीजी की ओर करके कहा—"मुंशीजी, कहे देता हूँ, गालियाँ मत बकिए...."

"गालियाँ मत बकिए! बकूँगा तो क्या होगा? बोल, बोल, बोल तेरी........"

मखना के कानों ने सुना, उसकी माँ को न जाने क्या-क्या गन्दी गालियाँ दी जा रही हैं। उसका हृदय चलनी हो गया। उसके गरम मस्तिष्क से विचार-शक्ति भाफ बनकर उड़-सी गई। वह कहाँ है, यहाँ क्या हो सकता है—आदि बातों के सोचने की बुद्धि ही उसमें न रह गई। वह पागल-सा हो उठा! बिजली-सा कड़क कर बोला—"गालियाँ रोकिए; नहीं तो...."

"नहीं तो—नहीं तो—नहीं क्या.......क्या होगा, बोल पाजी, हरामजादा, सूअर का बच्चा........"

यह कहते हुए स्वयं बाबू साहब अपने कमरे से निकले। वह भीतर दालान के कमरे में थे; ओसारे पर मुंशीजी बैठे थे। मखना ओसारे के नीचे आँगन में खड़ा था। कमरे से निकल कर बाज की तरह वह मखना की ओर झपटे। पैर में खड़ाऊँ थी। जाते ही उसे उतारकर उसके सिर पर तड़ातड़ मारने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू साहब का आना और मारना पलक मारते हुआ। मखना नहीं जानता था कि बाबू साहब भीतर बैठे सब सुन रहे हैं। शायद रामधनी वगैरह भी नहीं जानते थे। बाबू साहब को देखते ही वह स्तम्भित-सा हो गया। यहाँ तक कि दो-तीन खड़ाऊँ खोपड़ी पर पड़ने पर भी वह अचल खड़ा था; किन्तु जब सिर से लहू की बूंदें टप-टप करके टपकने और उसके कपाल-गाल आदि को भिंगोती हुई जमीन पर गिरने लगीं तब जैसे वह कुछ चंचल-सा हो उठा। बाबू साहब उसके एकदम निकट खड़े खड़ाऊ मार रहे थे। इस बार ज्योंही उन्होंने खड़ाऊँ उठाकर उसके सिर पर पटकनी चाही, त्योंही उसने उस प्रहार को रोकने की नीयत से अपनी बाँह उस ओर बढ़ा दी। खड़ाऊँ सिर तक नहीं पहुँची; किन्तु इस प्रकार रोकने से प्रतिघात हुआ, उसे बाबू साहब—दुर्बलकाय, जीर्ण शरीर बाबू साहब—नहीं बर्दाश्त कर सके। वह ढिलमिला कर जमीन पर आ रहे। बाबू साहब को गिरते देख मखना भौंचक हो उठा। लपक कर उठाना ही चाहता था कि एक सिपाही ने उसके सिर पर जबरदस्त लाठी जमा दी।

फिर तो मारो-मारो का तुमुल-नाद होने लगा। दो-तीन आदमी बाबू साहब को लेकर ओसारे पर बिठा आये—क्योंकि उन्हें चोट-ओट तो आई नहीं थी। सिर्फ कमजोरी के कारण जरा लुढ़क गये थे। बाकी लोग सिपाही, नौकर, अमले, आदि—मखना पर प्रहार-पर-प्रहार करने लगे। लाठी, छड़ी, जूते, लात सब का विपुल प्रयोग किया जा रहा था।

लाठी-छड़ी-लात-जूते इन सबका विपुल प्रयोग किया ही जा रहा था कि इतने में उन्हीं में से एक आदमी चिल्ला उठा—"मर गया! मर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया !!" रामधनी अलग खड़े पागल से यह सब देख रहे थे। 'मर गया' यह आवाज सुनते ही दौड़े और मखना के शरीर पर लेट गये। इनके लेटने और 'कहीं मर न गया हो फिर तो कल से ही सुपरइन्ट, निस्पिट्टर और दारोगा धावा बोल देंगे', इस आशंका के कारण भी यह प्रयोग-प्रकरण जहाँ-का-तहाँ रोक दिया गया।

मखना का क्षत-विक्षत शरीर निर्जीव-सा पड़ा है। उस जगह की जमीन खून से रँग गई है। खोपड़ी एक जगह फट गई है, जिससे रक्त का अविरल प्रवाह चल रहा है। नाक और मुँह से भी खून निकल रहा है। जहाँ एक मिनट पहले हट्टा-कट्टा नौजवान था, वहाँ अब मांस का एक लोथड़ा-सा पड़ा है। रामधनी कभी उसके नाक दबाते और कभी मुँह में पानी देने की चेष्टा करते हैं। बाबू साहब तो अपने कमरे में पलंग पर जा लेटे हैं, जहाँ उन पर पंखा झला जा रहा है; किन्तु मुंशीजी इस घटना के गुरुत्व को—कहीं मर गया तो पुलिस के द्वारा कितनी परेशानियाँ उठानी पड़ेंगी, इस बात को—समझकर वहाँ खड़े उसे होश में लाने के लिए नाना तरह के उपचार बता रहे हैं। जिन निर्दय हाथों ने निष्ठुर प्रहार किये थे, वे अब कृत्रिम उपचार में लगे हैं। शायद तड़पने का तमाशा देखने के लिए !

(४)

चार दिनों से समूचे गाँव में धूमधड़ाका मचा हुआ है। बाबू साहब की बेटी के ब्याह की बरात आई है। ऐसी बरात इस जवार में कभी नहीं आई। गाँव के बुड्ढे, जवान, बच्चे, स्त्रियाँ, लड़कियाँ—सब बरात देखने में मग्न हैं। दूर-दूर के गाँवों से भी लोग दर्शक रूप में आते-जाते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथी, घोड़े, मोटर, बग्गी आदि की क्या गिनती ? नाच-गान का बाजार दिन-रात गरम रहता। रेडियो, कथक, लौंडे, सदा-सर्वदा छुन्नन् करते रहते। बहुरूपिये, भाँड़, मसखड़े दिन-रात हँसा करते। रात में थियेटर होता, अतिशबाजियाँ छूटतीं, हाहा-हीही से दिगन्त आन्दोलित रहता।

खाने-पीने की भरपूर व्यवस्था है। खिचड़ी-दही की कौन बात, दिन-रात गरमागरम पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ उड़ती रहतीं। नाना तरह की मिठाइयों की सुगन्ध से तमाशबीनों की नाक भरी रहती। खाने वालों की जीभ की हालत का क्या वर्णन किया जाय ?

बाबू साहब की उमंग की क्या कहना ? मुंशीजी के पैर तो जमीन पर पड़ते नहीं। यदि बाबू साहब इस महाभारत के दुर्योधन थे, तो मुंशीजी शकुनि। नौकर-चाकर सभी रंगीन कपड़े पहने उड़ते दीख पड़ते।

बाबू साहब के महल में सौन्दर्य और संगीत की गंगा-जमुना तरंग ले रही हैं। सास खुश हैं—योग्य दामाद पाकर; सरहज खुश है—सुघड़ ननदोई देखकर; सालियाँ व्यस्त हैं—रसिक बहनोई ले कर; दूलहिन मस्त है………

चारों ओर मस्ती, आनन्द, उन्माद, उल्लास का समुद्र लहरा रहा है।

किन्तु, गाँव में एक ऐसा भी घर है, जहाँ इस समय एक दूसरा ही समुद्र अपना तूफानी रूप दिखला रहा है—न जाने यह किसकी नाव डुबायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मखना उस दिन मरा नहीं; किन्तु जी गया घुलघुल कर मरने के लिए। जब कुछ उपचार के बाद उसे होश आया, रामधनी उसे उठाकर उसके घर ले गये। निस्सन्देह चलते समय मुन्शी जी ने चाँदी के कुछ चमचमाते टुकड़े रामधनी के हाथ में रख दिये कि इससे इसकी दवादारू करना; किन्तु रामधनी ने विनयपूर्वक उसे अस्वीकार कर दिया, कहा—"सरकार, अभी मेरे पास कुछ पैसे हैं, जरूरत पड़ेगी तो ड्योढ़ी पर हाजिर होऊँगा।" वे अनुभवी थे, जानते थे ये रुपये उदारतावश नहीं दिये जा रहे हैं, वरन् जिसमें किसी तरह पुलिस को खबर न लगे, इसके लिए यह घूस मिल रही है।

बेटे की यह हालत देखकर माँ की क्या हालत हुई होगी, कल्पना कीजिए। पहले तो वह चीख उठी। किन्तु तुरत ही अपने को जब्तकर वह बेटे की सेवा-शुश्रूषा में लग गई। न मालूम उसकी बीमारी कहाँ चली गई? न जाने उसमें यह शक्ति कहाँ से आ गई?

गाँव के दो-चार नवयुवकों ने थाने में खबर देने की चर्चा की, किन्तु बूढ़ों ने डाँट दिया। बाबू साहब से मुकदमा में कौन जीतेगा, फिर मुकदमे के लिए रुपये भी तो चाहिए।

इस दुस्संवाद को सुनकर मखना की पत्नी भी आ गई—ऐसा अवसर मान-मनौअल भी नहीं होता। दोनों सास-पतोहू दिनरात परिचर्या में लगी हैं। रामधनी भी वहीं बैठे रहते हैं।

देहात में परिचर्या ही क्या? कुछ लोगों ने अस्पताल में ले जाने की बात चलाई, किन्तु इसकी खबर ज्यों ही ड्योढ़ी में पहुँची कि बाबू साहब ने खुद रामधनी को बुलाकर डाँट दिया। अस्पताल में जाने से पुलिस पर भेद खुल जाने का डर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मखना की हालत दिन-दिन खराब होती गई।

वह दिन-रात कराहता रहता। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, घुलती गई, कराहना बढ़ता गया। उसके अंग-अंग कचोटते रहते, रहकर टीस उठती–मानो सैकड़ों सूइयाँ एक साथ चुभोई जा रही सदा बुखार—जोरों का बुखार—बना रहता। वह प्राय: बेहोश रहता। वह बेहोशी में अंटसंट बका करता–मैया....चिउड़ा....सिपाही मुंशीजी....तेरी....बाबूसाहब खड़ाऊँ....मारो–मारो रामधनी चाचा– इन्हीं कुछ शब्दों के इर्द-गिर्द उलटा–सुलटा उसका बकना होता। कभी हँसता, कभी रोता, कभी उत्तेजित होकर खड़ा होने की कोशिश करता तीनों प्राणी सम्हाल के रखते और रोते–पत्नी रोती, माँ रोती और रामधनी चाचा।

किन्तु आज अकस्तात् मखना की हालत अच्छी देखी गई। वैसी कराह है, न छटपटी। थोड़ी चेतना के चिह्न भी दीख पड़े बुखार कुछ उतर गया था। रात उसे नींद भी आई। भोर में ज्यों उसने आँखें खोली माँ ने उत्सुकता-पूर्वक हौले से पूछा—"बेटा, अच्छा है न ?"

मखना ने सिर हिलाकर 'हाँ' की सूचना दी। माँ जैसे निहाल गई। आनन्द से उसकी आँखें चमकने लगीं—जिनके कोने पर पानी कुछ बूंदें भी डबडबा आईं। फिर मखना जैसे कुछ बोलने का प्रयत्न किया किन्तु बोल न सका। बेचैनी की एक रेखा-सी उसकी ललाट खिंच आई। माँ इसको ताड़ गई। कुछ पूछना ही चाहती थी कि मखना ने इशारा से पानी पिला देने का भाव जतलाया। माँ ने अस्तव्यस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर बहू से पानी लाने को कहा। बहू ने झटपट पीतल के एक कटोरे में औंटा हुआ पानी लेकर सास के हाथ में दे दिया। माँ ने सोये-सोये ही पानी पिला देना चाहा। किन्तु मखना ने उठाकर पिलाने का संकेत किया। सास-बहू ने मिलकर यत्न से उठाया—रामधनी दिशा-जंगल को गये थे। उठकर ज्योंहीं उसके मुँह से कटोरा लगाया कि मखना को जोर से एक हिचकी आई। एक दो तीन। तीसरी हिचकी के साथ-ही-साथ उसके मुँह से जमे हुए खून का एक लोदा नीचे गिर गया। उस लोदे को देखते ही सास-बहू अधीर हो गईं। माँ सिसकियाँ भरती हुई, 'बेटा-बेटा' कह ही रही थी, कि इधर बेटे की आँखें उलझ गईं। वह लुढ़ककर उसकी गोद में गिर पड़ा।

आज बाबू साहब की बेटी की बरात वापस जानेवाली है। रात से ही महफिल जमी है, जो भोर तक भी खतम नहीं हुई। रंग-गुलाल उड़ रहे हैं, गुलाब-इत्र का छिड़काव हो रहा है, पान-इलायची कचरे जा रहे हैं। समधी-समधी मिल रहे हैं—हाहा-ही-ही का बाजार गरम है। नाच-गान का समा बँधा है—हँसी-दिल्लगी के फव्वारे छूट रहे हैं। समूचा गाँव इस उत्सव-तरंग में डुबकियाँ ले रहा है। इसी गाँव में, इसी समय एक घर में इसी बरात के चलते, जो एक प्रलय-दृश्य उपस्थित है उसकी ओर कौन ध्यान दे?

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

[सन् १९०४—]

भागलपुर जिले के रामपुरडीह नामक ग्राम ने श्री जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त किया है। द्विजजी कवि, कहानीकार, आलोचक और वक्ता हैं।

ये दो विषयों में एम० ए० हैं। हिन्दी के समान ही इन्हें अँगरेजी भाषा पर भी अधिकार है। ये छात्र-जीवन से ही कविताएँ और कहानियाँ लिखते आये, किन्तु इधर बहुत कम लिखते हैं। जब ये काशी विश्वविद्यालय के छात्र थे तभी इनका सम्पर्क प्रेमचन्द से हुआ। प्रेमचन्द ने इनकी प्रतिभा की सराहना की है। ये बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति रह चुके हैं।

ये कई वर्षों तक राजेन्द्र कालेज, छपरा में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। इन दिनों पूर्णिया कालेज के प्रिंसिपल हैं।

इनकी कहानियाँ पीड़ितों और अभाव-ग्रस्तों की दशा के मर्मस्पर्शी चित्र खींचती हैं। भाषा की मिठास कारुणिक भावों को द्रवीभूत कर समवेदना उत्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती है।'किसलय' नाम से इनकी कहानियों का एक संग्रह वर्षों पूर्व प्रकाशित हो चुका है।

प्रस्तुत कहानी, विशेष कर विद्यार्थियों को अपने निर्धन सहपाठियों के अभाव-अभियोगों से ही नहीं परिचित करायगी, प्रत्युत उन्हें वह प्रेरणा भी प्रदान करेगी जो निर्धनता से चारित्रिक दृढ़ता और पर-दुःख-कातरता के रूप में चन्द्रमणि ने प्राप्त की थी।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहपाठी

रात के बारह बजे होंगे। घनश्याम नाटक देख कर लौट रहा था। एक जगह पहुँच कर उसने देखा, कोई विद्यार्थी सड़क की पटरी पर बिजली की रोशनी के नीचे बैठा हुआ कुछ लिख रहा है। चुपचाप वह उसके पीछे जा खड़ा हुआ। विद्यार्थी अपने लिखने में इस तरह लीन हो रहा था कि उसे किसी के आने-जाने की कोई खबर नहीं थी। आश्चर्य भाव से, लगभग दो मिनट तक उसी तरह निस्तब्ध खड़ा रहने के बाद, घनश्याम की विह्वल वाणी काँप उठी—"चन्द्र !"

चन्द्रमणि ने चौंक कर पीछे देखा। उसी समय वह उठकर खड़ा हो गया और चकित होकर बोला—"घनश्याम ! इस समय तुम यहाँ कैसे ?"

"घर जा रहा था"—घनश्याम ने आर्द्र स्वर में कहा—"इस खम्भे के पास, इतनी रात को तुम्हें देख कर उतर पड़ा। क्या प्रतिदिन तुम इसी जगह लिखा-पढ़ा करते हो ?"

"हाँ"—कह कर चन्द्रमणि ने अपना सिर झुका लिया।

"तुम रहते कहाँ हो चन्द्र ?" उसका हाथ पकड़ते हुए घनश्याम ने पूछा—"मुझे अपने कमरे में ले चलोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटरी की एक दूसरी ओर एक गली थी। चद्रमणि ने कहा—"इसी गली में एक कच्चा घर है, उसी में रहता हूँ। तुम वहाँ जाकर क्या करोगे घनश्याम ?"

"क्या कर सकूँगा चन्द्र !"—उसने एक गहरी उसाँस छोड़ कर जवाब दिया—"मैं थोड़ी देर वहाँ जाकर बैठना चाहता हूँ, तुमसे कुछ बातें किया चाहता हूँ। चलो मुझे अपना घर दिखा दो।"

चन्द्रमणि ने अपनी किताबें सँभालीं, लिखने का सामान उठाया और कहा—"चलो।"

(२)

एक छोटा-सा घर था। एक टूटी हुई चौकी, कुछ कपड़े, थोड़ी-सी किताबें, और कोने में पड़े हुए अनाज के कुछ बर्तन। यही उस घर की सम्पत्ति थी। सभी चीजें अपने-अपने स्थान पर सँभाल कर रक्खी हुई थीं, गन्दगी का कहीं नाम नहीं था। इसी में चन्द्रमणि रहता था।

घर में घुसते ही उसने दीपक जलाया और अपने अतिथि का हाथ पकड़ कर कहा—"आओ भाई, इसी चौकी पर बैठ जाओ। गरीब के घर आये हो, कष्टों की कमी न होगी।"

घनश्याम का हृदय उमड़ आया। चौकी पर बैठते हुए उसने पूछा—"तुम अकेले हो चन्द्र ?"

"हाँ।"

"तुम्हारे घर के और लोग कहाँ रहते हैं ?"

"स्वर्ग में।"

"स्वर्ग में ! क्या तुम्हारे माँ-बाप नहीं हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं।"

"तुम खाते-पीते कैसे हो?"

"स्वयं उपार्जन करके, स्वयं भोजन बनाकर।"

सन्नाटे में आकर घनश्याम थोड़ी देर तक चुप रहा, फिर उसने पूछा—"दोनों समय अपने ही हाथों से भोजन बनाते हो?"

"मैं अपना सब काम अपने ही हाथों से करता हूँ घनश्याम!" चन्द्रमणि ने उत्तर दिया—"इस दुनिया में मैं अकेला अवश्य हूँ, पर असहाय नहीं हूँ। मनुष्य को भगवान ने असहाय बनाया ही नहीं। जो अपने हाथ-पैर से पूरा काम लेना नहीं जानता, वह पराधीन है, वही दुखी है, असहाय है।"

"तुम्हारा खर्च कैसे चलता है चन्द्र?"—घनश्याम ने उसके हाथ पकड़ कर बड़ी नम्रता से कहा—"क्षमा करना, यह प्रश्न तो पूछना नहीं चाहिए, पर मैं जानता हूँ, इससे तुम दुःखी न होगे।"

"दुःखी होने की इसमें कौन-सी बात है भाई!"—चन्द्रमणि ने उत्तर दिया—"निर्धनता कोई पाप नहीं है। मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। जिस गली में अभी तुम पधारे हो, उसमें सभी मजदूरी करके ही अपनी जीविका चलाते हैं। मैं भी उन्हीं में से एक हूँ।"

"तुम मजदूरी करते हो?"—घनश्याम ने कुछ आश्चर्यमिश्रित दुःख के साथ पूछा।

"हाँ, मैं मजदूरी करता हूँ।" चन्द्रमणि ने कहा—"अपने इस छोटे से मुहल्ले की नालियाँ साफ करता हूँ। इसकी गलियों में झाड़ू लगाता हूँ। सायंकाल दो घंटे तक मुहल्ले के मजदूर-बच्चों को पढ़ाया करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही मेरी जीविका का उपाय है, इसी से जो कुछ मिल जाता है उसी पर अपना निर्वाह करता हूँ।"

"और इस हालत में रहते हुए भी तुम सदैव अपनी कक्षा में प्रथम रहते हो?"—घनश्याम ने आश्चर्य-विस्फारित नेत्रों में पानी भर कर पूछा।

"यह भगवान की कृपा है और तुम मित्रों का आशीर्वाद।"—कह कर चन्द्रमणि ने सिर झुका लिया।

"चन्द्र!"

"भाई!"

"तुम मेरी एक विनती सुनोगे?"

"आज्ञाकारी तो मैं तुम्हारा सदा से हूँ घनश्याम!"

चन्द्रमणि ने प्रेम से उसका हाथ पकड़ कर पूछा—"तुम आज इस तरह मुझे क्यों लज्जित कर रहे हो? कहो क्या चाहते हो?"

"तुम मेरे घर पर चल कर मेरे साथ रहो।"—घनश्याम ने प्रार्थना के स्वर में कहा—"मैं तुम्हारी सेवा करके अपने को धन्य बनाऊँगा! मुझे अपने जीवन को सुधारने का अवसर दो। चलो, मेरे साथ घर चलो।"

प्यार की यह अयाचित निधि पाकर चन्द्रमणि विह्वल हो उठा। उसने उसे गले लगा कर उत्तर दिया—"घनश्याम! मेरी दीनता दयनीय नहीं है। तुम मुझे जिस प्रकाश में ले जाना चाहते हो उसका तेज मेरी ये आँखे न सह सकेंगी। कदाचित् भगवान मुझे विशेष प्यार करते हैं, इसलिए उन्होंने मुझे इतना गरीब बनाया है। उनकी इच्छा है कि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी अवस्था में रहकर अपने को उनके योग्य बनाऊँ। तुम मुझे उनकी इस इच्छा के विरुद्ध ले चलने का उपक्रम न करो। चुपचाप इसी झोपड़ी में रह कर अपना काम करने दो। मेरे प्रति तुम्हारे हृदय में इतना स्नेह है, इसीको मैं बहुत समझता हूँ। इससे अधिक मुझे और कुछ न चाहिए।"

घनश्याम सिसक-सिसक कर रो रहा था। चन्द्र ने फिर कहा—"तुम इस तरह मुझे विह्वल न बनाओ भाई! कभी-कभी मेरी झोपड़ी में आ जाया करो, इसीसे मैं सुखी रहा करूँगा। जाओ, घर के लोग चिन्तित हो रहे होंगे।"

घनश्याम आँसू पोंछता हुआ अपनी गाड़ी में जा बैठा।

(३)

"क्या मुझे तुम सचमुच प्यार करते हो घनश्याम?"

"हाँ, कहने का साहस नहीं होता चन्द्र!" घनश्याम ने कुछ व्यथित होकर उत्तर दिया—"मैं तुम्हारे किस योग्य हूँ कि तुम्हें सचमुच प्यार करने का दावा करूँ?"

"तो क्या तुम मुझपर दया करते हो?"

"नहीं, उसका पात्र तो मैं स्वयं हूँ"—घनश्याम ने व्यग्र होकर उत्तर दिया—"इससे अच्छा तो तुम्हारा पहला ही प्रश्न था। कहो साफ-साफ कहो, तुम आज मुझसे इस तरह की बातें क्यों कर रहे हो?"

"पहले बता दो, मेरे लिए तुम्हारे हृदय में कोई जगह है?"

"यदि मैं इसका उत्तर 'हाँ' में दूँ तो?"

"तो मैं तुमसे कुछ माँगूँगा, दोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"तो तुम मुझे एक वचन दो।"

"माँगो।"

"वचन दो कि आज से तुम शराब न पिओगे।"

घनश्याम उसके पैरों पर गिर पड़ा और रोता हुआ बोला—"आज तुम्हारे सामने आने के पहले ही मैं इसकी प्रतिज्ञा कर चुका हूँ चन्द्र! मुझे इसकी चाट नहीं है, मैंने बुरी संगत में पड़ कर ऐसा पाप किया। इसके लिए जनम भर पछताऊँगा। मुझे क्षमा करो, अपने योग्य बनाओ।"

चन्द्र ने उसे उठाकर गले लगा लिया और पूछा—"सिगरेट भी पीते हो?"

"हाँ, उसी की दुर्गन्ध छिपाने के लिए।"

"इसे भी छोड़ दो तो तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँ।"

"मुझे अपनी शरण में ले लो।"—यह कह कर वह अपने मित्र की छाती से लिपट गया और रोता हुआ बोला—"अब से किसी भी बुरी लत को मैं अपने पास न फटकने दूँगा।"

"नाटक, सिनेमा और मिठाइयों के पीछे पैसे बरबाद कर तुम अपने स्वास्थ्य को चौपट किये जा रहे हो"—चन्द्रमणि ने कहा—"अब भी तो इन प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करो! पास में पैसे हों तो उनका सदुपयोग होना चाहिए।"

"अब से तुम्हें इसकी भी शिकायत न रहेगी।"—कह कर घनश्याम ने बड़ी कारुणिक दृष्टि से अपने मित्र की ओर देखा। उसकी सजल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँखें उसकी समस्त दुर्बलताओं के लिए क्षमा माँग रही थी, उसका मुख-मण्डल उसकी समस्त प्रतिज्ञाओं के पालन करने का विश्वास दिला रहा था।

उसी दिन से घनश्याम ने बुरी संगत छोड़ दी, अपनी बुरी आदतें छोड़ दीं। चन्द्रमणि की छाया उससे मलिन न हो जाय, इसी भय से वह पल-पल पर अपनी पवित्रता की परीक्षा लेता, कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे उसका जीवन-सौन्दर्य थोड़ी देर के लिये भी फीका पड़ जाय। इसका एक प्रत्यक्ष फल तो यह हुआ कि वही घनश्याम, जो सदैव कक्षा में सबसे पिछड़ा रहता था, उस साल की परीक्षा में सबसे आगे निकल गया।

चन्द्रमणि उससे एक नम्बर के लिए पीछे रहकर भी बड़ा प्रसन्न था। क्यों न होता? घनश्याम और उसमें कोई भिन्नता तो थी नहीं। दोनों दो शरीर एक प्राण हो रहे थे।

(४)

यों तो सारे शहर में हैजा फैल चुका था, पर मजदूरों के उस मुहल्ले में, जहाँ चन्द्रमणि रहता था बीमारी ने विकराल रूप धारण कर लिया था। शहर के लोग एक-एक करके भागने लगे। घनश्याम के माँ-बाप ने भी जब शहर छोड़ने की तैयारी की, तो उसे बड़ा दुःख होने लगा। उसने कहा—"माँ! मैं चन्द्र के पास जाता हूँ। उस मुहल्ले में वह अकेला ही काम कर रहा है, मैं उसकी मदद करूँगा।"

"पागल हो गये हो क्या बेटा?"—माँ ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ माँ ! उसके बिना इस समय बहुत पागल हो उठा हूँ।" मुझे तुम लोगों के साथ नहीं जाना है। मैं वहीं जाकर रहूँगा और उसे थोड़ी-बहुत सहायता पहुँचाऊँगा। तुमलोगों को जहाँ जाना हो, जाकर रहो।"

उसकी माँ उधर उसके पिता जी को बुलाने गई, इधर घनश्याम घर से बाहर निकल गया।

मजदूरों का वह मुहल्ला श्मशान से भी अधिक भयावह मालूम हो रहा था। गली में घुसते ही उसने चन्द्र के कराहने की आवाज सुनी। अस्त-व्यस्त भाव से वह उस घर में घुस गया। देखा एक स्त्री उसकी सेवा कर रही है और वह रोग के कारण विवर्ण होकर तड़प रहा है।

घनश्याम को देखते ही वह स्त्री बोल उठी—"आप इस आग में क्यों कूदने आये बाबूजी ! इन्हें देखकर आप क्या कीजिएगा ? यही तो इस मुहल्ले के सब कुछ थे। हमारे ही बाल-बच्चे की सेवा करते-करते आज ये भी हमें अनाथ बनाकर जा रहे हैं ! इन्हें अब हम रोक तो सकते नहीं ! आप क्यों यहाँ आये ? आप हैं कौन ?"

"मैं इनका सहपाठी हूँ।"—कहकर घनश्याम रोगी के पास बैठ गया और सजल स्वर में बोला—"चन्द्र !"

रोगी ने एक बार अपने मित्र की ओर देखा और बड़े कष्ट से धीरे-धीरे कहा—"मुझे अब विदा करो; इन गरीबों को न भूलना।"

"चन्द्र !"—कह कर घनश्याम उसके गले से लिपट कर बच्चों की तरह रोने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्र ने किसी तरह अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं। थोड़ी ही देर में उसने हिचकियाँ लीं और आँखों का अंतिम परदा गिरा दिया।

इसी समय घनश्याम के पिता भी उसी घर में घुस आए और अपने बेटे को सँभालते हुए बोले—"इस तरह मेरा सत्यानाश क्यों कर रहे हो ? चलो, जल्दी यहाँ से चले चलो।"

घनश्याम ने रोते ही रोते कहा—"बाबूजी ! ईश्वर के लिए मुझे अभी यहीं रहने दीजिए। मेरा चन्द्र जो काम अधूरा छोड़ गया है, उसे पूरा किए बिना मैं न मरूँगा।"

—❀—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशपाल

यशपालजी का जन्म पंजाब में हुआ। ये इस युग के एक महान् क्रान्तिकारी कथाकार हैं। इनकी कहानियों और उपन्यासों ने हिन्दी के कथासाहित्य में युगान्तर उपस्थित कर दिया है।

इनका जीवन एक क्रान्तिकारी तथा साहित्यिक का जीवन रहा है। ये कई बार जेल जा चुके हैं। इनकी कहानियाँ भारत की प्रायः सभी भाषाओं एवं कई विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। ये विदेश-भ्रमण भी कर चुके हैं। इन दिनों लखनऊ में रहते हैं।

देशद्रोही, दादा कामरेड, दिव्या, मनुष्य के रूप आदि इनके मुख्य उपन्यास हैं। पिंजरे की उड़ान, अभिशप्त, भस्मावृत्त चिनगारी, फूलों का कुरता, ज्ञानदान आदि इनके मुख्य-कहानी-संग्रह हैं।

इनकी कहानियों में मानव समाज की बाहरी-भीतरी गाँठों के खोलने का सतत प्रयास तथा स्वस्थ-सन्तुलित जीवन का आग्रह है। प्रौढ़ भाषा, चुस्त शैली, व्यापक सहानुभूति नव-निर्माण—इनकी कला की विशेषता है।

प्रस्तुत कहानी में बाल-चरित्र का चित्रण करने के बहाने भारत के आलस्य-भरे सन्तोष और अकर्मण्यता के प्रतीक भाग्यवाद पर एक गहरा व्यंग्य है। संघर्ष से जी चुराकर भगवान् के भरोसे निश्चेष्ट पड़े रहने पर उज्ज्वल की भविष्य की आशा करना निरा पागलपन नहीं तो और क्या है?

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परलोक

मल्ली की माँ ने कहा—"हाँ-हाँ बाबा ! ऐसा लड़का नहीं देखा।"

मल्ली की माँ का कहना ठीक है। वह इसी प्रतीक्षा में है कि किस दिन मट्टू को छठा बरस लगे और वह उसे स्कूल भेजकर चैन की साँस ले।

मट्टू पाँचवें बरस में है और मल्ली आठवें में, परन्तु उसे हर बात में भाई से हार माननी पड़ती है; उसका अत्याचार सहना पड़ता है।

माँ का आँचल धरे मट्टू किसी बात के लिए जिद कर रहा था और मल्ली छत पर खड़ी पतंगों का तमाशा देख रही थी। एक पतंग आकर गिरी। उल्लास से कुलक कर मल्ली चिल्लाया—"अहा जी पतंग !!"

आवाज सुनते ही मट्टू माँ का आँचल छोड़ गोली की तरह ऊपर पहुँचा। "मैं लूँगा, मैं लूँगा" कह कर वह बहिन से पतंग छीनने लगा। मल्ली पतंग को दोनों हाथों से सिर के ऊपर थाम कर सहायता के लिए चिल्लाने लगी—"माँ, माँ, मट्टू पतंग छीन रहा है।"

चीखों-पुकार की कुछ भी परवाह न कर मट्टू मल्ली की धोती और चोटी खींचकर उसे हाथ नीचे करने के लिए विवश करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा। मल्ली का बावेला सुन, माँ ने पुचकार कर मट्टू को नीचे आने के लिए कहा, बहिन को तंग न करने का उपदेश दिया, फिर पीटने की धमकी दी।

इन सब को कुछ भी परवाह न कर मट्टू पतंग लेने के लिए मल्ली के बाल नोचने लगा, उसके बदन में चिकोटियाँ भरने लगा।

आखिर मल्ली रो पड़ी। माँ ने पुचकार कर कहा—"मेरी रानी बेटी तू दे दे, पतंग इस दुष्ट को दे दे, तू मेरी रानी बेटी है, यह बड़ा चाण्डाल है। अच्छा आ जाने दे इसके पिता जी को, इसे ऐसा पिटवाऊँगी कि सारा बदन सूज जायगा। शाबाश, यह इसे दे दे, तू बड़ी रानी है। तुझे मैं बाजार से नई बड़ीसी पतंग मँगवा दूँगी।"

मल्ली ने माँ का कहना मान पतंग दे दी। माँ ने कहा—"मल्ली अच्छी है इसे रबड़ की गुड़िया ला दूँगी।" लड़की रोती हुई बड़ी माँ के पास आ बैठी और मट्टू उछल-उछल कर पतंग फाड़ने लगा।

एक दिन नवम्बर के महीने में जगन ने बेमौसिम के बहुत बढ़िया चार आम भेजे। मट्टू टोकरी को देखते ही उसे पकड़ बैठा। माँ ने हजार यत्न किया कि लड़के का ध्यान बँट जाय और आमों को छिपा दें और मल्ली के स्कूल से लौटने पर दोनों को एक साथ दें। सब छल-बल कर माँ हार गई। मट्टू ने टोकरी को तब छोड़ा जब दोनों हाथों में एक-एक आम ले लिया। शाम को मल्ली के स्कूल से लौटने पर बड़े यत्न से रखा हुआ एक आम माँ ने निकाल कर उसे दिया और कहा—"जा उधर जाकर खा, कहीं वह शैतान न आ जाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु मट्टू से मल्ली को कौन बचा सकता है? न जाने कहाँ से झपटता हुआ वह आया और आम मल्ली के हाथ से छीन लिया।

मल्ली चिल्लाकर रोकने लगी। माँ ने रसोई में से बहुत डाँटा, धमकी दी, रस्सी से बाँध कर पीटने को कहा, फटकारा, जितनी देर में घटनास्थल पर पहुँची, मट्टू ने हाथ, मुँह और कपड़े सब खराब कर वह आम समाप्त कर दिया। मल्ली करुण स्वर में रोने लगी।

सुनकर मुझे भी बहुत दया आई। हमने मल्ली को बहुत प्यार किया; पुचकारा और बहुत-सी मिठाई और फल ला देने का वायदा कर उसे बहला दिया।

अगले दिन मल्ली गुड़ियों का गीत गा-गा कर अपनी नई गुड़ियों को रंगीन पोशाक पहना रही थी। मट्टू को गुड़िया पसंद आ गई दोनों हाथों से गुड़िया को छाती से लगाकर मल्ली ने गुड़िया देने से इन्कार कर दिया। मट्टू ने धमाधम मल्ली की पीठ पर घूँसे जमाने शुरू कर दिये।

रोना सुन माँ झपटी हुई आई; यह देख मट्टू फर्श पर लोट गुड़िया लेने के लिए जिद करने लगा। समझाने-बुझाने का कुछ फल न हुआ, आखिर गुड़िया मट्टू को दिला दी गई और मल्ली को नये-नये खिलौने मँगा देने का वायदा कर दिया गया।

मल्ली सब अन्याय अत्याचार सहती है, उसे मिलता है केवल वायदा और आश्वासन।

मट्टू वायदे या आश्वासन की कुछ चिन्ता नहीं करता। जो देखता है तुरन्त झपट लेता है। मौज करता है और मल्ली बड़ी-बड़ी कातर आँखों से ताक-ताक कर आशा करती रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सोचता हूँ इन दोनों में कौन सफल है ?

मल्ली की माँ कह रही थी—"तुम इस शैतान को स्कूल में भरती करा दो।"

हँस कर मैंने कहा—"अभी रहने दो, कमजोर हो जायगा।" प्रत्युत्तर में उसने कहा—"ओफ ऐसा शैतान लड़का! और शैतान सुडौल लड़के को पेट से जन्म देने के अभिमान में उसका हृदय फूल उठा।"

उसी समय नीचे पुकार सुन उसने कहा—"बाबा हाँ, इन फकीरों के मारे बैठने नहीं मिलता। ननकू कह दे—अभी जाय, हाथ खाली नहीं है।"

ननकू ने मालकिन का संदेशा छत पर से ही सुना दिया। उसके उत्तर में फकीर ने नीचे से कहा—"भाई तेरे मालिक की खैर, दूध-पूत की खैर, यहाँ ताँबे का पैसा देख सोने का पैसा देगा।"

दूध-पूत की खैर की बात सुन कर मल्ली की माँ की कठोरता पिघल ही रही थी कि ताँबे के पैसे के बदले सोने के पैसे की बात सुनकर वह चली। उसने कहा—"भाई ननकू, अभी थक कर बैठी हूँ जा उसका झोली में चुटकी डाल आ।"

देखता हूँ, मेरी आठ वर्ष की भोली-भाली लड़की ही भविष्य की आशा, सांत्वना और आश्वासन पर नहीं जीती। उसकी चतुर पक्की माँ भी भविष्य की सांत्वना का भरोसा रखती है। फकीर को चुटकी देती है, ब्राह्मण भोजन कराती है, अनाथालय को चन्दा देती है; व्रत रखती है और मल्ली की माँ ही क्या; हम सब भारतवासी ही भविष्य की आशा पर जीते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परलोक में सुख भोग करेंगे, अगला जन्म सुखमय होगा इसी आशा में हम इस जीवन की कदर्य अवस्था को सह जाते हैं। सांसारिक पदार्थों में आसक्त होने से परलोक-प्राप्ति में बाधा होगी; इसलिए हम उस ओर ध्यान नहीं देना चाहते। मन में स्वभावतः समृद्धि की इच्छा होती है परन्तु हम उसे समझते हैं, लिप्त होना अच्छा नहीं। मार पड़ती है तो कहते हैं—भगवान देखते हैं, समझेंगे।

देखता हूँ यह सम्पूर्ण जाति ही मल्ली की भाँति भविष्य पर जी रही है। और दूसरे लोग (यूरोप) मट्टू की भाँति आज के मतलब की बात सोचते हैं।

सोचता हूँ—भविष्य के हजारों वायदों को पाकर भी जैसे मल्ली मट्टू की अपेक्षा कभी अधिक सफल न हो सकेगी, उसी तरह भगवान भी भारतवासियों की भविष्य-आशा का क्या करेंगे ?

यूरोप को देखकर उसका मन प्रसन्न ही होगा और जिस तरह मैं मट्टू को देखकर कुछ नहीं कह सकता, उसी तरह भगवान यह यूरोप को कहेंगे—"शावाश बेटे !"

और भारत को पुचकार कर कहेंगे—घबड़ाओ नहीं, तुम्हारे लिए परलोक है।

लेकिन परलोक में भी—अगर परलोक है—तो वहाँ भी यह भगवान होंगे और यूरोप होगा मट्टू और हम होंगे मल्ली।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलिनविलोचन शर्मा

[सन १६१६–१६६१]

नलिनविलोचन शर्म्मा का जन्म पटना में हुआ। ये स्वनामधन्य स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा के सुपुत्र थे। इन्हें अंग्रेजी, फ्रेंच, संस्कृत, बंगला आदि देशी-विदेशी कितनी ही भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त थी। ये अंग्रेजी और हिन्दी में समान सामर्थ्य के साथ लिखते थे। ये दो विषयों (संस्कृत और हिन्दी) में एम० ए० थे और पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष थे। ये बिहार-हिन्दी साहित्य-सम्मेलन से प्रकाशित होनेवाले मासिक पत्र 'साहित्य' के सम्पादक तथा उसके महामंत्री भी थे।

शर्मा जी ने कहानियाँ और आलोचनाएँ लिख कर प्रचुर यश अर्जित किया। इस युग के प्रतिनिधि आलोचकों में इनकी गणना है। 'विष के दाँत' और 'सत्रह पूर्व असंगृहीत छोटी कहानियाँ' के नाम से इनके दो कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

इनकी कहानियाँ प्रायः मनोवैज्ञानिक हैं। कहानियों की भाषा की कसावट, चित्रण, मनोभावों का विश्लेषण, व्यंग्यों की सजीवता आदि दर्शनीय हैं।

प्रस्तुत कहानी बिना किसी 'वाद' का सहारा लिए एक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण उपस्थित करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष के दाँत

सेन साहब की नई मोटरकार बँगले के सामने बरसाती में खड़ी है, काली चमकती हुई, स्ट्रीमलाईड जैसे कोयल घोंसले में कि कब उड़ जाय। सेन साहब को इस कार पर नाज है--बिलकुल नया मॉडल, साढ़े सात हजार में आई है। काला रंग, चमक ऐसी कि अपना मुंह देख लो। कहीं एक धब्बा दीख जाय तो क्लीनर और शोफर की शामत ही समझो। सेन साहब की सख्त ताकीद है कि खोखा-खोखी गाड़ी के पास फटकने न पाय।

लड़कियाँ तो पाँचों-की-पाँचों सुशील हैं; पाँच-पाँच ठहरी और सो भी लड़कियाँ! तहजीब और तमीज की तो जीती-जागती मूरत ही हैं। मिस्टर और मिसेज सेन ने उन्हें क्या करना चाहिए, यह सिखाया है या नहीं, क्या-क्या नहीं करना चाहिए इसकी उन्हें ऐसी तालीम दी है कि बस! लड़कियाँ क्या हैं, कठपुतलियाँ हैं और उनके माता-पिता को इस बात का गर्व है। वे किसी चीज को कभी तोड़ती-फोड़ती नहीं। वे दौड़ती हैं और खेलती भो हैं, लेकिन सिर्फ शाम के वक्त— क्योंकि उन्हें सिखाया गया है कि ये बातें उनकी सेहत के लिए जरूरी हैं, वे ऐसी मुस्कराहट अपने होठों पर ला सकती हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी की तारिकाएँ भी उनसे कुछ सीखना चाहें तो सीख लें; पर उन्हें खिलखिलाकर किलकारी मारते हुए किसी ने सुना नहीं। सेन-परिवार के मुलाकाती रश्क के साथ अपने शरारती बच्चों से खीझकर कहते हैं—"एक तुमलोग हो और मिसेज सेन की लड़कियाँ हैं! अबे, फूल का गमला तोड़ने के लिए बना है! तुमलोगों के मारे घर में कुछ भी तो नहीं रह सकता!"

सो जहाँ तक सेन-परिवार की लड़कियों का सवाल है; उनसे मोटर की चमक-दमक को कोई खास खतरा नहीं था। लेकिन खोखा भी तो है। खोखा जो एक ही है, लड़का है, सबसे छोटा है। खोखा नाउम्मीद बुढ़ापे की आँखों का तारा है, यह नहीं कि मिसेज सेन अपना और बुढ़ापे का कोई ताल्लुक किसी हालत में मानने को तैयार हों और सेन साहब तो सचमुच बूढ़े नहीं लगते लेकिन मानने लगने की बात छोड़िये, हकीकत तो यही है कि खोखा का आविर्भाव तब जाकर हुआ था जब उसकी कोई उम्मीद सेनों को बाकी नहीं रह गई थी। खोखा जीवन के नियम का अपवाद था और यह आस्वाभाविक नहीं था कि वह घर के नियमों का भी अपवाद हो। इस तरह मोटर को कोई खतरा हो सकता था तो खोखा से ही।

बात ऐसी थी कि शोभा, रजनी, आलो, शेफाली, आरती—पाँचों हुई तो?—उनके लिए घर में अलग नियम थे, दूसरी तरह की शिक्षा थी, और खोखा के लिए अलग, दूसरी। कहने के लिए तो सेनों का कहना था कि खोखा आखिर अपने बाप का बेटा ठहरा उसे भी तो इंजिनियर होना है, अभी से उसमें इसके लक्षण दिखाई पड़ते थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए ट्रेनिंग भी उसे वैसी ही दी जा रही थी; बात यह थी कि खोखा के दुर्ललित स्वभाव के अनुसार ही सेनों ने अपने सिद्धान्तों को भी बदल लिया था। अक्सर ऐसा होता है कि सेन-परिवार के दोस्त आते हैं, भड़कीले ड्राइंग-रूम में बैठते हैं और बातचीत के लिए विषय का अभाव होने पर चर्चा निकल पड़ती है कि किसका लड़का क्या करेगा। तब सेन साहब बड़ी मौलिकता और दूरन्देशी के साथ फरमाते हैं कि वह तो अपने लड़के को अपने ढंग से ट्रेंड करेंगे; करेंगे क्या, कर रहे हैं; आजकल की पढ़ाई-लिखाई तो फिजूल है वह तो उसे अपनी तरह बिजनेसमैन इंजिनियर बनाना चाहते हैं। 'अब देखिए न', सेन साहब कहते हैं, 'खोखा पाँच साल का हो रहा है। लोग कहते हैं, उसे किंडरगार्टन-स्कूल में भेज दो; लेकिन मैंने अभी यही इन्तजाम किया है कि कारखाने का बढ़ई-मिस्त्री दो-एक घंटे के लिए आकर उसके साथ कुछ ठोंक-पीट किया करे। इससे बच्चे की उँगलियाँ अभी से औजारों से वाकिफ हो जायँगी। हिन्दुस्तानी लोग यही नहीं समझते।'

एक दिन का वाकिया है कि ड्राइंगरूम है सेन साहब के कुछ दोस्त बैठे गप-शप कर रहे थे। उनमें एक साहब साधारण हैसियत के अखबारनवीस थे और सेनों के दूर के रिश्तेदार भी होते थे। साथ में उनका लड़का भी था जो खोखा से भी छोटा, पर बड़ा समझदार और होनहार मालूम पड़ता था। किसीने उसकी कोई हरकत देखकर उसकी कुछ तारीफ कर दी और उन साहब से पूछा कि बच्चा स्कूल तो जाता ही होगा। इसके पहले कि पत्रकार महोदय कुछ जवाब देते, सेन साहब ने कहना शुरू कर दिया—"मैं तो खोखा को इंजिनियर बनाने जा रहा हूँ, और वे ही बातें जिन्हें दुहरा कर वह थकते नहीं थे। पत्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोदय चुप मुस्कराते रहे। जब उनसे फिर पूछा गया कि अपने बच्चे के बारे में उनका क्या खयाल है; उन्होंने कहा—"मैं चाहता हूँ, वह जंटिलमैन जरूर बने, और जो कुछ बने उसका काम है, उसे पूरी आजादी रहेगी।" सेन साहब इस उत्तर के शिष्ट और प्रच्छन्न व्यंग्य पर ऐंठ कर रह गये।

तभी बाहर कुछ शोरगुल सुनकर सेन साहब उठने लगे तो उनके मित्रों ने भी जाने की इच्छा प्रकट की और उन्हीं के साथ सब बाहर आये। बाहर सेन साहब का शोफर एक औरत से उलझ रहा था। औरत के पास एक पाँच-छः साल का बच्चा खड़ा था जिसे वह रोकने की कोशिश कर रही थी, क्योंकि बचा बार-बार शोफर की तरफ झपटता था।

सेन साहब को देख कर औरत सहम गई। शोफर ने सेन साहब की ओर बढ़ कर अदब के साथ कहा—"देखिये साहब, मदन गाड़ी को छू रहा था, गाड़ी गंदी हो जाती, मैंने मना किया तो लगा कहने जा-जा, तो मैंने उसे पकड़कर अलग कर दिया, इस पर मुझी को दौड़ा मारने; अब उसकी माँ भी आकर खामखाह मुझसे उलझ रही है।" मदन की माँ कुछ कहना चाहती थी, लेकिन सेन साहब के सटे होठों को देख कर चुप रह गई। सेन साहब ने बड़े संयत, पर कठोर: स्वर में कहा—"मदन को ले जाओ, और देखना वह फिर ऐसी हरकत न करे।" मदन की माँ अपने बच्चे के बाँये घुटने से निकलते हुए खून को पोंछती हुई चली गई—ड्राइवर ने शायद उसे धकेल दिया था और वह गिर पड़ा था। लेकिन एक मामूली किरानी के बेटे को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेन साहब के ड्राइवर ने धक्का ही दे दिया और उसे चोट ही आ गई तो आखिर ऐसी कौन बात हो गई।

ठीक इसी वक्त मोटर के पीछे खट-खट की आवाज सुन कर सेन साहब लपके, शोफर भी दौड़ा। और लोग भी सीढ़ियों से उतर कर बाहर अपनी-अपनी गाड़ियों की ओर चले। सभी ने देखा, सेन साहब खोखा को गोद में लेकर उसे हल्की मुस्कराहट के साथ डाँट रहे हैं और मोटर की पिछली बत्ती का लाल शीशा चकनाचूर हो गया है। सेन साहब ने अपने मित्रों को संबोधन करते हुए कहा—"देखा आप लोगों ने ? बड़ा शरारती हो गया है काशू। मोटर के पीछे हरदम पड़ा रहता है। उसके कल-पुर्जों में इसकी अभी से इतनी दिलचस्पी है कि क्या बताऊँ। शायद देखना चाह रहा था कि आखिर इस बत्ती के अन्दर है क्या।"

सेन साहब खोखा को जमीन पर रखकर अपने दोस्तों के साथ उनकी कार की ओर चले। उन्होंने अपने मित्रों की भावभंगिमा को देखा नहीं, देखते भी तो कुछ समझ पाते, इसमें शक ही था। मिस्टर सिंह अपनी कार के पास पहुँचे और सेन साहब को नमस्कार कर दरवाजा खोलने के लिए बढ़े और फिर रुक गये। उनकी निगाह अचानक ही अगले चक्के पर पड़ गई थी। उन्होंने नजदीक जाकर देखा और परेशानी की हालत में खड़े हो गये। टायर बिलकुल बैठ गया था। शायद 'पंचर' हो गया था। सेन साहब भी आगे बढ़ ाये और कुछ झिझकते हुए बोले—"कहीं ऐसा तो नहीं है कि काशू ने हवा निकाल दी हो; ड्राइवर, जरा दूसरे चक्कों को भी देख लो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पम्प ले आकर हवा कर दो, और, हाँ कुर्सियाँ लॉन में लगवा दो, तब तक हम यहीं बैठते हैं।"

ड्राइवर ने कार का चक्कर लगाकर सूचना दी कि दूसरी ओर के पिछले चक्के की हवा भी निकली हुई थी। काम तो काशू बाबू का ही मालूम होता है, इधर ही खेल रहे थे—शोफर ने बताया और पम्प लाने चला गया।

मुकर्जी साहब की गाड़ी सकुशल थी और वह अपने और पत्रकार महोदय के परिवार के साथ तो चलते बने। सेन साहब और मिस्टर सिंह लॉन की कुर्सियों पर बैठकर बातें करते रहे। बातों के सिलसिले में ही सेन साहब ने बतलाया कि काशू ने इधर चक्कों से हवा निकालने की हिकमत जान ली थी और मौका मिलते ही शरारत कर गुज़रता था। उनका अपना खयाल था, उनकी इन हरकतों को देखकर तो यह साफ़ मालूम होता था कि इंजिनियरिंग में उसकी अभी से दिलचस्पी है। इसी तरह की दूसरी बेमतलब की बातें होती रही जबतक कि चक्कों में पम्प नहीं हो गया और मिस्टर सिंह रुखसत नहीं हो गये।

सेन साहब अन्दर लौटे तो बेयरा को मदन के पिता गिरधर लाल को, जो उनकी फैक्टरी में किरानी था और अहाते के एक कोने में—आउट-हाउस में—रहता था, बुला लाने का हुक्म दिया। गिरधरलाल आया और सेन साहब के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया जैसे खून के जुर्म में कैदी जज के सामने खड़ा हो। सेन साहब ने ठंडी, बेलौस आवाज में कहना शुरू किया—"देखो गिरधर, मदन आजकल बहुत शोख हो गया है। मैं तुम्हारी और उसकी भी भलाई चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ। गाड़ी को गंदा किया यह अलग, मना करने पर ड्राइवर को मारने दौड़ा और मेरे सामने भी डरने के बदले उसकी ओर झपटता रहा। ऐसे ही लड़के आगे चलकर गुंडे, चोर और डाकू बनते हैं।" गिरधरलाल कभी-कभी 'जी' कह देता था। सेन साहब का भाषण जारी था—"उनकी हालत क्या होती है, तुम जानते ही हो। उसे सँभालने की कोशिश करो। फिर ऐसी बात हुई तो अच्छा नहीं होगा; तुम जा सकते हो।"

उस रात गिरधरलाल के क्वार्टर से आती हुई मदन की चीत्कार से सेनों का आरामदेह शयनागार गूंज गया। आराम में खलल पड़ने से कुछ झुँझलाकर पिता सेन ने अपनी धर्मपत्नी से बड़ी समझदारी की बात कही—"गिरधर खुद समझदार आदमी है। उसकी बीबी ने ही लड़के को बिगाड़ दिया है। मदन की यही दवा है। मेरी तो तबीयत हुई थी कि कमबख्त की खाल उधेड़ दूँ। गिरधर ने ऐसी ही कड़ाई जारी रखी तो शायद ठीक हो जाय।"

माता सेन की नींद उचट गई थी। उन्हें मदन की कातर चिल्लाहट से ज्यादा अपने पति की बकबक पर खीझ आ रही थी। लेकिन उन्होंने भी अपनी खीझ मदन पर ही उतारी—"कम्बख्त कैसा कौए की तरह चिल्ला रहा है। भिखमंगा कहीं का। खोखा की बराबरी करता फिरता है!"

मदन का आर्त्त रुदन रुक गया था। खैरियत थी, उसकी सिसकियाँ सेनों के शयनागार तक नहीं पहुँच सकती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन दूसरे दिन तो बिलकुल बेढब मामला हो गया। शाम के वक्त खेलता-कूदता खोखा बँगले के अहाते की बगल-वाली गली में जा निकला। वहाँ धूल में मदन पड़ोसियों के आवारागर्द छोकड़ों के साथ लट्टू नचा रहा था। खोखा ने देखा तो उसकी तबीयत मचल गई, हंस कौओं की जमात में शामिल होने के लिए ललक गया। लेकिन आदत से लाचार उसने बड़े रोब के साथ मदन से कहा—"हमको उ-ठो लट्टू दो; हम भी खेलेगा।" दूसरे लड़कों को कोई खास उज्र नहीं था; वे खोखा को अपनी जमात में ले लेने के फायदों को नजर-अन्दाज नहीं कर सकते थे। पर उनके अपमानित, प्रताड़ित, लीडर मदन को यह बात कब मंजूर हो सकती थी। उसने छूटते ही जवाब दिया—"अबे भाग जा यहाँ से। बड़ा आया है लट्टू खेलने वाला! है भी लट्टू तेरे? जा अपने बावा की मोटर पर बैठ!"

काशू तैश में आ गया। वह इसी उम्र में नौकरों पर, अपनी बहनों पर, हाथ चला देता था और क्या मजाल कि उसे कोई कुछ कह दे। उसने आव देखा न ताव, मदन को एक घूँसा रसीद कर दिया।

चोर-गुंडा-डाकू होने वाला मदन भी कब माननेवाला था। वह झट काशू पर टूट पड़ा। दूसरे लड़के जरा हटकर इस द्वन्द्व-युद्ध का मजा लेने लगे। लेकिन यह लड़ाई हड्डी और मांस की, बँगले के पिल्ले और गली के कुत्ते की, लड़ाई थी। अहाते में यही एक लड़ाई हुई रहती तो काशू शेर हो जाता। यहाँ से तो एक मिनट के बाद ही वह रोता हुआ जान लेकर भाग निकला। महल और झोपड़ी वालों की लड़ाई में अक्सर महलवाले ही जीतते हैं; लेकिन उसी हालत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दूसरे झोपड़ीवाले उनकी मदद अपने ही खिलाफ करते हैं। लेकिन बच्चों को इतनी अक्ल कहाँ। उन्होंने न तो अपने दुर्दमनीय लीडर की ही मदद की, न अपने माता-पिता के मालिक के लाड़ले की ही। हाँ, लड़ाई खत्म हो जाने पर तुरत ही सहमते हुए तितर-बितर हो गये।

मदन घर नहीं लौटा। लेकिन जाता ही कहाँ ? आठ-नौ बजे तक इधर-उधर मारा फिरता रहा। फिर भूख लगी तो गली के दरवाजे से आहिस्ता-आहिस्ता घर में घुसा। उसके लिए मार खाना मामूली बात थी। डर था तो यही कि आज की मार और दिनों से भी बुरी होगी। लेकिन उपाय ही क्या था। यह पहले रसोई घर में ही घुसा। माँ नहीं थी। बगल के सोनेवाले कमरे से बात-चीत की आवाज आ रही थी। उसने इतमीनान के साथ भर-पेट खाना खाया। फिर दरवाजे के पास जाकर अन्दर की बातचीत सुनने की कोशिश करने लगा। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ—उसके बाबू गरज-तरज नहीं रहे थे। उसकी अम्मा ने कोई बात पूछी जिसे वह ठीक से सुन नहीं सका तो उसके बाबू ने झल्लाकर कहा—'अरे भाई, बतलाया तो साहब ने सिर्फ यही कहा—'आज से मुझे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं; कल मकान छोड़ देना और अपनी तनखाह आफिस से ले लेना।'....मदन के काम की कोई बात नहीं हो रही थी उसकी सजा की तजवीज होती रहती तो सुनने की कोशिश भी करता वह।

वह दबे पाँव बरामदे में रखी चारपाई की तरफ सोने के लिए चला तो अँधेरे में उसका पैर लोटे से लग गया। लोटे की ठन-ठन की आवाज सुनकर गिरधर बाहर निकल आया। मदन की अम्मा भी उसके पीछे थी। मदन चौंककर घूमा और मार खाने की तैयारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अपनी छाती को अपने हाथों से बाँधकर खड़ा हो गया। मदन अक्सर अपने पिता के हाथों पिटता था, बहुत पिटने पर रोता भी था; मगर बहादुरी के साथ।

गिरधर निस्सहाय निष्ठुरता के साथ मदन की ओर बढ़ा। मदन ने अपने दाँत भींच लिये। गिरधर मदन के बिलकुल पास आ गया था कि अचानक वह ठिठक गया। उसके चेहरे से नाराजगी का बादल हट गया। उसने लपककर मदन को हाथों से उठा लिया। मदन हक्का-बक्का अपने पिता को देख रहा था। उसे याद नहीं; उसके पिता ने कब इस तरह प्यार किया था, अगर कभी किया था तो। गिरधर उस बेपरवाही, उल्लास और गर्व के साथ बोल उठा जो किसी के लिए भी नौकरी से निकाले जाने पर ही मुमकिन हो सकता है—"शाबाश बेटा! एक तेरा बाप है, और तूने तो खोखा के दो-दो दाँत तोड़ डाले! हा हा हा हा!"............

—ॐ—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकीवल्लभ शास्त्री

[सन् १९१६—]

श्री जानकीवल्लभ शास्त्री का जन्म मैगरा, जिला गया में हुआ। ये संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित और हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी हैं। ये आत्म-विज्ञापन से कोसों दूर रहते हैं। इनकी लेखनी काव्य, आख्यान और प्रबन्ध तीनों के लिए बिहार में अकेली है।

इनके सम्बन्ध में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का निम्नलिखित उद्‌गार देखिए—"एक अशान्त आत्मा—जिसके कण्ठ में कोमल स्वर, मस्तिष्क में सपक्ष कल्पना, और हृदय में भावना का सागर—जहाँ एक ही साथ समुद्र का हाहाकार, पंछी का कलरव और वंशी की तान।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर महाकवि निराला कहते हैं—

"हिन्दी के साहित्यिक उत्थान में बिहार की आधुनिक प्रतिभा को मानना पड़ता है। जानकीवल्लभ शास्त्री भी वहाँ के और समस्त हिन्दीभाषी प्रान्तों के प्रतिभाशालियों में एक हैं।

"उनकी कहानियाँ हैं रोचक, सरल, काव्यमयी। गद्य में जानकी-वल्लभ जी ने चार चाँद लगा दिये हैं। हिन्दी उनके हाथ में कली की तरह दल खोलती जा रही है।

"कहानियों की भाषा मजी हुई, वाक्य-न्यास संगीतमय, बातचीत स्थल और घटनाओं का वर्णन उठान, पूर्ति और परिसमाप्ति लिये हुए; ध्वनि और अलङ्कारों से सज्जित है।"

कानन, अपर्णा और लीलाकमल—ऐसी ही कहानियों के संग्रह हैं। इनके अतिरिक्त 'किरण' उपन्यास, 'पाषाणी' नाटक, 'कालचक्र', रेडियो रूपक नये ग्रन्थ हैं।

आलोचक के रूप में इनके द्वारा निर्मित साहित्यदर्शन, साहित्य-साधना, काव्यकला, त्रिपथगा, महाकवि निराला आदि पुस्तकें सहृदयों की चर्चा के विषय हैं और कवि-रूप तो सर्व-विदित ही है।

प्रस्तुत कहानी रूढ़ि-ग्रस्त ग्राम्य-समाज का एक ऐसा व्यंग्य-चित्र प्रस्तुत करती है जो मन पर पड़ी जड़-लकीरों को चेतना की तस्वीर समझने के भ्रम को मुँह चिढ़ाकर नये सिरे से कुछ नया सोचने और नया गढ़ने के लिए एक नई प्रेरणा उत्पन्न करता है।

—प्रकाशक

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित जी

शाम को तमाकू की पत्ती खत्म होते देख पण्डित बुद्धिदीन बावले हो गये। वह ब्राह्मण हैं, बिना मांस-मछली के भी एकाध दिन भोजन कर ले सकते हैं। और जितने तगड़े पड़ते हैं, कोई जरूरी नहीं कि उस दिन उन्हें कब्जियत हो ही जाय! लेकिन बिना तमाकू के तो वह एक घण्टा भी चैन से नहीं गुजार सकते। तो फिर अब क्या हो?

दिन-भर पानी बरसता रहा है। सुरहर नदी छोटी है, इससे क्या? पहाड़ी होने के कारण आज इसमें कितने जोरों से बाढ़ आई हुई है!

लोग किनारे पर मजे लूट रहे हैं। कुछ गरीब तैर-तैर कर धार से लकड़ियाँ भी छान रहे हैं। जान को बाजी लगा रक्खी है बेवकूफों ने।

अह! हटाइए भी, इनकी जान की कीमत ही कितनी!

बाजार उस पार है। इधर इतनी बड़ी बस्ती में तमाकू तक की एक छोटी-मोटी दूकान नहीं। यहाँ वाले आदमी हैं या?—

झल्लाते हुए बुद्धिदीन किनारे पर पहुँचते हैं। देखिए, लोग-बाग, उन्हीं को तो प्रणाम कर रहे हैं। वह सबको हाथ उठा-उठाकर आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अजी, वह कौन लड़का एक हाथ से छतरी लगाए और दूसरे में कुछ सामान लिए खड़ा तैरता आ रहा है ?"

"जगमोहना है वह ।"

"अच्छा-अच्छा, वह नाई का लौंडा ।"

"हाँ, पिछले साल उसका बाप मर गया है, घर में माँ और एक विधवर बहन-भर है। कम्बख्त किसी की नहीं सुनता। पेड़ की ऊपरी से से ऊपरी डाल पर पासी की तरह खर्र-खर्र चढ़ जाता है। और तैरने में में तो पूछिए मत, एकदम कमाल ही करता है।

एक पैसा करीमन सांई ने दे दिया है, बस हँसता हुआ उसका सामान लिये चला आ रहा है !"

देखते-देखते कुछ-कुछ अँधेरा फैलने लगता है। आसमान में काले-काले बादल छाये हुए हैं। मुमकिन है, फिर पानी बरसे और इसी तरह दो-एक रोज तक बाढ़ उमड़ती रहे! तो फिर बुद्धिदीन का क्या हाल होगा ?

"जगमोहना ! एक बार और हिम्मत कर बहादुर ! तैरने में मजा ही मजा तो है ! जरा पण्डित जी के लिए तमाकू ला दे ! दुखहरन की दूकान से खूब पुरानी पत्ती देखकर लेना ।"

बुद्धिदीन दो पैसे जगमोहना की हथेली पर रख देते हैं। उसकी देह ठंढ से सिकुड़ी जा रही है। वह अपने एक साथी के कंधे से मैला-सा अँगोछा लेकर पोंछने लगता है।

—"पण्डित जी ! अब रात हो गई। कल खूब सवेरे ला दूंगा। इस वक्त डर लग रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डर ? मेरे आशीर्वाद के रहते भी डर ? ब्राह्मण का काम है बेटा! इसमें आनाकानी करना उचित नहीं।" बुद्धिदीन के स्वर में औरों के गले भी मिल जाते हैं।

करीमन मुसलमान था, एक पैसा इनाम दे दिया था। पर यह तो गाँव के देवता का काम है, छि-छि:, इसमें इनाम का नाम लेना कितना बड़ा पाप है !

देखते-ही-देखते जगमोहन उस पार चला जाता है। लोग उसके नटखटपन की शिकायत के साथ-साथ तैरने, पेड़ चढ़ने वगैरह की तारीफ करते रहते हैं।

इतने में बिजली कड़कती है। पानी बरसता है। सब अपने-अपने घर की राह लेते हैं। बुद्धिदीन दौड़कर अपने दरवाजे पर पहुँच जाते हैं। फिर बिजली की कड़ी कड़क से कान बन्द कर भीतर ठाकुरजी के घर में बैठते हैं।

× × ×

आध घंटे बाद। तपेश्वर दौड़ा हुआ उनके पास जाता है।— "चाचा-चाचा ! जगमोहन डूब गया। आपलोग भाग आये, लेकिन मेरे पास छतरी थी, मैं वहीं खड़ा रह गया। मेरे देखते ही मैं वह डूबा, तमाकू हाथ में लिए हुए था।"

बुद्धिदीन 'भँगघोटना' उठाते हैं—"चुप बदमाश ! हाथ में तामाकू लिए हुए था !—इतने अँधेरे में तुझे बिल्ली की तरह सब कुछ दिख गया ? साला डूबा, तो डूब जाय। इतना नटखट था, उसे तो कभी-न-कभी डूबना ही था। उफ ! लेकिन मेरे दो पैसे भी ले डूबा। तुझे बस उसीकी फिक्र है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह लीजिए अपने दो पैसे !"–तपेश्वर अपनी तरफ से दे देता है। "लेकिन खबरदार, अगर उस वेचारे को फिर 'साला' कहा। यही बाँभन हैं ! जिसके लिये जान तक दे दी, वही साला कहता है !"

घृणा से तपेश्वर उधर घूमकर घूरता भी नहीं, चुपचाप बाहर निकल आता है।

लेकिन यह क्या ? दरवाजे पर जगमोहना पण्डित जी को पुकार रहा है ? बुद्धिदीन खड़ाऊँ से खटर-खटर करते जल्द-जल्द बाहर आते हैं। तमाकू लेकर उसकी पीठ ठोकते हैं। वह ठिठुरकर थर-थर काँप रहा है।

तपेश्वर पूछता है—"तू तो डूब गया था न रे ?"

वह हँसकर कहता है—"वाह उस्ताद ! मैं क्यों डूबने लगा ? तुम्हीं थे क्या किनारे पर खड़े ? ओह हो,—तभी ? मैं तो डुब्बी मारकर तुम्हें डरा रहा था !"

बुद्धिदीन जोर से हँसे। "सोई कहूँ—ब्राह्मण पण्डित का आशीर्वाद ! यह आज्ञाकारी बालक कभी डूब भी सकता है ?"

तपेश्वर उनकी तरफ तिरछी निगाह करता है। उसे लगा—पण्डित जी उसके पैसे वापस दे रहे हैं !

लेकिन तबतक तो अमूल्य आशीर्वाद देकर उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया था।

———

Gurukul Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क14/28

STOCK VERIFY
2020

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

STOCK VERIFY
2020
S.A.V. ...

R 891.433,JAN-P
1110H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar